INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT CALCUTTA

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

राजभाषा गृह पत्रिका

सृजन

अंक - पंचम

सितंबर 2026

सृजन

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की पंचम राजभाषा गृह-पत्रिका

(सितंबर 2026)

निदेशक
प्रो. आलोक कुमार राय

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी)
श्री विजय सिंह विराट

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)
श्री अरुणाभ दास

सलाहकार समिति

डॉ. नारायण चंद्र घोष – पुस्तकालयाध्यक्ष एवं अध्यक्ष

श्री विजय सिंह विराट - वित्त एवं लेखा अधिकारी, सदस्य

श्री जी. आर. नायुडु - वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, सदस्य

श्री अभिषेक मंडल - प्रशासनिक अधिकारी, कार्यकारी शिक्षा, सदस्य

श्रीमती शुभ्रा धर – प्रबंधक (सामान्य कार्यक्रम), कार्यकारी शिक्षा, सदस्य

श्रीमती सुनीता दुबे - सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव

संपादक
श्रीमती सुनीता दुबे - सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

अस्वीकरण

1.पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

2.पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं, ऐसा सुनिश्चित करना सलाहकार समिति के लिए संभव नहीं है।

विशेष सूचना

यह पत्रिका पर्यावरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के तहत इको-फ्रेंडली (पर्यावरण अनुकूल) काग़ज़ पर मुद्रित की गई है।

राजभाषा गृह पत्रिका

सृजन

अंक - पंचम

सितंबर 2026

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT CALCUTTA

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता - 700104

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	संदेश	संदेश देने वाले अधिकारी	पृष्ठ सं.
1	निदेशक की कलम से	प्रो. आलोक कुमार राय	4
2	संदेश	श्री विजय सिंह विराट	5
3	मेरा अनुभव	डॉ. नारायण चंद्र घोष	6
4	धन्यवाद ज्ञापन	श्री अरुणाभ दास	7
5	संपादकीय	श्रीमती सुनीता दुबे	8
	गद्य संकलन		
	रचना	**रचनाकार**	
6	जाको राखें साइयाँ - एक दूसरा अवसर	श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव	10
7	स्टार्टअप गैरेज हैकाथॉन	सुश्री अनिंदिता रुद्र	13
8	"विकसित भारत" के लिए सरकारी कर्मचारियों की भूमिका	श्री अतनु मंडल	14
9	पेलिंग की वादियों में बिताए अविस्मरणीय पल	श्री चिरंजीब चटर्जी	16
10	माता-पिता	श्री जी. आर. नायुडु	18
11	सच्ची शिक्षा	श्रीमती डॉली सेन	19
12	ब्रह्मांड: नेतृत्व, नवाचार और ज्ञान का अनंत आकाश	सुश्री प्रियंका चटर्जी	20
13	शांतिनिकेतन हेरिटेज वॉक	श्रीमती प्रियंका दासगुप्ता	21
14	फूटबॉल के बारे में दिल्चस्प बातें	सुश्री पूजा साहा	22
15	पुस्तकालय में डिजिटल युग: एक नई क्रांति	श्री बिशाल पाठक	23
16	विदा	प्रो. मनीष कुमार ठाकुर	24
17	मेरा गंगासागर तीर्थयात्रा: आस्था, सौभाग्य और ईश्वरीय कृपा का सफ़र	श्री महेश पटनायक	25
18	भावनात्मक सेहत	श्रीमती मैत्रेयी बनर्जी	28
19	भाई की शादी की कुछ खट्टी मीठी यादें	श्रीमती स्वरूपा गुप्ता	30
20	महिला सशक्तिकरण	सुश्री सपना कुमारी	34
21	भारतीय संविधान के 10 ऐसे रोचक तथ्य, जिन्हें हर भारतीय को जानना चाहिए	श्रीमती सुचंद्रा बोस	35
22	डर का वह अंधेरा रास्ता	श्री सुदीप्त मजुमदार	37
23	अब वह किसी के सहारे की नहीं, अपने होने की तलाश में है	श्रीमती सुनीता दुबे	39
24	बेटी की आह	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव	41
25	नई शुरुआत की शांत शक्ति	श्रीमती सोमा सान्याल	43
26	डिजिटल शासन और भारत का नया भविष्य	श्री सौरव गुहा ठाकुरता	45
27	एक अमर वृक्ष की आत्मकथा	श्रीमती शुभ्रा धर	47
28	श्रीमान निर्णयप्रसाद	श्रीमती शेरोन क़मर	49
29	मदद का हाथ	श्रीमती श्रीपर्णा दास	51

अनुक्रमणिका

पद्य संकलन			
	रचना	रचनाकार	
30	अंतर्यात्रा	प्रो. अर्पिता घोष	53
31	दिल	श्री अभिषेक मंडल	54
32	मेरा बचपन	श्री अरिंदम रॉय	54
33	दाँतों की मर्यादा	श्री अरुणाभ दास	55
34	नियति का निमंत्रण	प्रो. आलोक कुमार राय	56
35	आदत	प्रो. अंकित कुमार	57
36	सेल्फी रानी	कप्तान (मानद) श्री उत्तम कुमार माईति (सेवानिवृत्त)	57
37	सिफ़ारिश	श्रीमती जया सिंह	58
38	सुकून	श्री ज़ुल्फ़क़ार हसन (स्क्वाड्रन लीडर, सेवानिवृत्त)	59
39	निश्चय	श्रीमती पियाली चक्रबर्ती	59
40	माँ	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय	60
41	आईना	श्रीमती रोहिणी चटर्जी	60
42	मेरी नन्ही परी	श्री बैद्यनाथ चक्रबर्ती	61
43	नई शुरुआत	श्री विजय सिंह विराट	61
44	भाई-बहन	श्री मुथुसुब्रमण्यम एस एस	62
45	आज़ादी	सुश्री सपना कुमारी	63
46	राधा रानी की कृपा	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव	64
47	अनोखी दोस्ती	श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधुरी	65
48	आज और कल	श्रीमती शेरोन क़मर	66

कार्यालयीन गतिविधियां			
49	राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के परिणाम		67
50	राजभाषा संगोष्ठी एवं राजभाषा गृह-पत्रिका सृजन के चतुर्थ अंक का लोकार्पण		68
51	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता (कार्यालय-2) द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से सम्मान		69
52	राजभाषा विभाग से संबन्धित कार्यक्रम एवं संस्थान के अन्य विभागीय कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ		70

निदेशक के कलम से....

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता सदैव उत्कृष्टता, नवाचार और ज्ञान-सृजन की परंपरा का संवाहक रहा है। हमारा विश्वास है कि किसी भी संस्थान की वास्तविक प्रगति केवल शैक्षणिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसकी भाषा, संस्कृति और अभिव्यक्ति की समृद्धि से भी परिलक्षित होती है। इसी भावना के साथ संस्थान की राजभाषा गृह-पत्रिका 'सृजन' के पंचम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'सृजन' केवल रचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे संस्थान के विविध विचारों, अनुभवों और संवेदनाओं का सजीव मंच है। यह पत्रिका शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हिंदी प्रेमियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है तथा संस्थान में हिंदी के प्रयोग और उसके विकास को नई दिशा देती है। प्रत्येक अंक इस विश्वास को और सुदृढ़ करता है कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों की संवाहक भी है।

आज जब भारत वैश्विक स्तर पर ज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है, तब हिंदी की भूमिका भी निरंतर विस्तृत हो रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राजभाषा संबंधी नीतियों की भावना के अनुरूप हमें ऐसी कार्य-संस्कृति विकसित करनी चाहिए, जहाँ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ ज्ञान-विनिमय, प्रशासनिक दक्षता तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम बनें। इस दिशा में 'सृजन' एक सार्थक पहल है, जो भाषा और विचारों के बीच प्रभावी संवाद स्थापित करती है।

इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण तथा अन्य रचनाएँ हमारे संस्थान की बौद्धिक विविधता, सामाजिक उत्तरदायित्व और रचनात्मक दृष्टि का परिचय देती हैं। मैं सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल तथा इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले प्रत्येक सहयोगी को उनकी प्रतिबद्धता और उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरा विश्वास है कि 'सृजन' का यह अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि हिंदी के प्रति आत्मीयता, सृजनशीलता और सकारात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित करेगा। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को ज्ञान, नवाचार और उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति की प्रभावी भाषा के रूप में और अधिक समृद्ध बनाने का संकल्प लें।

जय हिन्द। जय हिंदी।

शुभेच्छाओं सहित,

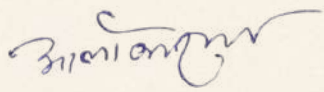

(प्रो. आलोक कुमार राय)
निदेशक
भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता

संदेश

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा गृह-पत्रिका 'सृजन' के पंचम अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

किसी भी संस्थान की कार्य-संस्कृति उसकी भाषा, वैचारिक समृद्धि और रचनात्मकता से समृद्ध होती है। राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में 'सृजन' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि संस्थान की सृजनशील ऊर्जा, बौद्धिक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक चेतना का प्रभावी माध्यम है। यह मंच हमारे संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा हिंदी प्रेमियों को अपने विचारों, अनुभवों और साहित्यिक प्रतिभा को साझा करने का अवसर प्रदान करता है।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ देश की सांस्कृतिक विरासत और जन-जन के संवाद की सशक्त भाषा है। प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग के साथ-साथ साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देना भी उतना ही आवश्यक है, क्योंकि भाषा तभी जीवंत रहती है जब वह व्यवहार, चिंतन और सृजन—तीनों का अभिन्न अंग बनती है। इस दृष्टि से 'सृजन' संस्थान में हिंदी के संवर्धन और रचनात्मक अभिव्यक्ति को नई दिशा प्रदान कर रही है।

इस अंक में प्रकाशित विविध रचनाएँ साहित्यिक अभिरुचि, सामाजिक संवेदनशीलता और समकालीन विषयों पर गंभीर चिंतन का परिचय देती हैं। कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत तथा विचारपरक लेखों के माध्यम से हमारे रचनाकारों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा, अनुभव और दृष्टिकोण को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। यह अंक संस्थान में हिंदी के प्रति बढ़ती सहभागिता और सकारात्मक वातावरण का भी प्रमाण है।

मैं राजभाषा विभाग, संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि 'सृजन' का यह अंक पाठकों को नई प्रेरणा प्रदान करेगा तथा संस्थान में हिंदी के प्रयोग, साहित्यिक सृजन और ज्ञान-विनिमय की परंपरा को और अधिक सुदृढ़ बनाएगा।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

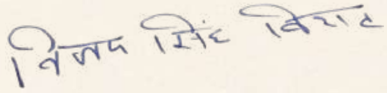

(विजय सिंह विराट)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

मेरा अनुभव.....

यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और संतोष का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की राजभाषा पत्रिका "सृजन" का तृतीय वार्षिक अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह न केवल एक पत्रिका है, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति हमारे संस्थान की निष्ठा, संवेदना और सृजनात्मक चेतना का जीवंत प्रतीक भी है।

हिंदी हमारे देश की आत्मा है — वह भाषा जो भावनाओं को जोड़ती है, संस्कारों को सहेजती है और विचारों को स्वर देती है। "सृजन" उसी आत्मा की अभिव्यक्ति है, जो हमारे संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हिंदी प्रेमियों की कलम से प्रस्फुटित होकर एक साझा मंच पर आकार लेती है।

इस अंक में समाहित रचनाएँ—कहानियाँ, कविताएँ, लेख और संस्मरण—केवल साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि यह हमारे विचारों, अनुभवों और सांस्कृतिक चेतना का दस्तावेज़ हैं। यह पत्रिका हमारे लिए आत्ममंथन का एक दर्पण भी है और संस्थान की आंतरिक एकता, रचनात्मकता तथा भाषा-संवर्धन की भावना का उत्सव भी।

मैं इस अवसर पर संपादक मंडल, राजभाषा प्रकोष्ठ, सभी रचनाकारों एवं उन सभी सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिनके समर्पण और सहयोग से "सृजन" का यह अंक संभव हो सका है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक न केवल पठनीय होगा, बल्कि पाठकों के मन-मस्तिष्क पर भी एक स्थायी प्रभाव छोड़ेगा। "सृजन" निरंतर इस साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्रा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाता रहे—इसी कामना के साथ।

धन्यवाद और शुभकामनाएं,

(डॉ.नारायण चन्द्र घोष)
सलाहकार समिति के अध्यक्ष एवं पुस्तकालयाध्यक्ष
बी.सी. रॉय स्मारक पुस्तकालय
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

धन्यवाद ज्ञापन.....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा विभागीय पत्रिका "सृजन" का तृतीय अंक प्रकाशित हो रहा है। यह केवल एक साहित्यिक प्रयास ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और संस्थान के भीतर उसकी स्वीकार्यता को सुदृढ़ करने की दिशा में यह एक दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता का प्रतीक भी है।

हम सभी भली-भांति जानते हैं कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा नीति का पालन करना प्रत्येक सरकारी संस्था का संवैधानिक उत्तरदायित्व है। विगत वर्षों में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान के निरीक्षण के क्रम में दिए गए सुझावों के आलोक में, हिंदी को कार्य संस्कृति में समाहित करने हेतु संस्थान निरंतर गंभीर प्रयास कर रहा है। उसी दिशा में "सृजन" पत्रिका का यह अंक एक सार्थक, सशक्त और सृजनशील मंच के रूप में उभरा है।

यह पत्रिका हमारे संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न केवल अपनी साहित्यिक अभिरुचियों और विचारों को साझा करने का अवसर देती है, बल्कि संस्थान की बहुआयामी सोच, सांस्कृतिक विविधता और भाषिक समन्वय को भी उजागर करती है। इस अंक में सम्मिलित रचनाएँ—कविताएँ, लघु कथाएँ, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत एवं विचारोत्तेजक लेख—न केवल पठनीय हैं, अपितु हिंदी के प्रति एक भावनात्मक जुड़ाव और भाषिक चेतना का भी सशक्त परिचय हैं।

मैं इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ, संपादक मंडल, एवं सभी रचनाकारों को उनके सृजनात्मक योगदान हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही प्रभारी निदेशक महोदय एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी महोदय को इस रचनात्मक प्रयास में दिए गए मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए विशेष धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

आशा है कि "सृजन" का यह तृतीय अंक संस्थान में राजभाषा हिंदी की सशक्त उपस्थिति को और अधिक सुदृढ़ करेगा तथा पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद और भावनात्मक रूप से समृद्ध अनुभव सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं के साथ,

अरुणाभ दास

(अरुणाभ दास)
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा गृह-पत्रिका 'सृजन' के पंचम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष का अनुभव हो रहा है। प्रत्येक नया अंक हमारे संस्थान की साहित्यिक चेतना, बौद्धिक सक्रियता तथा राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ती प्रतिबद्धता का साक्षी है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे संस्थान के जीवंत विचार-संसार, अनुभवों और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का दस्तावेज़ है।

आज के तीव्र गति से बदलते ज्ञान-आधारित और डिजिटल परिवेश में भाषा का महत्व और भी बढ़ गया है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों को सहज, प्रभावी और आत्मीय रूप से अभिव्यक्त करने की सशक्त भाषा है। 'सृजन' का उद्देश्य इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा हिंदी प्रेमियों को ऐसा मंच उपलब्ध कराना है, जहाँ उनकी मौलिक सोच, साहित्यिक अभिरुचि और रचनात्मक प्रतिभा को सम्मानपूर्वक स्थान मिल सके।

इस पंचम अंक में कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, लेख तथा अन्य साहित्यिक विधाओं की विविध रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। इन रचनाओं में जीवन के अनेक रंग, सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदनाएँ तथा समकालीन चिंतन की सार्थक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। प्रत्येक रचना अपने लेखक की मौलिक दृष्टि का परिचय देती है और पाठकों को नए विचारों के साथ संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है।

इस अवसर पर मैं संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. आलोक कुमार राय के दूरदर्शी मार्गदर्शन तथा संस्थान के प्रशासनिक नेतृत्व के निरंतर सहयोग के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। साथ ही, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी) श्री विजय सिंह विराट, सलाहकार समिति के अध्यक्ष एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. नारायण चन्द्र घोष, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) श्री अरुणाभ दास, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों, संपादकीय मंडल तथा इस अंक के सभी रचनाकारों के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। उनके सहयोग, समर्पण और सक्रिय सहभागिता के कारण ही यह अंक अपने वर्तमान स्वरूप में आपके समक्ष प्रस्तुत हो सका है।

मुझे विश्वास है कि 'सृजन' का यह पंचम अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं संग्रहणीय सिद्ध होगा। साथ ही, यह संस्थान में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग, साहित्यिक अभिरुचि तथा रचनात्मक संवाद की परंपरा को और अधिक सुदृढ़ करने में अपनी सार्थक भूमिका निभाता रहेगा।

आप सभी पाठकों, रचनाकारों एवं सहयोगियों के निरंतर स्नेह, विश्वास और सहभागिता के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को ज्ञान, संस्कृति, संवाद और सृजन की सशक्त भाषा के रूप में आगे बढ़ाने के इस प्रयास को निरंतर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

शुभकामनाओं सहित,

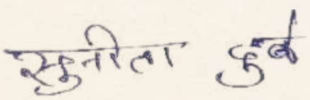

(सुनीता दुबे)
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

गद्य संकलन

अनिल कुमार श्रीवास्तव

जाको राखें साइयाँ - एक दूसरा अवसर

कभी-कभी जीवन हमें मौका देती है खुद के जीवन का आकलन करने का। खास करके जब ऐसा समय हो कि आप किसी ऐसी परिस्थिति से उभर कर या यू कहें कि मौत से लड़ करके वापस आए हों। अनायास ही मन में विचार आता है कि हमने क्या ऐसा किया था, क्या कर रहे हैं और हमें क्या करना चाहिए था। इंसान अपने जीवन काल में हजारों परिस्थितियों से होकर गुजरता है। सबकी अपनी अपनी परेशानियां, अलग अलग परिस्थितियां, किसी के लिए अच्छा तो, किसी के लिए बुरा, किसी के लिए सुख, तो किसी के लिए दुख लेकर आता है। कठिन समय आता है – किसी का जल्दी तो किसी का देर से बुरा समय गुजरता है लेकिन मन में जो रेखा खिंच जाती है वो कभी धूमिल नहीं हो पाती है। मन मे विचार आता है कि हमने इस जीवन में जो समय काटा, जो समय हमें मिला क्या उसका सदुपयोग हम कर पाए? मैंने भी पीछे मुड़कर जीवन को देखने की कोशिश किया।

उसी क्रम में मैंने भी अपने जीवन का आकलन करने की कोशिश की। यादों को पीछे ले गया, समय को रिवाइंड किया तो पाया कि जिंदगी ने सच में मुझ पर कई बार एहसान किया है। कुछ-कुछ बातें समय के साथ भूलते बिसरते जाते हैं, धुंधली पड़ती जाती हैं यादें लेकिन जब आप एकांत में अपने जीवन का आकलन करने बैठते हैं तो आपको धीरे-धीरे सभी बातें जरूर याद आती हैं। जीवन ने मुझ पर पहला एहसान तब किया जब मैं 9 साल का था। बचपन का समय था। तब हमलोग टेलीफोन भवन में रहते थे। एक दिन दोस्तों के साथ टेलीफोन भवन के तालाब का आनंद ले रहे थे। उस समय मछली पकड़ने का बहुत चलन था। लोग बंसी डालकर घंटों इंतजार करते थे कि कब कौन सी मछली फंसे। उसी में हम जैसे कुछ बच्चों का बेपरवाह हो कर तालाब परिसर की सीढ़ियों पर अवांछित दौड़ धूप और तालाब के किनारे मटरगश्ती करते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। खेल-खेल में मेरा पैर फिसलता हैं और मैं सीधे तालाब की गोद में समा जाता हूं। तालाब बहुत गहरा था। मुझे तैरना भी नहीं आता था। मेरे साथ जो मित्र थे उन्हें भी तैरना नहीं आता था। मैं डूबते हुए छटपटाने लगा, हाथ पर मारते हुए पानी पीने लगा था। मेरे दोस्तों की नजर मुझ पर पड़ी तो किसी ने झट से मेरी तरफ गमछा फेंका, जिसका एक किनारा मेरे हाथ में आ गया और उसी के सहारे मेरे दोस्तों ने खींचकर मुझे बाहर निकाल लिया और मेरी जान बचा ली। मैं आज सोचता हूं कि अगर उस दिन मेरे साथ वे लोग नहीं होते तो आगे की जिंदगी तो मैं देख ही नहीं पाता। ईश्वर की मर्जी थी, मैं जिंदा बच गया। यह पहला मौका था जब किस्मत ने मुझे जीवन दान दिया था।

जिंदगी कटती रही लेकिन कुछ ना कुछ तो लिखा ही था। 10 वर्ष की आयु में ब्लड कैंसर ने सिर पर से पिता का साया छीन लिया था। डलहौसी से उठ कर मानिकतल्ला आना हुआ और जीवन का संघर्ष तभी से शुरू हो गया था। माताजी के अथक परिश्रम और बड़ी बहन के सहारे हम सभी भाई बहनों का जीवन यापन और भविष्य धीरे-धीरे इस संघर्ष के बीच आगे बढ़ता रहा। भाग्य चक्र ने पहले ही लिख रखा था कि मैं वायु सेना में एक सफल आजीविका सहित अपना तथा परिवार का निर्वहन करूंगा। अतः जीवन का अमूल्य 32 वर्ष का कालखंड भारतीय वायु सेना के नाम हो गया था। इसी दौरान वर्ष 2016 में पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार की पोस्टिंग थी। तारीख 18 जुलाई 2016 सोमवार, मेरी पदस्थ अधिकारी फ्लाइट लेफ्टिनेंट सोनिया मैडम ने बताया कि इस 20 जुलाई, बुधवार को उन्हें साइफर संदेश ले कर ताम्बरम (चेन्नई) अस्थाई ड्यूटी (जिसे हम TD - Temporary duty कहते हैं) के लिए जाना होगा। साइफर संदेश से तात्पर्य सुरक्षित, गोपनीय सैन्य संचार के लिए उपयोग किए जाने वाले एन्क्रिप्टेड या स्क्रैम्बल किए गए ट्रांसमिशन से होता है। यह क्रिप्टोग्राफिक एल्गोरिदम का उपयोग करके संवेदनशील परिचालन डेटा, खुफिया जानकारी और आदेशों को छुपाता है ताकि केवल अधिकृत कर्मियों के पास ही डिक्रिप्शन कुंजी हो। ऐसे गोपनीय संदेश व्यक्तिगत रूप से अधिकारीगण को ही सौंपने जाना होता है। सोनिया मैडम ने कहा श्रीवास्तव जी इस बुधवार आप भी मेरे साथ चलते तो अच्छा होता। दूसरे विभाग से किसी वारंट अफसर को साथ लेने से अच्छा हम दोनों चलते हैं वरना, मैं बोर हो जाऊंगी। दो दिन की बात है बुधवार AN 32 से चलेंगे और शुक्रवार उसी जहाज से वापस आ जाएंगे। मैंने भी सोचा ठीक ही रहेगा। इसी बहाने हम दोनों के नाम एक-एक Temporary duty का कोटा भी पूरा हो जाएगा। प्रोग्राम तय हो गया। मैंने भी तुरंत कागजी कार्यवाही संपन्न करते हुए कार्गो मेनिफेस्टो में हम दोनों का नाम लिखवा दिया। घर पर सूचित कर दिया कि मैं और सोनिया मैडम बुधवार को ताम्बरम TD जा रहे हैं। सारा पैकिंग हो कर निकलने की तैयारी थी। फिर अचानक बुधवार सुबह को समाचार मिला गुरुवार को एकीकृत वित्तीय सलाहकार (Integrated financial advisor) के साथ खरीद संबंधित बेहद जरूरी मीटिंग है इसलिए वायु अफसर कमान ने आदेश दिया कि सोनिया का मीटिंग में रहना जरूरी है, इसलिए उनकी जगह फ्लाइट लेफ्टिनेंट दीपिका को जाना

कि सोनिया का मीटिंग में रहना जरूरी है, इसलिए उनकी जगह फ्लाइट लेफ्टिनेंट दीपिका को जाना है, जिन्हें अभी मात्र 3 – 4 दिन ही पोस्टिंग आए हुए था। आदेशानुसार दीपिका मैडम ने जाने की तैयारी शुरू कर दी। मैं भी निराश हो गया कि किसी दूसरे विभाग के अफसर के साथ जाना होगा। थोड़ी देर में मैं दी सोनिया मैडम नहीं जा रही है तो आप भी रहने ही दीजिए, मैं अपने विभाग से जूनियर वारंट अफसर अखिलेश को साथ ले लेती हूँ। मैंने भी कहा ठीक है मैडम कोई बात नहीं। मैं अगली बार सोनिया मैडम के साथ चला जाऊँगा। इस प्रकार हम दोनों की जगह दीपिका और अखिलेश का नाम कार्गो मेनिफेस्ट में डलवा दिया गया। हमलोग वापस अपने-अपने काम करने लगे और वे दोनों तय कार्यक्रम के अनुसार उसी जहाज से रवाना हो गए। अगले ही दिन हमें वायु सेना कारनिकोबार के लिए एक जरूरी एविएशन ऑयल की आवश्यकता पड़ी , जो ताम्बरम (चेन्नई) से आना था, तो तय किया गया कि चूंकि मात्रा कम है तो जिस जहाज में दीपिका और अखिलेश आने वाले हैं उसी जहाज में लोड करवा लिया जाय तो जल्दी आ जाएगा। उसी अनुसार ताम्बरम लॉजिस्टिक विभाग से तालमेल किया गया और शुक्रवार 22 जुलाई को पोर्टब्लेयर हवाईअड्डे पर दिन में 11.45 बजे लैंडिंग का इंतजार करने लगे। सामान्यतः सभी जहाज समय पर ही लैंड होते थे। मगर उस दिन जहाज की कोई सूचना नहीं मिल रही थी। समय हो जाने पर भी ATC से जहाज के आने की कोई सूचना नहीं मिली तो पता करने के लिए ATC की ओर अग्रसर हुआ तो बगल के कार्यालय में देखा कि टीवी पर समाचार आ रहा था कि भारतीय वायु सेवा का विमान K-2743 जिसे तांबरम हवाईअड्डे से चलकर 11.45 बजे पोर्टब्लेयर हवाईअड्डे आना था, सुबह 8.30 बजे ताम्बरम हवाई अड्डे से बंगाल की खाड़ी के ऊपर से उड़ान भरने के 16 मिनट बाद रडार से संपर्क टूट गया और तब से लापता है। सुनते ही व्याकुलता के साथ धड़कनें तेज हो गई। शुरू शुरू में लगा कोई तकनीकी खराबी होगी, कुछ देर मे संपर्क दूबारा स्थापित हो जाएगा। परंतु हमारी धारणा गलत साबित हुई। धीरे-धीरे पूरे यूनिट में खबर फ़ैल गई। चारों तरफ जैसे मातम का माहौल छा गया। इस विमान में चालक दल के 6 सदस्यों सहित कुल 29 रक्षा कर्मी सवार थे, जिसमें 11 वायु सेना के तथा अन्य सभी थल सेना, नौ सेना, तटरक्षक एवं नौसेना आयुध डिपो से थे। भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा खोज एवं बचाव अभियान चलाया गया, जिसमें कई नौसैनिक जहाज, पनडुब्बियां और विमान शामिल थे, लेकिन उस समय किसी भी मलबे या कर्मी का पता नहीं चल सका था। अंततः 15 सितंबर 2016 को खोज और बचाव अभियान रोक दिया गया; विमान में सवार सभी 29 लोगों के मारे जाने की आशंका जताई गई और उनके परिवारों को सूचित कर दिया गया। इस दुर्घटना के लगभग 8 वर्षों बाद 2024 में राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान, जो पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तत्वावधान में कार्य करता है। इस संस्थान ने लापता AN-32 विमान के अंतिम ज्ञात स्थान पर हाल ही में गहरे समुद्र में अन्वेषण क्षमता के साथ एक ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल (एयूवी) तैनात किया। यह खोज मल्टी-बीम सोनार (साउंड नेविगेशन एंड रेंजिंग), सिंथेटिक एपर्चर सोनार और हाई रिज़ॉल्यूशन फोटोग्राफी सहित कई पेलोड का उपयोग करके 3400 मीटर की गहराई पर की गई। खोज के दौरान प्राप्त तस्वीरों के विश्लेषण से चेन्नई तट से लगभग लगभग 310 किलो मीटर दूर समुद्र तल पर एक दुर्घटनाग्रस्त विमान के मलबे की उपस्थिति का संकेत मिला। खोज के दौरान प्राप्त तस्वीरों की जांच की गई और उन्हें AN-32 विमान के अनुरूप पाया गया। संभावित दुर्घटना स्थल पर यह खोज, उसी क्षेत्र में इतिहास में किसी अन्य विमान के लापता होने के बारे में कोई जानकारी के नहीं होने के कारण, मलबे को संभवतः दुर्घटनाग्रस्त भारतीय वायु सेना का AN-32 विमान (K-2743) से संबंधित माना गया। इस दुर्घटना ने मुझे और फ्लाइट लेफ्टिनेंट सोनिया को अंदर से झकझोर कर रख दिया था। कई दिनों तक बारंबार मन में यह कचोटता था कि हमने अपने हिस्से की मौत फ्लाइट लेफ्टिनेंट दीपिका और जूनियर वारंट अफसर अखिलेश के नाम कर दिया था। जीवन का आकलन करते हुये पाया कि यह दूसरा मौका था जब भाग्य ने करवट लेते हुए इस विमान दुर्घटना की मृत्यु सूची से मेरा नाम रद्द किया था।

फिर आया तीसरा मौका। ब्लड-कैंसर नामक बीमारी से या यूं कहें मौत से जूझने का। जहां इस बीमारी का नाम सुनते ही लोग इतना टूट जाते हैं जैसे अंदर से मौत को गले लगा चुके हों। इस बीमारी का लगभग सफल इलाज का एक मात्र माध्यम था किमोथेरपी के बाद बोन मैरो या स्टेम सेल ट्रांसप्लांट। मेरी 19 वर्षीय बेटी स्टेम सेल डोनर थी। तय कार्यक्रम के अनुसार 5 दिसंबर 2025 को अस्पताल मे भर्ती हो गया। 11 दिसंबर 2025 को मेरी बेटी का स्टेम सेल मुझमें प्रत्यारोपित किया गया। 12 दिसंबर 2025 की रात अचानक मुझे हृदय की विफलता (Heart Failure) की शिकायत हुई। निश्वास बाधित होने लगा था। कितनी भी कोशिश करता सांस पूरी तरह से नहीं ले पा रहा था। खुद को धीरे-धीरे दूर होते हुए देख रहा था। महसूस हो रहा था जैसे जीवन अचानक बहुत दूर खड़ा हो गया और हर रिश्ता एक-एक कर के आँखों के सामने आने लगे। शरीर अस्पताल के बिस्तर पर था, लेकिन मन कहीं और था। मशीनों की आवाज़ें, मॉनिटर की बीप, डाक्टर – नर्स की भाग दौड़ - सब धीरे-धीरे धुँधला पड़ता हुआ, और उसी धुँधलेपन में जीवन की सबसे साफ तस्वीरें उभरती हैं। सबसे पहले पत्नी का चेहरा जिसने अपने डर को छिपाकर मुझे हिम्मत देती रही थी। मन में यह टीस उठी कि —"अगर मैं चला गया तो वह अकेले कैसे संभालेगी?" उसकी थकी हुई आँखें, उसका चुपचाप रो लेना — सब एक साथ याद आता था। फिर बच्चों की याद, भविष्य की तस्वीरें, भाई-बहन, दोस्त, रिश्तेदार इत्यादि। ऐसे समय में रिश्तों की शिकायतें मिट जाती हैं। मन केवल यह सोचता है — "काश, एक बार सबको देख पाता... बिना किसी दूरी के ।" कुछ चेहरे हँसी के साथ, कुछ अधूरी मुलाकातों के साथ। शायद मन ने एक पल में वर्षों का समय देख लिया। मन ने शायद महसूस किया होगा कि जीवन में दौड़-भाग बहुत थी, पर असली पूँजी वही लोग थे जो मुश्किल समय में खड़े रहे। और यह इच्छा कि "थोड़ा और समय मिल जाए।" काश। अपनों को कह पाता कि मैं उनसे बहुत प्यार करता हूँ। मृत्यु का आभास अक्सर बहुत गहरी शांति और बहुत गहरे डर - दोनों को साथ लेकर आता है। एक तरफ लगता है कि सब छूट रहा है, दूसरी तरफ मन आख़िरी बार जीवन को पूरी ताकत से पकड़ना चाहता है। कब मेरी आँख बंद हुई पता नहीं। लगभग 20-25 मिनट बाद अचानक शायद तेज आक्सीजन के झोंके जैसा कुछ लगा, महसूस हुआ कि जैसे मैं तो अभी भी जिंदा हूँ। उस दिन मुझे पहली बार पता चला था कि हार्ट फ़ेल्युर और हार्ट अटैक दोनों अलग-अलग परिस्थिति होता है। हार्ट अटैक में खून का बहाव रुक जाता है, जबकि हार्ट फ़ेल्युर में दिल की पंपिंग कमजोर हो जाती है।

आज जब सोचता हूँ तो खुद को खुश किस्मत मानता हूँ। ईश्वर ने बार बार मौका दिया है। इस सत्य का मैं जीवंत उदाहरण हूँ कि "जाको राखे साइयाँ –मार सके ना कोय"। जिसने जितने भी दिन किस्मत में लिखवाया है, उसे उतने दिन का कर्म तो करना ही होगा, यही विधाता का नियम है। मेरे जीवन दान में न जाने कितने लोगो की दुआएं रही होंगी, न जाने कितने लोगों के प्यार की ताकत रही होगी। हो सकता है यही अंतिम मौका हो। मैं उस अनुभव से वापस आया हूँ। बहुत लोग उस किनारे तक जा कर वापस लौट नहीं पाते हैं। इसलिए अब जो जीवन मेरे पास है, वह केवल "बचा हुआ समय" नहीं है – यह एक दूसरा अवसर है। इस अवसर को सही तरह से निभाना ही जीवन के प्रति उचित कर्तव्य होगा।

अनिंदिता रुद्र

स्टार्टअप गैरेज हैकाथॉन

"जब तक आप जीवन से संतुष्ट नहीं होंगे तब तक आप काम से कभी भी संतुष्ट नहीं होंगे" - हीदर शुक

भूमिका:

एम.बी.ए.ई.एक्स. कार्यक्रम, आई.आई.एम. कलकत्ता इनोवेशन पार्क (IIMCIP) तथा भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता के संयुक्त तत्वावधान में 8 से 10 मई, 2026 के दौरान आई.आई.एम. कलकत्ता एम.बी.ए.ई.एक्स. बैच 20 के लिए एक अनूठे हैकाथॉन "स्टार्टअप गैरेज" का आयोजन किया गया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत के उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र में भविष्य में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार करना था। लॉकडाउन जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों की अवधारणा पर आधारित इस आयोजन ने प्रतिभागियों को अपने सुविधा-क्षेत्र (Comfort Zone) से बाहर निकलकर नवाचारपूर्ण स्टार्टअप विचार विकसित करने, निवेशक सिमुलेशन में भाग लेने, टीम के रूप में कार्य करने तथा विशेषज्ञ निर्णायक मंडल के समक्ष अपने व्यावसायिक प्रस्ताव प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।

इस यात्रा की शुरुआत एम.बी.ए.ई.एक्स. विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत स्टार्टअप विचारों से हुई, जिनका भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता इनोवेशन पार्क द्वारा गहन मूल्यांकन किया गया। इनमें से सर्वश्रेष्ठ 30 विचारों का चयन अगले चरण के लिए किया गया। जिन विद्यार्थियों के विचार चयनित नहीं हुए, उन्होंने निवेशकों की भूमिका निभाते हुए उन चयनित विचारों में रणनीतिक रूप से निवेश किया, जिन्हें उन्होंने सर्वाधिक संभावनाशील माना।

प्रतियोगिता आगे बढ़ने के साथ ये 30 विचार स्टार्टअप टीमों में परिवर्तित हुए, जिन्होंने दबाव, अनिश्चितता, विचार-मंथन, निरंतर रणनीतिक बदलाव (Pivot) तथा त्वरित निर्णय लेने जैसी वास्तविक उद्यमशील चुनौतियों का सामना किया। इन कठिन परिस्थितियों में सर्वाधिक सशक्त और संभावनाशील 12 टीमों ने अंतिम चरण के लिए अपनी जगह बनाई।

हैकाथॉन के दौरान प्रतिभागियों की अनुकूलन क्षमता, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान कौशल की परीक्षा लेने के लिए अनेक रोचक मोड़ और अप्रत्याशित चुनौतियाँ प्रस्तुत की गईं। चयनित टीमों को आई.आई.एम. कलकत्ता के पूर्व छात्रों, जो विभिन्न स्टार्टअप्स के संस्थापक एवं सह-संस्थापक हैं, द्वारा गहन मार्गदर्शन एवं मेंटरशिप प्रदान की गई। इनमें SecurTime के सह-संस्थापक, Connecting Dot Consultancy के सह-संस्थापक एवं मुख्य व्यवसाय अधिकारी (CBO), Radha Ratna के सह-संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO), Earthstory Farms के संस्थापक, Doc Pharma के संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा Digifra Technology के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक (MD) शामिल थे।

कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण आई.आई.एम.सी.आई.पी. के मुख्य परिचालन अधिकारी (COO) प्रांजल कोंवर द्वारा "Winning Pitch Strategies" विषय पर दिया गया ज्ञानवर्धक सत्र रहा, जिसमें प्रतिभागियों को प्रभावशाली स्टोरीटेलिंग, व्यावसायिक मॉडल तैयार करने तथा अंतिम पिच डेक को सशक्त बनाने की महत्वपूर्ण रणनीतियों से अवगत कराया गया।

आई.आई.एम.सी.आई.पी. के मुख्य व्यवसाय अधिकारी (CBO) गौरव कपूर ने अपने ऊर्जावान संबोधन में इस विचार को सशक्त रूप से रेखांकित किया कि महान व्यावसायिक विचारों की पहली सांस अक्सर आलीशान कॉन्फ्रेंस कक्षों में नहीं, बल्कि संघर्ष और प्रयोगों से भरे साधारण गैरेजों में जन्म लेती है।

लगातार 48 घंटे तक चले इस रोमांचक और चुनौतीपूर्ण आयोजन का समापन तीसरे दिन आयोजित भव्य ग्रैंड फिनाले के साथ हुआ। अंतिम चरण में शीर्ष 12 टीमों ने एम.बी.ए.ई.एक्स. के पूर्व छात्रों प्रवीण रेड्डी गोंगिरेड्डी, सौम्य दासगुप्ता, नितिन चंद्र, अभिषेक चौधरी तथा शशांक राय सहित आई.आई.एम.सी.आई.पी. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. विवेक कुमार राय की प्रतिष्ठित निर्णायक समिति के समक्ष अपने व्यावसायिक प्रस्ताव प्रस्तुत किए। सभी निर्णायकों के समृद्ध उद्यमशील अनुभव ने मूल्यांकन प्रक्रिया को वास्तविक निवेशकों एवं उद्योग विशेषज्ञों के मानकों के अनुरूप बनाया।

रोमांचक अंतिम प्रस्तुति चरण के उपरांत चार टीमों ने विजेता के रूप में स्थान प्राप्त किया—

- टीम ScripBecho — विजेता
- टीम AeroCarry एवं टीम Circular Thread — उपविजेता
- टीम DataWeave AI — द्वितीय उपविजेता

विजेता टीमों को भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता एवं आई.आई.एम. कलकत्ता इनोवेशन पार्क के विशिष्ट प्रतिनिधियों—प्रोफेसर आलोक कुमार राय, निदेशक, भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता; प्रोफेसर सुरेन सिस्ता, अध्यक्ष, एम.बी.ए.ई.एक्स.; तथा डॉ. विवेक कुमार राय, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता इनोवेशन पार्क की गरिमामयी उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

अतनु मंडल

"विकसित भारत" के लिए सरकारी कर्मचारियों की भूमिका

'विकसित भारत' का अर्थ है 'एक विकसित भारत'। विकसित भारत 2047 सरकार का वह दूरदर्शी संकल्प है, जिसका उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक, अर्थात वर्ष 2047 तक, भारत को पूर्णतः विकसित राष्ट्र बनाना है।

भारत की अर्थव्यवस्था के लिए "विज़न 2047" का लक्ष्य वर्ष 2047 तक भारत को 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था तथा 18,000 अमेरिकी डॉलर प्रति व्यक्ति आय वाले विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करना है।

यह पहल समावेशी विकास, आर्थिक विस्तार, सतत विकास, नवाचार तथा नागरिक सहभागिता पर आधारित है। इसका आधार चार प्रमुख स्तंभ हैं—

युवा, गरीब, महिलाएँ, अन्नदाता (किसान)

इसके अतिरिक्त, यह पहल पाँच व्यापक विषयों पर आधारित है, जो इसके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हैं—

सशक्त भारतीय, समृद्ध एवं सतत अर्थव्यवस्था, नवाचार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सुशासन एवं सुरक्षा,

विश्व में भारत की भूमिका

सरकारी कर्मचारी "राष्ट्र निर्माता" होते हैं। उनका दायित्व है कि वे सार्वजनिक सेवाओं को त्वरित, निष्पक्ष और सरल बनाएं तथा वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सक्रिय योगदान दें। उनके प्रमुख दायित्व निम्नलिखित हैं—

1. जनता की सेवा

सरकारी कर्मचारियों को नागरिकों के साथ परिवार जैसा व्यवहार करना चाहिए तथा उनकी समस्याओं का शीघ्र समाधान करना चाहिए। "नागरिक देवो भवः" की भावना को अपनाते हुए उन्हें समाधान-उन्मुख, संवेदनशील और नागरिक-केंद्रित होना चाहिए।

2. प्रौद्योगिकी को अपनाना

सरकारी कर्मचारियों को डिजिटल तकनीकों का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। इससे कार्य कागज़ रहित (Paperless) होंगे, भ्रष्टाचार में कमी आएगी तथा नागरिकों को सरकारी सेवाओं तक सरल और शीघ्र पहुँच प्राप्त होगी। प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

3. कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन

सरकारी कर्मचारियों को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer - DBT) जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से गरीबों, महिलाओं और किसानों के बैंक खातों में सीधे लाभ पहुँचाना चाहिए। DBT पारदर्शिता बढ़ाने तथा यह सुनिश्चित करने का प्रभावी माध्यम है कि सरकारी लाभ वास्तविक पात्र लाभार्थियों तक सीधे पहुँचें। डिजिटलकरण एवं पारदर्शिता आधारित सुशासन से कार्यकुशलता बढ़ती है, भ्रष्टाचार घटता है तथा सरकारी संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास मजबूत होता है।

4. ईमानदारी एवं निष्पक्षता

सरकारी कर्मचारियों को अपने कार्यों में ईमानदारी, पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखनी चाहिए तथा किसी भी प्रकार के अनुचित आचरण से बचना चाहिए।

5. नए कौशल सीखना

सरकारी अधिकारियों को नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने ज्ञान एवं कौशल को निरंतर अद्यतन करना चाहिए, ताकि वे तेजी से बदलती दुनिया की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य कर सकें।

6. क्षमता निर्माण

सरकारी कर्मचारियों को आम नागरिकों के कौशल विकास एवं प्रशिक्षण में सहयोग देना चाहिए, जिससे स्थानीय कार्यबल अधिक उत्पादक बने तथा आधुनिक रोजगार के लिए तैयार हो सके।

7. व्यवसायों को प्रोत्साहन देना

सरकारी कर्मचारियों को नए उद्योगों एवं व्यवसायों को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ें और देश की आर्थिक प्रगति को गति मिले।

8. निष्पक्ष एवं प्रभावी सुशासन

सरकारी कर्मचारियों को कानूनों एवं नियमों का निष्पक्षतापूर्वक पालन सुनिश्चित करना चाहिए, जिससे स्थानीय उद्योग एवं समाज सुरक्षित, स्वस्थ और विधिसम्मत वातावरण में कार्य कर सकें। ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस (Ease of Doing Business) को बेहतर बनाने के लिए नियमों को सरल बनाना, अनुपालन संबंधी बोझ कम करना तथा व्यवसाय-अनुकूल वातावरण तैयार करना आवश्यक है। सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) जैसी पहलें सार्वजनिक खरीद प्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू की गई हैं।

9. नीति निर्माण

वरिष्ठ अधिकारियों को स्थानीय स्तर से प्राप्त आँकड़ों एवं अनुभवों का विश्लेषण कर शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा अन्य क्षेत्रों के लिए अधिक प्रभावी राष्ट्रीय नीतियों के निर्माण में योगदान देना चाहिए।

10. नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन

सरकारी कर्मचारियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए, जिससे रोजगार सृजन हो, अर्थव्यवस्था अधिक संगठित बने तथा देश के समग्र विकास को गति मिले।

अंत में, सरकारी कर्मचारी, अन्य नागरिक तथा विभिन्न संस्थाएँ MyGov प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से अपने सुझाव सीधे भारत सरकार को भेज सकते हैं। नीति-निर्माण में योगदान देने के लिए नीति आयोग (NITI Aayog) पोर्टल का भी उपयोग किया जा सकता है। “विकसित भारत” के मूल स्तंभों एवं नीति-उद्देश्यों के बारे में अधिक जानकारी के लिए Viksit India प्लेटफ़ॉर्म का अवलोकन किया जा सकता है।

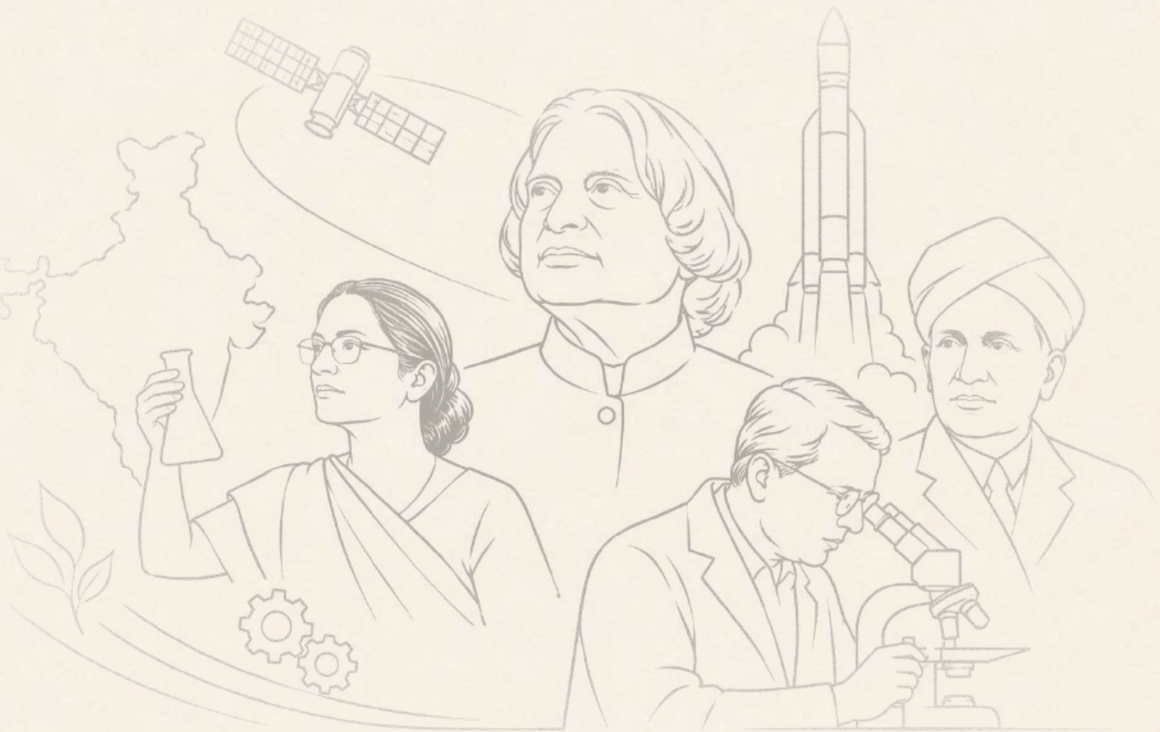

चिरंजीब चटर्जी

पेलिंग की वादियों में बिताए अविस्मरणीय पल

पेलिंग, पश्चिम सिक्किम

दिनांक: 06 अप्रैल, 2026 (सोमवार)

गर्मी, कार्यालय के बढ़ते कार्यभार, लक्ष्य-तिथियों (Target Dates) और लगातार बैठकों से सभी काफी थक चुके थे। ऐसे में कार्यालय के कुछ साथियों ने मिलकर निश्चय किया कि इस बार कहीं ऐसी जगह चला जाए, जहाँ कुछ पल सुकून के साथ बिताए जा सकें। सबकी एक ही इच्छा थी—"इस बार काम नहीं, बादलों के बीच कुछ सुकून के पल बिताए जाएँ।"

काफी विचार-विमर्श के बाद हमारा गंतव्य तय हुआ—पेलिंग, पश्चिम सिक्किम, जहाँ प्रकृति की अनुपम छटा, कंचनजंघा का भव्य दर्शन और शांत पर्वतीय वातावरण हमारा इंतज़ार कर रहे थे।

पहला दिन: कोलकाता से पेलिंग तक का सफर

दिनांक: 30 अप्रैल, 2026 (गुरुवार)

आधे दिन का कार्यालय कार्य समाप्त करने के बाद सभी साथी अपने-अपने परिवार के साथ रात लगभग 9:00 बजे कोलकाता रेलवे स्टेशन पहुँचे। थोड़े-से जलपान और बातचीत के बाद सभी रात्रि 9:45 बजे "गुवाहाटी गरीब रथ एक्सप्रेस" में सवार हो गए।

रातभर का रेल सफर कब बीत गया, पता ही नहीं चला। अगले दिन सुबह लगभग 8:30 बजे हम न्यू जलपाईगुड़ी (NJP) स्टेशन पहुँचे। गर्मागर्म चाय और नाश्ते के साथ थोड़ी ताज़गी लेने के बाद आठ गाड़ियों की व्यवस्था की गई और हँसी-मज़ाक के बीच हमारी यात्रा पेलिंग की ओर शुरू हुई।

लगभग पाँच से छह घंटे की इस सड़क यात्रा में चाय के हरे-भरे बागान, कल-कल बहती तीस्ता नदी और दूर-दूर तक दिखाई देती कंचनजंघा की हिमाच्छादित चोटियों ने पूरे रास्ते को यादगार बना दिया। बीच-बीच में चाय, मोमो और स्वादिष्ट दोपहर के भोजन का आनंद लेते हुए शाम तक हम समुद्र तल से लगभग 6,800 फीट की ऊँचाई पर स्थित खूबसूरत पेलिंग पहुँच गए।

होटल में पहले से ही हमारी बुकिंग थी। दिनभर की थकान के बाद रात में गरमागरम सूप, चिकन, चावल, दाल, रोटी और मिठाई के स्वादिष्ट भोजन ने पूरे दिन की थकान दूर कर दी।

दूसरा दिन: झरने, झील और स्काईवॉक का रोमांच

सुबह होटल की बालकनी से बाहर देखा तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो बादल हमारे कमरे तक चले आए हों। मनमोहक दृश्य ने सभी का मन मोह लिया। स्वादिष्ट नाश्ते के बाद हम दिनभर की सैर के लिए निकल पड़े।

उस दिन हमारे कार्यक्रम में कई आकर्षक स्थल शामिल थे—

1. रिमबी फॉल्स एवं ऑरेंज गार्डन

हल्की फुहारों और ठंडी हवाओं के बीच हमने प्रवेश टिकट लेकर रिमबी फॉल्स और ऑरेंज गार्डन का भ्रमण किया। झरने का कल-कल बहता पानी और चारों ओर फैली हरियाली मन को अत्यंत सुकून दे रही थी।

2. खचेओपालरी (Khecheopalri) झील

इस पवित्र झील को "इच्छा पूरी करने वाली झील" भी कहा जाता है। वहाँ पहुँचकर सभी ने अपनी-अपनी मनोकामना व्यक्त की। हमने भी मुस्कुराते हुए प्रार्थना की—"इस वर्ष थोड़ा-सा इन्क्रीमेंट और एक प्रमोशन भी मिल जाए।" वहाँ का शांत और आध्यात्मिक वातावरण मन को भीतर तक छू गया।

3. पेलिंग स्काईवॉक एवं चेनरेज़िग बुद्ध प्रतिमा

काँच के स्काईवॉक पर पहला कदम रखते ही सभी के चेहरे पर उत्साह और हल्की घबराहट साफ दिखाई दे रही थी। लेकिन जैसे ही सामने कंचनजंघा की विशाल पर्वत श्रृंखला और भव्य बुद्ध प्रतिमा का दृश्य दिखाई दिया, ऐसा लगा मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। उस अनुपम सौंदर्य को शब्दों में बाँध पाना सचमुच कठिन है।

4. कंचनजंघा फॉल्स

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस झरने ने सभी का मन मोह लिया। इसकी अद्भुत छटा को कैमरे में कैद करने का मोह कोई भी छोड़ नहीं पाया। देखते ही देखते सैकड़ों तस्वीरें खींच ली गईं।

पूरा दिन कब बीत गया, इसका एहसास ही नहीं हुआ। रात में होटल की छत पर सभी साथियों ने अलाव के चारों ओर बैठकर हँसी-ठिठोली, गीत-संगीत और यादगार बातचीत का आनंद लिया। उस पल ऐसा महसूस हुआ कि हम केवल सहकर्मी नहीं, बल्कि एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं।

तीसरा दिन: नामची चारधाम, स्थानीय बाज़ार और वापसी की राह

सुबह मौसम ने अपना अलग ही रंग दिखाया। लगातार हो रही वर्षा के कारण हमारा रावंगला (Ravangla) जाने का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। हालांकि प्रकृति ने हमें निराश नहीं किया, बल्कि एक नया अनुभव हमारी प्रतीक्षा कर रहा था।

नाश्ते के बाद हमने होटल से चेक-आउट किया और पेलिंग के स्थानीय बाज़ार का रुख किया। वहाँ से सभी ने अपनी पसंद के अनुसार स्मृति-चिह्न, स्थानीय हस्तशिल्प और प्रसिद्ध सिक्किमी चाय खरीदी। कुछ देर बाज़ार की चहल-पहल का आनंद लेने के बाद हमारी यात्रा नामची चारधाम की ओर आरंभ हुई।

घने जंगलों और घुमावदार पहाड़ी रास्तों से होकर गुजरते हुए नीचे फैली हरी-भरी घाटियों का मनोहारी दृश्य मन को बार-बार अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति ने अपने सबसे सुंदर रंग यहीं बिखेर दिए हों।

नामची स्थित चारधाम परिसर अपने आप में अद्‌त है। यहाँ भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों तथा चारों धाम की प्रतिकृतियों का अत्यंत सुंदर और भव्य निर्माण किया गया है। भगवान शिव की विशाल प्रतिमा और पूरे परिसर का आध्यात्मिक वातावरण मन को अद्‌त शांति प्रदान करता है। बाबा भोलेनाथ के दर्शन के बाद यात्रा की सारी थकान जैसे पलभर में दूर हो गई।

दोपहर का भोजन करने के पश्चात हमारी वापसी यात्रा आरंभ हुई। लगभग चार से पाँच घंटे की सड़क यात्रा के बाद हम न्यू जलपाईगुड़ी (NJP) रेलवे स्टेशन पहुँचे। रात के भोजन की व्यवस्था पहले ही कर ली गई थी, इसलिए स्टेशन पर सभी ने आराम से भोजन किया और अपनी ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगे।

रात्रि लगभग 8:30 बजे पदातिक एक्सप्रेस समय पर प्लेटफ़ॉर्म पर आ गई। ट्रेन में बैठते ही सभी के बीच एक ही संकल्प गूँज उठा—"हर वर्ष कम-से-कम एक ऐसी यात्रा अवश्य करेंगे।"

वापसी के सफर में गरमागरम चाय के साथ बातचीत का सिलसिला चलता रहा। चर्चा कभी कार्यालय की हल्की-फुल्की बातों पर होती, तो कभी जीवन के अनुभवों और भविष्य की योजनाओं पर। सबसे सुखद बात यह रही कि पूरे तीन दिनों में किसी ने भी यह नहीं पूछा—"ऑफिस का मेल चेक किया क्या?" यही इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

अगली सुबह लगभग 7:00 बजे हम सियालदह (Sealdah) रेलवे स्टेशन पहुँचे। सभी ने अपने-अपने सामान और परिवार के साथ घर की राह पकड़ी। पेलिंग की मनमोहक वादियों को छोड़ने का हल्का-सा दुःख तो था, साथ ही साथ एक-दूसरे से बिछड़ने की कसक भी महसूस हो रही थी। लेकिन घर लौटने की खुशी हर चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी।

एक-दूसरे से विदा लेते हुए मन में यही एहसास था कि यह यात्रा केवल एक पर्यटन कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि यादों, अपनत्व और मित्रता का सुंदर अध्याय बन गई है। अगले ही दिन फिर वही कार्यालय, वही काम और वही दिनचर्या हमारा इंतज़ार कर रही थी। किंतु इस यात्रा ने एक बात सिखा दी—

"काम के लिए जीवन नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक बनाने के लिए काम करना चाहिए।"

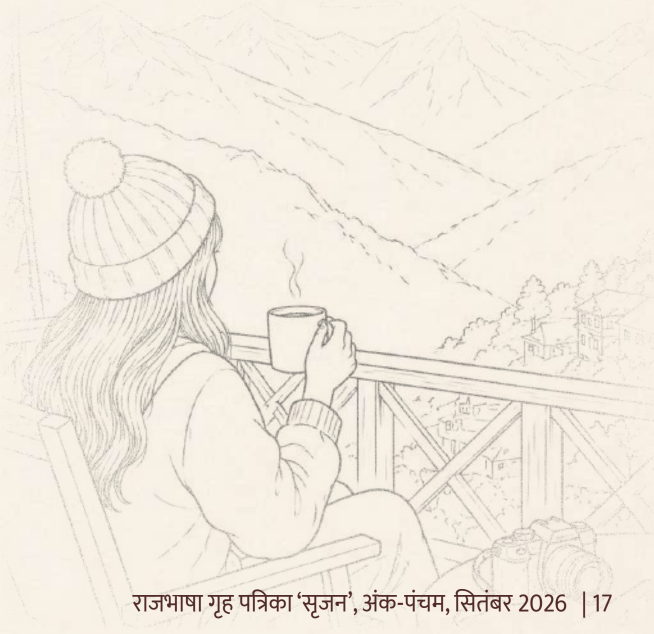

जी. आर. नायुडु

माता-पिता

एक बार एक लड़का पढ़ाई और नौकरी के लिए अपने गाँव से दूर शहर चला गया। उसके माता-पिता ने अपनी छोटी-सी बचत से उसकी पढ़ाई पूरी करवाई। नौकरी मिलने के बाद लड़का बहुत व्यस्त रहने लगा और माता-पिता को समय देना कम कर दिया।

एक दिन उसे खबर मिली कि उसके पिता बीमार हैं। वह तुरंत गाँव पहुँचा। उसने देखा कि पिता कमजोर होने के बावजूद मुस्कुरा रहे थे। पिता ने कहा, "बेटा, हमें तुम्हारी सफलता से ज्यादा तुम्हारी खुशी चाहिए।"

यह सुनकर लड़के की आँखों में आँसू आ गए। उसे एहसास हुआ कि दुनिया में बहुत से लोग उसकी सफलता चाहते थे, लेकिन उसके माता-पिता ऐसे लोग थे जो बिना किसी स्वार्थ के उसकी खुशी चाहते थे।

उस दिन उसने अपने माता-पिता से वादा किया कि वह जीवन में चाहे कितना भी व्यस्त क्यों न हो, उन्हें कभी अकेला महसूस नहीं होने देगा।

शिक्षा: माता-पिता हमारे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति और सबसे निःस्वार्थ प्रेम का स्रोत होते हैं। उनकी कद्र हमें उनके साथ रहते हुए ही करनी चाहिए।

डॉली सेन

सच्ची शिक्षा

सच्ची शिक्षा क्या है? क्या यह केवल कोई सिद्धांत है, जो पुस्तकों के पन्नों तक सीमित है? क्या किसी व्यक्ति को केवल इसलिए शिक्षित कहा जा सकता है कि उसके पास अनेक डिग्रियाँ हैं? निस्संदेह नहीं।

सच्ची शिक्षा का वास्तविक परिचय किसी व्यक्ति के व्यवहार में दिखाई देता है। वह स्वयं के साथ और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है, अपने परिवार, समाज, राष्ट्र तथा समस्त मानवता के प्रति उसका दृष्टिकोण कैसा है—यही उसकी शिक्षा का वास्तविक मापदंड है।

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर मुक्त और आनंदमय शिक्षा के समर्थक थे। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जिज्ञासा, स्वतंत्र चिंतन और सृजनात्मकता को विकसित करे। अपनी प्रसिद्ध रचना 'तोता कहानी' में उन्होंने दिखाया कि केवल रटकर ज्ञान अर्जित करना विद्यार्थी की जिज्ञासा और रचनात्मकता का ह्रास कर देता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना की, जहाँ प्रकृति के सान्निध्य में सीखने की स्वतंत्र और मानवीय व्यवस्था विकसित की गई।

किसी भी शिक्षा-प्रणाली का वास्तविक मूल्य इस बात में निहित है कि वह व्यक्ति को उसका श्रेष्ठ स्वरूप बनने में कितनी सहायता करती है। दुर्भाग्यवश आज अनेक विद्यार्थी भारी-भरकम पाठ्यक्रम और अंकों की प्रतिस्पर्धा के बोझ तले दबे हुए हैं। वे पढ़ते तो हैं, परंतु सीखते कम हैं। वे उत्कृष्ट अंकों के साथ परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लेते हैं, किंतु जीवन के नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और चरित्र-निर्माण से दूर रह जाते हैं।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था—

"शिक्षा वह है, जो तब भी हमारे साथ रहती है जब हम विद्यालय में सीखी हुई अधिकांश बातें भूल चुके होते हैं।"

यह कथन स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास है। दुर्भाग्य से आज अनेक अभिभावक और शिक्षण संस्थान सफलता को केवल अंकों, रैंक और प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश तक सीमित कर देते हैं। छोटी-सी आयु से ही बच्चों को निरंतर प्रतिस्पर्धा की दौड़ में धकेल दिया जाता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे हर स्थिति में दूसरों से आगे निकलें। परिणामस्वरूप अनेक बच्चे असफलता को जीवन का अंत समझने लगते हैं और मानसिक तनाव, अवसाद तथा निराशा का शिकार हो जाते हैं।

हाल के वर्षों में प्रतियोगी परीक्षाओं के अत्यधिक दबाव के कारण अनेक विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या जैसी दुखद घटनाएँ सामने आई हैं। कुछ मामलों में मानसिक तनाव ने परिवारों को भी गहरे संकट में डाल दिया है। ऐसी घटनाएँ केवल व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि हमारी शिक्षा-व्यवस्था और सामाजिक सोच के लिए गंभीर चेतावनी हैं। हमें यह समझना होगा कि विद्यार्थी मशीन नहीं, बल्कि संवेदनशील मनुष्य हैं। शिक्षा का उद्देश्य उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए, न कि केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना।

सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता की होती है। उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि उन्होंने संसार में एक कोमल और संवेदनशील जीवन का स्वागत किया है। उनका प्रथम दायित्व है कि वे अपने बच्चे के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करें। शिक्षा इस विकास की सहायक बने, बाधा नहीं।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—

"शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि बुद्धि को विकसित करने और चरित्र का निर्माण करने वाले माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए।"

उन्होंने यह भी कहा था—

"हम चाहते हैं कि बच्चा ज्ञान की खोज करे, न कि ज्ञान बच्चे की खोज में भटके।"

वास्तव में, सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को केवल सफल नहीं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक, उत्तरदायी और मानवीय नागरिक बनाए। ऐसी शिक्षा ही राष्ट्र और समाज को स्थायी रूप से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर सकती है।

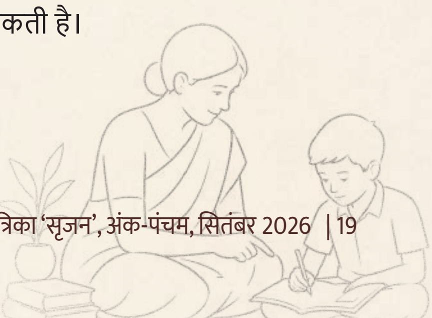

प्रियंका चटर्जी

ब्रह्मांड: नेतृत्व, नवाचार और ज्ञान का अनंत आकाश

"यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।"

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।" (ऋग्वेद)

अर्थात् — विश्व के सभी दिशाओं से हमारे पास श्रेष्ठ विचार आएँ।

ब्रह्मांड केवल आकाश में फैला अनंत विस्तार नहीं, बल्कि ज्ञान, नेतृत्व और नवाचार का सबसे बड़ा शिक्षक है। इसके मौन में चिंतन है, इसके संतुलन में अनुशासन है, और इसकी निरंतर गति में विकास का संदेश छिपा है। सूर्य का निस्वार्थ प्रकाश, ग्रहों का संतुलित संचालन और प्रकृति का सामंजस्य हमें सिखाता है कि श्रेष्ठ नेतृत्व अधिकार से नहीं, उत्तरदायित्व से जन्म लेता है।

भगवद्गीता का संदेश भी यही है—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।"

अर्थात्, एक सच्चा नेता अपने आचरण से प्रेरणा देता है।

आज के युग में नवाचार केवल तकनीक तक सीमित नहीं है; यह जिज्ञासा, साहस और नए विचारों का परिणाम है। जिस प्रकार ब्रह्मांड निरंतर विस्तार कर रहा है, उसी प्रकार ज्ञान की सीमाएँ भी प्रतिदिन विस्तृत हो रही हैं। सीखना ही प्रगति का आधार है।

"ईशावास्यमिदं सर्वम्" हमें याद दिलाता है कि प्रकृति, समाज और मानवता परस्पर जुड़े हुए हैं। यही भावना सतत विकास (Sustainability) का मूल है—ऐसा विकास जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करे।

संगठन भी एक छोटे ब्रह्मांड की तरह होते हैं, जहाँ विविध प्रतिभाएँ एक साझा उद्देश्य से जुड़कर उत्कृष्टता का निर्माण करती हैं। नेतृत्व का अर्थ सबसे आगे चलना नहीं, बल्कि दूसरों को उनकी सर्वोत्तम क्षमता तक पहुँचने में सक्षम बनाना है।

"सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु" का शांति मंत्र हमें सहयोग, सामूहिक सीख और साझा प्रगति का मार्ग दिखाता है। यही किसी भी उत्कृष्ट शैक्षणिक और प्रबंधन संस्थान की आत्मा है।

अंततः, ब्रह्मांड हमें विनम्रता सिखाता है, ज्ञान हमें दृष्टि देता है, नवाचार हमें भविष्य से जोड़ता है, और सतत विकास हमें मानवता के प्रति उत्तरदायी बनाता है। यही वे स्तंभ हैं जिन पर कल का नेतृत्व निर्मित होगा।

"पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥"

यह उपनिषद् मंत्र हमें बताता है कि पूर्णता किसी अंतिम उपलब्धि का नाम नहीं, बल्कि निरंतर सीखने, स्वयं को परिष्कृत करने और दूसरों को समृद्ध बनाने की सतत प्रक्रिया है।

जब हम रात के शांत आकाश की ओर देखते हैं, तो तारे केवल प्रकाश नहीं देते; वे हमें यह स्मरण कराते हैं कि हर महान यात्रा एक छोटे-से प्रश्न से प्रारंभ होती है। हर परिवर्तन एक साहसी विचार से जन्म लेता है। हर नेतृत्व सेवा से प्रारंभ होता है। और हर संस्था तभी महान बनती है जब वह ज्ञान को केवल संचित नहीं करती, बल्कि उसे समाज के कल्याण के लिए साझा करती है।

ब्रह्मांड हमें विनम्रता सिखाता है, ज्ञान हमें दृष्टि देता है, नवाचार हमें भविष्य से जोड़ता है, और सतत विकास हमें मानवता के प्रति उत्तरदायी बनाता है। यही वे चार स्तंभ हैं जिन पर कल का नेतृत्व खड़ा होगा।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय।असतो मा सद्गमय।

मृत्योर्मा अमृतं गमय॥ "

अर्थात्—अज्ञान से ज्ञान की ओर, सीमाओं से संभावनाओं की ओर, और व्यक्तिगत सफलता से सामूहिक कल्याण की ओर बढ़ना ही मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।

ज्ञान से नेतृत्व, नेतृत्व से नवाचार, नवाचार से सतत विकास, और सतत विकास से मानवता का उज्ज्वल भविष्य—यही ब्रह्मांड का शाश्वत संदेश है।

प्रियंका दासगुप्ता

शांतिनिकेतन हेरिटेज वॉक

हाल ही में, मुझे अपने जीवन में पहली बार शांतिनिकेतन स्थित 'विश्व-भारती विश्वविद्यालय' के अंदर जाने का सुनहरा अवसर मिला। मेरे मन में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के लिए बहुत गहरी श्रद्धा है और मैं हमेशा से उनके विचारों और उनकी जीवन-शैली से बहुत प्रभावित रही हूँ।

कुछ समय पहले, मेरे पिताजी (जो नियमित रूप से रेडियो सुनते हैं) ने मुझे एक बहुत ही खास जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्व-भारती प्रशासन ने शांतिनिकेतन के मुख्य आश्रम क्षेत्र में एक 'हेरिटेज वॉक' शुरू की है। यह क्षेत्र अब एक UNESCO World Heritage Site भी है। एक घंटे की यह सैर हमें गुरुदेव के शैक्षिक, सांस्कृतिक और वास्तुशिल्प (architecture) के दृष्टिकोण से करीब से रूबरू कराती है।

जैसे ही मुझे इस हेरिटेज वॉक के बारे में पता चला, मैंने तुरंत अपने परिवार के साथ शांतिनिकेतन जाने का प्लान बना लिया। उन दिनों मेरी बेटी की गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं और हम सभी को अपनी रोज़मर्रा की भागदौड़ वाली ज़िंदगी से एक छोटे से 'ब्रेक' की तलाश भी थी।

वहाँ पहुँच कर स्थानीय लोगों से हमें पता चला कि यह हेरिटेज वॉक केवल बुधवार के दिन ही आयोजित की जाती है। इसके टिकट सिर्फ 'रवींद्र भवन' के काउंटर से ही लिए जा सकते हैं और इसके लिए कोई एडवांस बुकिंग की सुविधा नहीं है। हमारी किस्मत बहुत अच्छी थी कि हमें गुरुवार को वापस लौटना था, इसलिए हम बुधवार को इस ऐतिहासिक सैर का हिस्सा बन पाए।

बुधवार शाम की हमारी वह सैर किसी जादुई अनुभव से कम नहीं थी। विश्व-भारती के आश्रम परिसर का लगभग एक घंटे का यह भ्रमण हमें गुरुदेव के विचारों और शैक्षिक दर्शन से रूबरू कराता है। इस दौरान हमने कांच से बने अद्‌त उपासना गृह, घंटा घर, छातिमतला, शांतिनिकेतन बाड़ी, आम्र कुंज, खुले आसमान के नीचे लगने वाली कक्षाओं के स्थान, और विरासत परिसर में स्थित पुरानी पाठ भवन जैसी ऐतिहासिक धरोहरों को देखा। हर स्थल अपने भीतर शांतिनिकेतन की अनूठी परंपरा, प्रकृति के साथ शिक्षा के संबंध और गुरुदेव के आदर्शों की एक अलग कहानी समेटे हुए है। यह केवल एक मार्गदर्शित विरासत भ्रमण नहीं था, बल्कि उस जीवंत परिवेश को अनुभव करने का अवसर था, जहाँ प्रकृति, कला, संस्कृति और शिक्षा का अद्‌त समन्वय साकार होता है।

इस वॉक का आयोजन विश्व-भारती प्रशासन द्वारा बहुत ही शानदार तरीके से किया गया है। प्रशिक्षित और जानकार गाइड आपको बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में वहाँ के इतिहास, कला, वास्तुकला और प्रेरणादायक कहानियों के बारे में विस्तार से बताते हैं। उनकी बातें इस सफर को इतना दिलचस्प बना देती हैं कि हर कोई इससे आसानी से जुड़ जाता है।

जब आप 'उत्तरायण' के शांत रास्तों पर कदम रखते हैं या खूबसूरत 'उपासना गृह' (प्रार्थना कक्ष) के सामने खड़े होते हैं, तो आपको वहाँ की हवाओं में गुरुदेव की मौजूदगी और उनकी शांति महसूस होती है। यह सैर सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि अपने आप में एक सुकून भरा अनुभव है, जो सीधे आपकी आत्मा को छूता है।

शांतिनिकेतन की यह यात्रा मेरी सबसे यादगार यात्राओं में से एक बन गई है।

पूजा साहा

फूटबॉल के बारे में दिल्चस्प बातें

फिलहाल, पूरी दुनिया 2026 के फुटबॉल वर्ल्ड कप के शानदार मैचों में डूबी हुई है। फुटबॉल वर्ल्ड कप का इतिहास काफी पुराना है और इसी को ध्यान में रखते हुए, जानकारी के लिए कुछ दिलचस्प तथ्य इकट्ठा करके पेश किए गए हैं। ये सभी तथ्य ओपन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं, जिसे सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया गया है-

1.पहला FIFA वर्ल्ड कप 1930 में उरुग्वे में हुआ था। इसे फ़ुटबॉल की इंटरनेशनल गवर्निंग बॉडी FIFA ने ऑर्गनाइज़ किया था।

2.पहले टूर्नामेंट में सिर्फ़ 13 टीमों ने हिस्सा लिया था। सात साउथ अमेरिका से, चार यूरोप से और दो नॉर्थ अमेरिका से थीं।

3.उरुग्वे को होस्ट देश इसलिए चुना गया क्योंकि वह अपनी आज़ादी की सौवीं सालगिरह मना रहा था और उसने 1924 और 1928 में फ़ुटबॉल में ओलंपिक गोल्ड मेडल जीते थे।

4.पहला वर्ल्ड कप मैच 13 जुलाई, 1930 को फ़्रांस और मेक्सिको के बीच खेला गया था। उरुग्वे ने पहला वर्ल्ड कप जीता था।

5.ब्राज़ील के नाम सबसे ज़्यादा वर्ल्ड कप जीतने का रिकॉर्ड है, उसने पाँच बार (1958, 1962, 1970, 1994, 2002) यह खिताब जीता है।

6.जर्मनी और इटली संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं, दोनों ने चार-चार बार खिताब जीते हैं।

7.विश्व कप की शुरुआत से ही 17 विभिन्न देशों द्वारा मेजबानी की गई है। ब्राज़ील एकमात्र ऐसा देश है जिसने 1950 और 2014 में दो बार विश्व कप की मेजबानी की है।

8.2026 से वर्ल्ड कप में टीमों की संख्या 32 से बढ़कर 48 हो गई हैं, जो टूर्नामेंट के आधुनिक इतिहास में सबसे बड़ा फ़ॉर्मेट बदलाव हैं। इस विस्तार से मैचों की संख्या 64 से बढ़कर 104 हो गई हैं और ज़्यादा देशों को फुटबॉल के सबसे बड़े मंच पर हिस्सा लेने का मौका मिला हैं।

9.यह पहला मौका है जब तीन देश - अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको मिलकर वर्ल्ड कप की मेजबानी कर रहे हैं।

10.मेक्सिको का रिकॉर्ड: मैक्सिको इतिहास का पहला देश बन गया है जिसने तीसरी बार (1970, 1986 और 2026) फीफा वर्ल्ड कप की मेजबानी की है।

बिशाल पाठक

पुस्तकालय में डिजिटल युग: एक नई क्रांति

पुस्तकालय सदैव ज्ञान, शिक्षा और अनुसंधान का प्रमुख केंद्र रहा है। एक समय था जब पुस्तकालय का अर्थ केवल पुस्तकों की अलमारियाँ, पन्नों की सोंधी महक और शांत वातावरण तक सीमित था। पाठकों को आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए घंटों तक पुस्तकों और संदर्भ सामग्री की खोज करनी पड़ती थी। किंतु सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने पुस्तकालयों के स्वरूप और कार्यप्रणाली में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। आज ज्ञान केवल मुद्रित पुस्तकों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि कंप्यूटर, लैपटॉप और स्मार्टफोन के माध्यम से कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाता है। डिजिटल युग ने पुस्तकालय को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में लाकर ज्ञान के प्रसार को नई दिशा दी है।

डिजिटल पुस्तकालयों ने अध्ययन और शोध को अधिक सरल, सुविधाजनक और प्रभावी बनाया है। आज हजारों पुस्तकें, ई-बुक्स, ई-जर्नल्स तथा शोध-पत्र एक छोटे से सर्वर या क्लाउड स्टोरेज में सुरक्षित रखे जा सकते हैं। इससे स्थान और समय दोनों की बचत होती है। डिजिटल पुस्तकालय की सबसे बड़ी विशेषता इसकी 24×7 उपलब्धता है। विद्यार्थी, शोधार्थी और कर्मचारी किसी भी समय तथा किसी भी स्थान से आवश्यक अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन कैटलॉग (OPAC), ई-ग्रंथालय तथा डिजिटल डेटाबेस के माध्यम से किसी भी विषय की जानकारी कुछ ही सेकंड में खोजी जा सकती है। इससे शोध कार्य अधिक तेज, सटीक और गुणवत्तापूर्ण बन गया है।

डिजिटल युग ने राजभाषा हिंदी को भी एक नया आयाम प्रदान किया है। आज अनेक सरकारी विभाग, विश्वविद्यालय और पुस्तकालय अपने दस्तावेज, अधिसूचनाएँ, ई-पुस्तकें तथा शोध सामग्री हिंदी में डिजिटल रूप में उपलब्ध करा रहे हैं। हिंदी ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स, डिजिटल शब्दकोश तथा ऑनलाइन पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा के अध्ययन और प्रयोग को और अधिक सुलभ बनाया है। इससे सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन को भी बल मिला है तथा विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अपनी मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण सामग्री आसानी से उपलब्ध हो रही है।

मेरे कार्यस्थल भारतीय प्रबंध संस्थान (आई.आई.एम.) कलकत्ता के बी. सी. रॉय मेमोरियल लाइब्रेरी में भी डिजिटल सेवाओं का व्यापक उपयोग किया जाता है। यहाँ उपयोगकर्ताओं को विश्वस्तरीय ई-जर्नल्स, ई-बुक्स, ऑनलाइन डेटाबेस तथा अन्य डिजिटल संसाधनों तक सहज पहुँच प्रदान की जाती है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से पुस्तकालय की सेवाएँ अधिक प्रभावी, पारदर्शी और उपयोगकर्ता-केंद्रित बन गई हैं, जिससे शिक्षण एवं अनुसंधान कार्यों को नई गति मिली है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल तकनीक ने पुस्तकालयों के स्वरूप को आधुनिक बनाते हुए ज्ञान के प्रसार को अधिक व्यापक और सरल बनाया है। फिर भी मुद्रित पुस्तकों का महत्व आज भी बना हुआ है। डिजिटल संसाधन और पारंपरिक पुस्तकालय एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। इन दोनों के संतुलित समन्वय से ही शिक्षा, अनुसंधान और ज्ञान-विज्ञान का वास्तविक विकास संभव है। निस्संदेह, डिजिटल युग का पुस्तकालय नई पीढ़ी के लिए ज्ञान, नवाचार और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का एक सशक्त आधार बन चुका है।

प्रो. मनीष कुमार ठाकुर

विदा

बहुतों ने रबीन्द्रनाथ ठाकुर की 'काबुलीवाला' कहानी पढ़ी होगी। एक अफ़गानी मेवा बिक्रेता रहमत का स्नेहासिक्त परिचय एक मध्यमवर्गीय बंगाली परिवार में रहनेवाली छोटी बच्ची से हो जाता है। इतना कि रहमत अपने देश वापस जाने से पहले उस बच्ची की विदा बोलने उसके घर जाता है और पाता है कि बच्ची बड़ी हो चुकी है और उसकी शादी की शहनाई घर में गूँज रही है। ऐसे संबंध हम सबों के जीवन में घटित होते हैं। परंतु दैनंदिनी में उलझे रहने के कारण हम उसको शिद्दत से महसूस नहीं कर पाते हैं।

तो कुछ यूँ कि करीब पिछले बीस साल से एक रद्दीवाले मेरे यहाँ आते थे। हर महीने-दो-महीने पर वे हमारे पुराने अखबार ले जाया करते थे। हमारी ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। उनके परिधान से इतना तो स्पष्ट था कि वे मुसलमान थे - ज्यादातर लुंगी-जांघिया पहनते थे तथा उनके कंधों पर बोरियों का एक गट्ठर रहा करता था। मुझे इतना पता है कि वे दक्षिण 24 परगना के एक गाँव से अपने व्यवसाय के क्रम में सप्ताह में दो-तीन दफे कलकत्ता आ जाया करते थे। इधर अचानक पिछले छह-आठ महीनों से उनका आना बंद हो गया है। हर रविवार किसी रद्दीवाले की आवाज सुनकर मैं रद्दी की ओर झाँकता हूँ और उनको न पाकर एक उदास-भरी दृष्टि से अपने बढ़ते हुए पुराने अखबारों में मानो उनको तलाशने की कोशिश करता हूँ।

पता नहीं क्यों वे अखबार अभी भी उनकी बात जोर रहे हैं। अमूमन वे अखबार किसी भी रद्दीवाले को दिये जा सकते हैं। किंतु ऐसा नहीं हो पा रहा है। मुझे लगता है किसी दूसरे के हाथों उन अखबारों को बेच देना उनके प्रति मानो बेवफाई है। शायद वे अगले सप्ताह आ जायें। नहीं तो शायद अगले महीने। परंतु प्रतीक्षा लंबी होती जा रही है और वे अभी भी नदारद हैं।

न वे परिवार के थे न मित्र न सगे-संबंधी। परंतु मेरा मन आज कल आशंकित रहता है - क्या उन्हें कोई गंभीर बीमारी हो गई है, क्या वे कही फिसलकर गिर गये हैं और बिस्तर से निकल नहीं पा रहे हैं। आकुलता और बढ़ जाती है जब मैं सोचने लगता हूँ कि क्या उनसे फिर मिलना न हो पायेगा। क्या वे कहीं परलोक तो नहीं सिधार गये? क्या मुझे इन पुराने अखबारों की खातिर नये किराए से एक नये व्यक्ति की तलाश करनी होगी। हृदय में कचोट है और मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ। सिवाय इसके कि एक शब्द (विदा) बार-बार मेरे मानसपटल पर उभरता है और गायब हो जाता है। जब तब मुझे अशोक वाजपेई की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं और मैं गुनगुनाने लगता हूँ:

आप चले जाओगे

परंतु थोड़ा सा यहीं रह जाओगे

उन पुराने अखबारों की उड़ती धूल में...

महेश पटनायक

मेरा गंगासागर तीर्थयात्रा: आस्था, सौभाग्य और ईश्वरीय कृपा का सफ़र

भारत में मनाए जाने वाले अनगिनत पवित्र त्योहारों में से, मकर संक्रांति लाखों हिंदुओं के दिलों में एक खास जगह रखती है। यह त्योहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का प्रतीक है और इसे भक्ति और दान-पुण्य के कार्यों के लिए सबसे शुभ मौकों में से एक माना जाता है। इस साल, मुझे गंगासागर की पवित्र तीर्थयात्रा करने का सौभाग्य मिला, जहाँ पवित्र गंगा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि यह यात्रा सिर्फ़ एक तीर्थयात्रा से कहीं ज़्यादा कुछ बन जाएगी—यह आस्था, विनम्रता और ईश्वरीय कृपा का एक ऐसा सबक बन जाएगी जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।

दिन की शुरुआत सामान्य से कहीं जल्दी हुई। सुबह लगभग 3:00 बजे, मैं उत्साह और उम्मीदों से भरे दिल के साथ उठा। गरमा-गरम चाय का मज़ा लेने के बाद, मैंने अपनी सुबह की दिनचर्या पूरी की और यात्रा के लिए तैयार हुआ। घर से निकलने से पहले, मैं अपने घर के देवी-देवताओं के सामने खड़ा हुआ और प्रार्थना की, ताकि सुरक्षित और आध्यात्मिक रूप से संतोषजनक तीर्थयात्रा के लिए उनका आशीर्वाद मिल सके।

ठीक सुबह 4:30 बजे, मेरे ड्राइवर, श्री सौमेन, समय पर पहुँचे और मुख्य दरवाज़े पर धीरे से दस्तक देकर अपनी मौजूदगी का संकेत दिया। हमने पंद्रह मिनट बाद अपनी यात्रा शुरू की, क्योंकि त्योहार की वजह से भारी ट्रैफ़िक की उम्मीद थी। हमें सुखद आश्चर्य हुआ कि सड़कें काफ़ी साफ़ थीं, जिससे हम उम्मीद से कहीं पहले, सुबह लगभग 5:00 बजे डायमंड हार्बर स्थित कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट जेटी पहुँच गए।

जेटी पर पहले से ही चहल-पहल थी। पश्चिम बंगाल के अलग-अलग हिस्सों से तीर्थयात्री वहाँ जमा हुए थे, और उन सभी का मकसद एक ही था—गंगा नदी और बंगाल की खाड़ी के संगम पर पवित्र डुबकी लगाना। चूँकि मैं तय समय से काफ़ी पहले पहुँच गया था, इसलिए मैंने श्री सौमेन से कोलकाता वापस जाने और रात 10:00 बजे के आसपास—जब मेरे लौटने की उम्मीद थी—वापस आने के लिए कहा।

लगभग आधे घंटे के इंतज़ार के बाद, ऑस्प्रे ट्रैवल्स की यूनिफ़ॉर्म पहने एक युवती वहाँ पहुँची, हमारी बुकिंग की जाँच की और बहुत अच्छे ढंग से बोर्डिंग की प्रक्रिया को व्यवस्थित किया। सुबह 6:30 बजे, लगभग 140 यात्रियों ने पंद्रह मिनट के भीतर क्रूज़ में प्रवेश किया। मुझे बहुत खुशी हुई कि मुझे आगे की लाइन में एक प्रीमियम सीट मिली। वहाँ पैर फैलाने के लिए काफी जगह थी और सामने बहती नदी का 180-डिग्री का शानदार नज़ारा बिना किसी रुकावट के दिख रहा था। जैसे ही सब लोग अपनी-अपनी सीटों पर बैठे, पूरे जहाज़ में उत्साह का माहौल बन गया।

ठीक सुबह 7:00 बजे, क्रूज़ धीरे-धीरे जेटी से आगे बढ़ा। जैसे ही यह चलना शुरू हुआ, पूरा जहाज़ "जय माँ गंगे!" के भक्तिपूर्ण जयकारों से गूंज उठा। माहौल तुरंत शांत और आध्यात्मिक रूप से सुखद हो गया। उस पल से प्रेरित होकर, मैंने धीरे-धीरे हनुमान चालीसा का पाठ करना शुरू किया और उसकी लयबद्ध पंक्तियों को क्रूज़ की धीमी चाल के साथ मिला दिया।

सफ़र शुरू होने के लगभग तीस मिनट बाद, ₹20 में चाय परोसी गई, और उसी कीमत पर वेज चॉप और समोसे भी मिल रहे थे। मैंने पहले से ही नाश्ता बुक किया हुआ था, इसलिए मुझे खाने में मटर-सुती कचौड़ी के चार पीस, आलू दम, एक वेज चॉप, एक रसगुल्ला और एक संदेश मिला। हालांकि खाना ठंडा हो गया था, लेकिन सुबह की ताज़गी और मेरी भूख ने इसे बहुत मज़ेदार बना दिया।

क्रूज़ काचुबेरिया की ओर बढ़ता रहा, एक तरफ़ नामखाना और काकद्वीप और दूसरी तरफ़ घोरामारा द्वीप को पार करते हुए। मछली पकड़ने वाली नावें चमकते पानी पर तैर रही थीं, जबकि घने मैंग्रोव के नज़ारे ने अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता का दृश्य बना दिया था।

सुबह लगभग 10:00 बजे, हम रेगुलर टर्मिनल के बजाय काचुबेरिया में LCD जेटी पहुँचे। जेटी के बाहर, बसें प्रति यात्री ₹35 ले रही थीं, जबकि प्रीपेड टैक्सी वाले ₹800 माँग रहे थे। किस्मत से, मुझे पाँच साथी तीर्थयात्रियों के साथ एक शेयर्ड टैक्सी मिल गई।

सागर द्वीप के खूबसूरत गाँवों से गुज़रते हुए एक घंटे के सफ़र के दौरान, मेरी मुलाक़ात कोलकाता के उत्तरी बाहरी इलाके से आए डाक विभाग में काम करने वाले तीन युवकों से हुई। हमारी दोस्ताना बातचीत ने जल्द ही अजनबियों को साथियों में बदल दिया, और जब तक हम गंगासागर बस स्टैंड पहुँचे, हमने अपनी तीर्थयात्रा एक साथ जारी रखने का फ़ैसला कर लिया था।

स्नान घाट की ओर जाते हुए, हम मशहूर भारत सेवाश्रम संघ के पास से गुज़रे, जहाँ हज़ारों तीर्थयात्रियों को अच्छी तरह से व्यवस्थित बैरिकेड्स और सुरक्षा जाँच चौकियों से होकर जाने के लिए

गाइड किया जा रहा था। हालाँकि, जल्द ही हमें एक अप्रत्याशित समस्या का सामना करना पड़ा। अपना सामान, खासकर मोबाइल फ़ोन रखने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं थी। थोड़ी बातचीत के बाद, हमने बारी-बारी से स्नान करने का फ़ैसला किया, जबकि बाकी लोग सबके बैग की रखवाली करते रहे।

गंगा और बंगाल की खाड़ी के पवित्र संगम पर खड़े होना एक बहुत ही भावुक पल था। हल्की लहरें किनारे को छू रही थीं, जबकि विशाल नदी द्वारा लाई गई गाद से भरा मटमैला पानी हमें प्रकृति की शाश्वत लय की याद दिला रहा था। पश्चिम बंगाल सरकार ने सोच-समझकर पानी में सुरक्षित रूप से जाने के लिए रेत के रास्ते बनाए थे।

जैसे ही मैंने पवित्र जल में डुबकी लगाई, शांति का एक अकल्पनीय अहसास मुझ पर छा गया। यह केवल एक रस्मी स्नान नहीं था; ऐसा लगा जैसे चिंता, अहंकार और सांसारिक बोझ धुल गए हों, और पीछे केवल कृतज्ञता और आंतरिक शांति रह गई हो। पवित्र डुबकी लगाने के बाद, मैं दर्शन के लिए कपिल मुनि आश्रम की ओर बढ़ा। हालाँकि लाइन लंबी थी, वहाँ की व्यवस्था बहुत बढ़िया थी। बहुत ज़्यादा भीड़ के कारण गर्भगृह में प्रवेश पर रोक थी, लेकिन श्रद्धालु मंदिर के बाहर से ही कपिल मुनि, राजा सागर और माँ गंगा के साफ़ दर्शन कर सकते थे। पूजा-सामग्री चढ़ाने के लिए एक खास जगह बनाई गई थी, जिससे व्यवस्था और श्रद्धा दोनों बनी रही।

मंदिर के बाहर, अस्थायी कैंपों की कतारों में नागा साधु रह रहे थे, जिनकी सादगी भरी जीवनशैली ने हज़ारों लोगों को आकर्षित किया। मेले का विशाल मैदान धार्मिक सामान, हस्तशिल्प, खिलौने, घरेलू सामान और स्थानीय व्यंजनों के स्टॉलों से भरा-पूरा था। पूरे माहौल में आध्यात्मिकता और पारंपरिक ग्रामीण मेले का रंगीन उत्साह खूबसूरती से घुल-मिल गया था।

तब तक, मुझे भूख लगने लगी थी। मैंने पास के किसी रेस्टोरेंट में लंच करने के बारे में सोचा, लेकिन साफ़-सफ़ाई की खराब हालत देखकर अपना इरादा बदल दिया। इसके बजाय, मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि कई चैरिटेबल संस्थाएँ बिना किसी जाति, धर्म या सामाजिक स्तर के भेदभाव के हज़ारों तीर्थयात्रियों को मुफ़्त भोजन (लंगर) खिला रही थीं। उनकी निस्वार्थ सेवा भारतीय आध्यात्मिकता की असली भावना को दर्शाती थी।

दोपहर ढलने और शाम होने के साथ ही, वापसी की यात्रा शुरू करने का समय हो गया। बस स्टैंड तक जाने वाली सड़क पर इतनी भीड़ थी कि थोड़ी सी दूरी तय करने में ही लगभग दो घंटे लग गए। आखिरकार, मैं कचुबेरिया जाने वाली एक खचाखच भरी बस में चढ़ने में कामयाब हो गया।

शुरू में तो बस ठीक-ठाक चल रही थी, लेकिन अचानक उसका रास्ता बदल दिया गया और उसे कचुबेरिया से कई किलोमीटर पहले एक बड़े खुले मैदान में रोक दिया गया। वहाँ सैकड़ों बसें खड़ी थीं, और किसी को पता नहीं था कि आगे कब बढ़ पाएँगे।

मेरी चिंता तेज़ी से बढ़ने लगी। मेरी पहले से बुक की गई क्रूज़ शाम 7:00 बजे निकलने वाली थी, और घड़ी में शाम के 6:00 बजने वाले थे।

मैं एक ट्रैफ़िक पुलिसकर्मी के पास गया और अपनी मुश्किल बताई। उसने बहुत धैर्य के साथ मुझे बताया कि कम ज्वार (low tide) के कारण फ़ेरी सेवाएँ कुछ समय के लिए रोक दी गई हैं। इसलिए, और ज़्यादा भीड़ से बचने के लिए बसों को जेटी तक जाने से रोका जा रहा था।

यह महसूस करते हुए कि मेरी क्रूज़ छूटने वाली है, मैंने टैक्सी ढूँढ़ने में उसकी मदद के लिए बहुत गुज़ारिश की। उसकी पूरी कोशिश के बावजूद, कोई टैक्सी नहीं मिल पाई। मुझे पता था कि अगर मेरी क्रूज़ छूट गई, तो भीड़-भाड़ वाली पब्लिक लॉन्च या स्टीमर में चढ़ना लगभग नामुमकिन होगा।

ठीक उसी पल, जब उम्मीद खत्म हो रही थी, कुछ कमाल हुआ।

ट्रैफ़िक पुलिसकर्मी ने मोटरसाइकिल चला रहे एक स्थानीय युवक को बुलाया और उससे मुझे जेटी तक पहुँचाने में मदद करने को कहा। बिना किसी हिचकिचाहट के, वह युवक मान गया। गाँव की तंग सड़कों और भारी ट्रैफ़िक के बीच कुशलता से गाड़ी चलाते हुए, उसने मुझे शाम 6:30 बजे तक कचुबेरिया जेटी पर सुरक्षित पहुँचा दिया।

कुछ ही मिनटों में, मैं अपनी पहले से बुक की हुई क्रूज़ पर सवार हो गया; मन में राहत और शुक्रगुज़ारी का भाव था।

नदी के रास्ते वापसी का सफ़र शांत और सोचने-विचारने वाला था। रात 10:00 बजे मैं डायमंड हार्बर वापस पहुँचा, जहाँ सौमेन पहले से ही कार लेकर सब्र के साथ मेरा इंतज़ार कर रहे थे। लगभग एक घंटे बाद, मैं सुरक्षित घर पहुँच गया।

जब मैंने दिन की अनोखी घटनाओं के बारे में सोचा, तो मेरे मन में एक सवाल उठा।

वह दयालु ट्रैफ़िक पुलिसवाला कौन था?

वह निस्वार्थ युवा मोटरसाइकिल सवार कौन था जो ठीक उसी समय सामने आया जब मुझे मदद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी?

क्या वे बस अपनी ड्यूटी निभा रहे दयालु लोग थे, या वे एक बेबस तीर्थयात्री की मदद के लिए ईश्वर द्वारा चुने गए ज़रिया थे?

शायद मैं यह कभी न जान पाऊँ।

लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि गंगासागर की मेरी यात्रा सिर्फ़ एक तीर्थयात्रा से कहीं बढ़कर थी। यह एक गहरी सीख थी कि जब हमारी नीयत नेक होती है और हमारा विश्वास अटूट होता है, तो ईश्वर की कृपा अक्सर आम लोगों के ज़रिए अनोखे तरीकों से हम तक पहुँचती है।

उस रात जब मैं घर पहुँचा—शरीर से थका हुआ लेकिन मन से तरोताज़ा—तो मुझे एहसास हुआ कि तीर्थयात्रा का मतलब सिर्फ़ किसी पवित्र जगह पर पहुँचना नहीं है। इसका मतलब है रास्ते के हर कदम पर ईश्वर के उस अदृश्य हाथ को पहचानना जो हमें राह दिखाता है।

गंगासागर में पवित्र डुबकी ने मेरे शरीर को तो शुद्ध किया, लेकिन एक ट्रैफ़िक पुलिसवाले और एक अनजान युवा मोटरसाइकिल सवार की अप्रत्याशित दयालुता ने मेरे विश्वास को और मज़बूत किया।

मैं इस पक्के यकीन के साथ घर लौटा जो आज भी मेरे साथ है:

ईश्वर हमेशा हमारे हालात बदलकर चमत्कार नहीं करते। अक्सर, वे सही समय पर सही लोगों को भेजकर चमत्कार करते हैं।

मैत्रेयी बनर्जी

भावनात्मक सेहत

एक चमकदार धूप वाली सुबह थी, जो दिल को खुश करने और बेफिक्र होकर, सारी नेगेटिविटी को पीछे छोड़कर खुशी-खुशी आगे बढ़ने के लिए एकदम सही थी। लेकिन यह सोमवार की सुबह भी थी; पूरे हफ़्ते के रोज़मर्रा के काम लगभग शुरू होने के लिए तैयार थे, बस सीटी बजने का इंतज़ार था। शीना, जो एक जवान बच्चे की माँ थीं, इस खूबसूरत, चमकदार सुबह में उठीं, दिन की पॉज़िटिविटी को महसूस किया और दिन का सामना करने के लिए तैयार हो गईं। वह कोई कॉर्पोरेट बॉस नहीं थीं, लेकिन वह इस दुनिया की बारीकियों को, इंसानी अनुभवों में छिपे अर्थ, भावना या मूल्य की सूक्ष्म परतों को समझती थीं। वह दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाली महिला थीं, लेकिन यह भी जानती थीं कि बिना पूछे दूसरों के मामलों में दखल नहीं देना चाहिए। इसलिए, उत्साह से भरे इस खूबसूरत धूप वाले दिन, शीना अपने ऑफ़िस के लिए निकल पड़ीं। शीना के सभी के साथ अच्छे संबंध थे, हालाँकि कुछ लोग ऐसे भी थे जिनसे दूर रहना ही बेहतर था। उन्होंने अपने सहकर्मियों के स्वभाव और तौर-तरीकों को काफी हद तक समझ लिया था। वह अच्छी तरह जानती थीं कि ऑफ़िस के माहौल में ऐसे अच्छे संबंध कैसे बनाए रखे जाते हैं। शीना अपनी नौकरी से खुश थीं, एक आरामदायक और सुकून भरी नौकरी, जिसे वह सच में बहुत पसंद करती थीं।

हाल ही में शीना की कंपनी में एक युवा महिला शामिल हुई थी, जो उन्हें ईमानदार, मेहनती और खुशमिजाज लगी। जैसे-जैसे शीना उसे बेहतर जानने लगीं, उन्हें पता चला कि यह युवा कर्मचारी थोड़ी मूडी थी। शीना का स्वभाव ऐसा था कि उन्होंने इसे ठीक ही माना—आखिर यह उसकी ज़िंदगी है। हो सकता है कि वह किसी चीज़ से गुज़र रही हो, इसलिए ऐसा व्यवहार कर रही हो।

तो, एक दिन जब ऑफिस का काम चल रहा था, तो कुछ अजीब हुआ। शीना को समझ नहीं आया कि क्या हुआ, लेकिन उस बात ने उसे अंदर तक हिला दिया, क्योंकि वह ऐसी इंसान नहीं है जो उन चीज़ों के बारे में सोचे जिन्हें टाला जा सकता है। कभी-कभी उसे ऐसी बातें सुनने को मिलती थीं जो कानों को अच्छी नहीं लगती थीं। लेकिन फिर, ज़िंदगी में और भी बहुत सी ज़रूरी चीज़ें होती हैं, इसलिए ऐसी छोटी-मोटी बातों की परवाह नहीं करनी चाहिए।

तो, एक दिन जब वे एक कमरे में मीटिंग कर रहे थे, तो यह युवा महिला कुर्सी पर बैठने की कोशिश कर रही थी। वह एक बार में ठीक से बैठ नहीं पा रही थी क्योंकि कुर्सी की ऊंचाई उसकी ज़रूरत से ज़्यादा थी। इसलिए, फिक्र करते हुए शीना ने उस महिला से कहा, "आपको स्टूल का इस्तेमाल करना चाहिए, आप कुर्सी को नीचे क्यों नहीं कर लेतीं? इससे आपके लिए आसानी होगी।" और मन ही मन, वह अपनी बेटी के बारे में सोच रही थी कि हाँ, कुर्सी की ऊंचाई कम की जा सकती है ताकि वह बिना संघर्ष किए उस पर बैठ सके। अचानक, उस महिला ने सख़्त लहजे में शीना को जवाब दिया, "जैसे आपको कमरे में रोशनी की ज़रूरत होती है।"

पहले तो शीना को बात समझ नहीं आई, लेकिन कुछ ही पलों में उसे समझ आ गया कि वह क्या कहना चाह रही थी। तो, उस बात पर ज़्यादा सोचे बिना, उसने फिर से उस महिला से कहा कि आपको परेशानी हो रही है, तो आप कुर्सी को नीचे क्यों नहीं कर लेतीं? ऊंचाई कम क्यों नहीं कर लेतीं?" और इस बार उस महिला ने साफ़-साफ़ कहा, "जैसे किसी को कमरे में आपको ढूंढने के लिए रोशनी की ज़रूरत होती है।"

शीना को यह बात चुभ गई—इसलिए नहीं कि किसी ने कहा कि वह दूध जैसी गोरी नहीं है (क्योंकि शीना ने कभी इसे अपनी सफलता में रुकावट नहीं माना), बल्कि इसलिए क्योंकि शीना के मन में कोई बुरी भावना नहीं थी। उसने बस उस महिला की समस्या का समाधान सुझाया था। और वह महिला उसे जवाब दे रही थी—जबकि एक तो वह जूनियर थी, और दूसरी बात, वह टिप्पणी बेमतलब थी क्योंकि शीना का रंग ऐसा भी नहीं था कि उसे कमरे में ढूंढने के लिए टॉर्च की ज़रूरत पड़े। हो सकता है कि वह उस युवा महिला जितनी गोरी न हो, लेकिन वह लंबी और काफी अच्छी दिखने वाली थी और उसे पसंद करने वाले भी काफी लोग थे। वैसे, वह महिला भी औसत कद-काठी की ही थी। तो, हालांकि उस तीखी टिप्पणी ने शीना को आहत किया, लेकिन उसने खुद को संभाला और मीटिंग जारी रखी। लेकिन वह बात उसके कानों में गूंजती रही। अपने इतने सालों के करियर में उसने बहुत सी बातें सुनी होंगी, लेकिन कभी भी इतनी करीबी जगह से—और वह भी किसी जूनियर से—इस तरह की नस्लभेदी टिप्पणी नहीं सुनी थी। शीना पद और उम्र,

दोनों में उस महिला से बड़ी थी। चूंकि शीना की बेटी का कद भी औसत है, इसलिए उसने सोचा कि वह उससे इस बारे में बात करे ताकि उसका नज़रिया और सोच जान सके, जो शायद उस युवा महिला के साथ भी उस खास स्थिति में कुछ ऐसा ही हो रहा था। उसने तुरंत अपनी बेटी को फ़ोन करके इस अजीब घटना के बारे में बताया।

अपने इतने सालों के करियर में उसने बहुत सी बातें सुनी होंगी, लेकिन कभी भी इतनी करीबी जगह से—और वह भी किसी जूनियर से—इस तरह की नस्लभेदी टिप्पणी नहीं सुनी थी। शीना पद और उम्र, दोनों में उस महिला से बड़ी थी। चूंकि शीना की बेटी का कद। भी औसत है, इसलिए उसने सोचा कि वह उससे इस बारे में बात करे ताकि उसका नज़रिया और सोच जान सके, जो शायद उस युवा महिला के साथ भी उस खास स्थिति में कुछ ऐसा ही हो रहा था। उसने तुरंत अपनी बेटी को फ़ोन करके इस अजीब घटना के बारे में बताया।

उसकी बेटी, जैसा कि युवा लोग अक्सर होते हैं, गुस्से में आ गई और बोली, "कोई आपसे ऐसी बात कैसे कह सकता है? आपने कुछ कहा क्यों नहीं? आप हमेशा चुप रहती हैं और लोगों को अपना फ़ायदा उठाने देती हैं।" उसका तुरंत आया रिएक्शन सामान्य और सही था, लेकिन शीना बस यह समझना चाहती थी कि आखिर किस बात ने सामने वाली महिला को ऐसी टिप्पणी करने के लिए उकसाया।

फिर बेटी के साथ घटना पर चर्चा करते हुए, उसने बताया कि वह महिला अकेली रहती है और शायद इसी वजह से उसे अपनी स्थिति को लेकर कुछ असुरक्षा महसूस होती हो। लेकिन फिर भी, शीना को वह महिला हमेशा बहुत सलीके वाली लगती थी—उसके बात करने का तरीका, खुद को संभालने का अंदाज़, खुद को पेश करने का तरीका और वह अपने काम में भी बहुत अच्छी थी। इसलिए, उसे पूरा भरोसा होना चाहिए था कि हाँ, कद-काठी, रंग-रूप या नैन-नक्श से कोई फ़र्क नहीं पड़ता; मायने यह रखता है कि आप अपना काम कैसे करती हैं और उसी के आधार पर लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं या कैसी राय बनाते हैं। अपनी छवि या सोच शारीरिक बनावट पर आधारित नहीं होनी चाहिए। यह इस बात पर आधारित होनी चाहिए कि आप काम कैसे करती हैं, खुद को कैसे पेश करती हैं और किसी स्थिति को कैसे संभालती हैं।

शीना को गलत समझने पर गुस्सा होने के बजाय, शीना को उस महिला के लिए बुरा लगा, लेकिन वह बात उसके कानों में गूंजती रही और वह उसे भूल नहीं पाई। शीना खुद को समझाती रही कि इंसान को हालात को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि ऐसी स्थितियां किसी के बस में नहीं होतीं। किसी को भी अपनी कमज़ोरियां दूसरों के सामने ज़ाहिर नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे बुरी नीयत वाली बातें सुनने को मिल सकती हैं।

फिर पीछे मुड़कर सोचने पर उसे लगा कि शायद शीना को यह सोचना चाहिए था कि हां, हो सकता है कि स्टूल वाली बात से उसे इतनी ज़्यादा तकलीफ़ हुई हो कि तुरंत वैसी प्रतिक्रिया आ गई। तो, उसे लगा कि शायद वही वजह रही होगी, लेकिन कोई इतनी हद तक जा सकता है, यह वाकई अजीब और बहुत असामान्य बात है। इसलिए, शीना पूरी तरह हैरान रह गई।

वह इस घटना को बहुत बड़ा मुद्दा बना सकती थी, लेकिन उसने उसे अनदेखा कर दिया। यह बिना किसी बुरी नीयत के हुई आम बातचीत थी, लेकिन अगर किसी को ऐसी बात सुनने को मिले, तो यह अच्छी बात नहीं है। इसलिए, शीना बिल्कुल नहीं चाहेगी कि उसे किसी से भी—चाहे वह सीनियर हो या जूनियर—ऐसी तीखी बातें सुनने को मिलें। लेकिन वह जानती थी कि उस युवा महिला से दूर रहना ही बेहतर है, क्योंकि हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ऐसी बातें होना बहुत आम बात है।

लेकिन शीना के मन को कभी शांति नहीं मिली। वह सोचती रही कि इस पीढ़ी के लिए अपने मूल्य को समझना बहुत ज़रूरी है। उन्हें खुद का सम्मान करना सीखना होगा, खुद को प्राथमिकता देनी होगी, और जीवन में आगे बढ़ने के लिए खुद के सबसे अच्छे दोस्त बनना होगा। इस युवा पीढ़ी को अभी बहुत कुछ करना है। उन्हें दूसरों को अपनी कमज़ोरियों का फ़ायदा नहीं उठाने देना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ऐसे फ़ायदे उठाने वाले लोगों से बचने के लिए आप इस तरह की कटु टिप्पणियाँ करें। यह बहुत ही अपमानजनक था।

लेकिन फिर भी, शीना, शीना होने के नाते, आज तक उस युवती को यह छूट देती है कि हाँ, हो सकता है कि वह अपने विचारों को नियंत्रित न कर पाई हो। हो सकता है कि उसके आस-पास ऐसे लोग न हों जो उसे यह मार्गदर्शन दे सकें कि शारीरिक सुंदरता कुछ भी नहीं है। यह कुछ भी नहीं है, और खासकर इसलिए क्योंकि वह परिपूर्ण थी।

इसलिए, यह दुखद था कि रिश्ते का यह अंत इस तरह हुआ। शीना के लिए यह एक सबक ज़रूर था, क्योंकि उसकी बेटी ने कहा कि हर किसी की माँ मत बनो। याद रखो, तुम्हारा सिर्फ़ एक बच्चा है और उसी की माँ बनो।

लेकिन गंभीरता से कहें तो, यह बहुत ज़रूरी है कि युवा पीढ़ी, बल्कि हर कोई, मानसिक रूप से मज़बूत हो। हमें चीज़ों पर चर्चा करनी चाहिए। हमें उन गहरे दर्दों का सामना करना चाहिए जो दिल टूटने का कारण बन सकते हैं।

इसलिए, शीना के लिए यह एक दुखद सबक था। एक युवा बेटी की माँ होने के नाते, उसने अपनी बेटी से कहा कि वह कभी भी असुरक्षित या खुद को कमतर न समझे और उसे अपने किसी भी विचार, किसी भी परेशानी, किसी भी ऐसी स्थिति के बारे में बात करनी चाहिए जो उसकी मानसिक शांति को भंग कर सकती है। मानसिक स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में, यह बहुत सी चीजों का आधार है, अच्छी बातें, बुरी बातें और बहुत-बहुत बुरी बातें। हो सकता है कि इस महिला के पास बात करने के लिए कोई न हो। लेकिन शीना हमेशा अपनी बेटी के साथ रहेगी।

लोगों को एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए, एक-दूसरे का साथ देना चाहिए, बात करने के लिए या बस सुनने के लिए मौजूद रहना चाहिए। हो सकता है कि किसी समस्या के सैकड़ों समाधान न हों। लेकिन कम से कम एक व्यक्ति तो ऐसा ज़रूर होना चाहिए जिसके पास जाकर बात की जा सके और जो मन में चल रहे हज़ारों-लाखों विचारों को सुन सके, ताकि भावनात्मक और मानसिक सेहत, मानसिक संतुलन और स्वस्थ मन को बनाए रखने में मदद मिल सके।

स्वरूपा गुप्ता

भाई की शादी की कुछ खट्टी मीठी यादें

नवंबर का महीना अर्थात हिंदी का कार्तिक माह। हम बिहारियों का बहुत ही खास महीना जब पावन पर्व छठ मनाया जाता है। यह पर्व दिवाली के बाद चौथे दिन से मनाया जाता है। सूर्य उपासना का यह लोक पर्व कई क्षेत्रों में मशहूर है। यह पर्व खत्म होते ही कुछ ही दिनों में छोटी मौसी जी जो प्रयागराज में स्थित है उनका कॉल आया कि उनके बेटे जो विदेश में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है उसकी शादी तय हो गई है। शादी डी गौर सरोवर प्रीमियर (ग्रेटर नोएडा वेस्ट गौर सिटी- १) फरवरी के ८ तारीख रविवार को आयोजित किया गया है। उसके पहले ६ तारीख शुक्रवार को मेहंदी, ७ तारीख को सुबह हल्दी और शाम को संगीत का भी आयोजन है। ट्रेन की टिकट दो महीने पहले से भरनी शुरू हो जाती है इसलिए मौसी ने पहले से हमें आगाह कर दिया ताकि हम कोई बहाना ना बन सके और शादी में शामिल हो सके। शादी का न्योता मिलते ही मेरे बच्चों में घूमने जाने का उत्साह देखने को मिला। दिल्ली एक अनजान शहर इसके बारे में सुना था अब मौका मिल रहा है घूम कर आने का। शादी की शादी घूमने का घूमना।

नोएडा उत्तर प्रदेश का एक आधुनिक शहर है जो दिल्ली एनसीआर में स्थित है और खरीदारी, मनोरंजन, वह प्रकृति के लिए प्रसिद्ध है। यहां घूमने के लिए नवंबर से मार्च का समय सबसे अच्छा है। ग्रेटर नोएडा स्थित डी गौर सरोवर प्रीमियर एक प्रीमियम होटल माना जाता है जो आधुनिक सुविधाओं के साथ आरामदायक प्रवास प्रदान करता है। यहाँ पहुंचने के लिए दिल्ली एनसीआर से मेट्रो या टैक्सी ले सकते हैं। सबसे करीबी मेट्रो स्टेशन नोएडा सेक्टर ५२ (नीला लाइन) और नोएडा सेक्टर ५१ (एक्वा लाइन) है। गाज़ियाबाद रेलवे स्टेशन से लगभग ९ किलोमीटर की दूरी पर है। नजदीक की हवाई अड्डा- हिंडन हवाई अड्डा है जो लगभग १३ से १४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वैसे मौसी ने प्रयागराज से जाने के लिए ५ तारीख का आयोजन वंदे भारत ट्रेन से किया था। इसलिए हमें भी प्रस्ताव दे रही थी उससे जाने के लिए। ५ को ट्रेन मतलब हमें कोलकाता से तीन को रवाना होना होगा तभी चार को प्रयागराज पहुंच सकेंगे फिर पांच को वहां से दिल्ली के लिए रवाना हो सकेंगे। ऑफिस से लंबी छुट्टी और बच्चों के विद्यालय में भी लंबा छुट्टी यह बहुत ही नुकसान हो सकता है क्योंकि फरवरी एक ऐसा महीना है जब बच्चों के लिए विद्यालयों में वार्षिक परीक्षा शुरू हो जाती है। इसलिए सीधे दिल्ली पहुंचने के लिए मैं भी ट्रेन की टिकट ६ फरवरी २०२६ राजधानी एक्सप्रेस से करवाई। बच्चे तो बहुत खुश और उस पाल का इंतजार कर रहे थे कि कब वह दिन आएगा और वह भी मजा कर पाए। मैं अपने कार्यालय में भी एक महीने पहले तीन दिन की छुट्टी की आवेदन जमा कर दी। मेरी छुट्टी की मंजूरी हो गई और इधर बच्चों का वार्षिक परीक्षा मार्च में होगा इसकी सूचना भी मिल गई थी। इसलिए शादी में जाना हम लोगों के लिए निश्चित हो गया। ट्रेन शाम को ५:०० बजे था इसलिए शुक्रवार ६ फरवरी को कार्यालय से जल्दी निकलने के लिए हमारे वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी दूरभाष से अनुमति ले ली थी।

अब आती है सामान की पैकिंग। मैं और मेरी बड़ी बेटी मिलकर पैकिंग से पहले जरूरी सामान की सूची बनाएं। शादी और पालन पर कार्यक्रम के लिए ड्रेस कोड था इसलिए उसके अनुसार कपड़ों और गहनों का चयन भी किया गया। कपड़ों को रोल करने से सूटकेस में जगह बचती है इसलिए मेरी बेटी की मदद से हम लोगों ने अपना बैक पैक कर लिया। जरूरी सामान जैसे दवाइयां, चार्जर, पैसे, पहचान पत्र अपने हैंडबैग में रखें। ५ तारीख को अंतिम पैकिंग कर लिए ताकि कार्यालय से लौटकर और बच्चे स्कूल से आकर हमें कोई परेशानी ना हो।

दिन ६ फरवरी २०२६, आखिर वह दिन आ ही गया। बच्चें बहुत ही उत्साह घूमने जाने के लिए। मैं कार्यालय से जल्दी निकली, बड़ी बेटी को स्कूल से ली और घर के लिए रवाना हो गई। कुछ ही दूर पहुँची थी कि मेरा स्कूटी मानो नाचने लगा। पता चला पिछला चक्का पंचर हो गया। समय १ बजकर ०२ मिनट, मैं बहुत घबरा गई। घर कब, कैसे पहुंचूंगी, कैसे स्टेशन के लिए

समय पर निकल पाऊंगी। भगवान की कृपा से कुछ ही दूरी पर चक्का बनाने वाला मौजूद था। हम मां बेटी स्कूटी को धक्का देते हुए मिस्त्री पास पहुंचे और उसे जल्दी बनाने को कहा। समय १ बजकर १५ मिनट, घड़ी के कांटे मानो दौड़ रहे हैं। मिस्त्री चक्का की मरम्मत किए जा रहा था। समय १ बजकर ३० मिनट, मिस्त्री का मरम्मत करना खत्म हुआ। पैसे देकर जल्दी से घर की ओर बढ़े। समय २ बजकर ०५ मिनट, हम घर पहुंचकर ही स्टेशन जाने के लिए तैयार होने लगे। हमें स्टेशन शाम ४ बजकर ३० मिनट तक किसी भी हाल में पहुंचना था। स्टेशन जाने के लिए लगभग १ घंटा १५ मिनट के करीब लगता है परंतु रास्ता में गाड़ी की धीमी गति या कोई जाम मिल जाए तो फिर और भी समय लग सकता है। तैयार होते ही हम अपना लगेज बैग बाहर निकाले और समय नष्ट न करते हुए ओला कैब बुक कर दिए। समय २ बचकर ५५ मिनट दोपहर का समय था। कुछ विद्यालय का छुट्टी का समय भी रहता है लेकिन गाड़ी चालक बहुत अच्छे थे और उन्होंने वह रास्ता चुना जहां ज्यादा भीड़ न हो। समय ४ बजकर १२ मिनट, हम स्टेशन के बाहर पहुंच गए। गाड़ी वाले को पैसे दिए और स्टेशन के तरफ बढ़े। स्टेशन पहुंचते ही हमें पता चला की गाड़ी आठ नंबर प्लेटफार्म से रवाना होगी। थोड़ी देर इंतजार के बाद ट्रेन प्लेटफार्म पर आया और हम अपने निर्धारित सीट पर बैठ गए। ट्रेन अपनी सही समय से ४ बजकर ५० मिनट में दिल्ली के लिए रवाना हो गई। ट्रेन का दिल्ली पहुंचने का समय सुबह १० बजे था जबकि अपने समय से आगे ही चल रहा था। सुबह होते ही बच्चे बड़े उतावले हो रहे थे कि कब हम पहुंचेंगे। राजधानी गिनी चुनी स्टेशन पर ही रुकती है इसलिए हमें दिल्ली ही उतरना पड़ेगा जबकि गाज़ियाबाद स्टेशन से बहुत ही नजदीक हमारा होटल स्थित था। बच्चे अपना सामान जो भी निकाले थे सब ९ बजे तक नाश्ता करने के बाद समेत लिए। समय ९ बजकर २० मिनट, ट्रेन मादीपट्ट स्टेशन से गुजरी जो कि समय से २० मिनट आगे ही था। ट्रेन की गति धीमी हो गई और धीमी गति से चल रही थी।अचानक ट्रेन रुक भी गई। समय ९ बजकर ३० मिनट, बाहर झांका तो मेरी बड़ी बेटी देखकर बोली हम गाज़ियाबाद स्टेशन के करीब है। हम दोनों एक दूसरे के तरफ देखें , जल्दी से लगेज बैग उठाएं और उतरने की कोशिश किए। मैं अपनी छोटी बेटी को लेकर जल्दी से उतरी, फिर लगेज बैग उतारे और मेरी बड़ी बेटी भी उतर गई। वह कोई प्लेटफार्म नहीं था इसलिए उतरने में थोड़ी दिक्कत हुई लेकिन हम उतरने में सफल थे। और भी बहुत यात्री को देखा जो वहां उतरे। जल्दी से बच्चों को पटरी से लेकर किनारा पहुंची और थोड़ी ही दूरी में स्टेशन नजर आ रहा था। इधर ट्रेन भी दिल्ली के लिए चल पड़ी। हम चलते-चलते स्टेशन से होते हुए बाहर की ओर निकले। बाहर निकलते ही ऑटो, प्राइवेट गाड़ियां लगी हुई थी। अनजान शहर, ना रास्ता का पता ना वहां का कोई परिचित। वहां मौजूद चालक पूछ रहे थे कहां जाना है तो मैंने एक चालक को बोला तो बोले ₹३५०लगेगा। मैं उबेर कैब से जांच की तो सिर्फ ₹१२० ही दिखा रहा था। इसलिए मैंने वह बुक कर दिया और १५ मिनट में होटल भी पहुंच गए। मौसा-मौसी हमें देखकर चौंक गए कि हम इतना जल्दी अर्थात १०:१५ तक कैसे पहुंच गए जबकि ट्रेन दिल्ली ही १०:०५ में पहुंचती है। मैंने पूरी घटना बताई तो वह हमें इतना जोखिम लेने को मना किए और बोले बच्चे भी साथ थे, अगर ट्रेन छोड़ देता तो क्या करती। कहना तो सही था लेकिन हमने वह जोखिम उठाया। समय नष्ट न करते हुए मौसा- मौसी ने हमें नाश्ता करने भेज दिया क्योंकि होटल में नाश्ता का समय खत्म हो रहा था। हम जल्दी से नाश्ता करते हुए अपने रूम के तरफ गए और तैयार होने लगे क्योंकि हल्दी का अनुष्ठान प्रारंभ होने वाला था। तैयार होते ही हम कार्यक्रम स्थल पर आ पहुंचे। हल्दी और संगीत का कार्यक्रम भारतीय शादियों का एक खुशनुमा और जीवंत हिस्सा है जो मुख्य शादी से एक दिन पहले सुबह या शाम को होता है। इस रस्म में दूल्हा- दुल्हन को हल्दी का लेप लगाया जाता है और परिवार के साथ मिलकर डांस, गाना, संगीत किया जाता है जो तनाव कम करने और खुशियां बांटने का अवसर है। हल्दी के रस्म के साथ नाच गाना भी हुआ। फूलों से वर वधु को आशीर्वाद भी दिया गया। सभी अपनी अपनी तस्वीरें उठाने में भी व्यस्त थे। यह कार्यक्रम होते-होते तीन बज चुके थे, दोपहर का खाना भी शुरू हो गया। तरह-तरह के व्यंजनों के साथ तरह-तरह के ड्रिंक्स, आइसक्रीम का भी इंतजाम था। हल्दी की रस्में खत्म होते ना होते संगीत की तैयारी शुरू हुई।

भाई की शादी कुछ हटके होना तो बनता है। हम बहनें संगीत में पेश करने वाले नित्य का कमरे में पूर्वाभ्यास करने लगे और कार्यक्रम का समय होते ही तैयार होकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। संगीत के रंग में सब ऐसे दुबे की कब भोर के २:०० गए पता ही नहीं चला। सभी बहुत थक चुके थे परंतु किसी ने अपना थकावट जाहिर नहीं किया। सभी शादी के रंग में डूबे हुए थे। रात बहुत हो गई। सभी अब अपने-अपने कमरे में आराम करने चले गए। सुबह सभी नाश्ते के कक्ष में मिले। कुछ अभी भी सोए हुए थे।

शाम को शादी थी तो सारा दिन खाली था। मैं नाश्ता करने के बाद वक्त ज़ाया ना करते हुए अपने बच्चों के साथ अगल-बगल घूमने को निकल पड़ी। बाहर निकली तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था की जाए तो जाए कहां। स्थानीय लोग से पूछा तो पता चला अक्षरधाम मंदिर निकट में है जो घूम सकते हैं। फिर भी वह ३० से ४० किलोमीटर की दूरी पर थी। वहां के स्थानीय लोग के अनुसार वहां से ऑटो पकड़कर निकट मेट्रो स्टेशन सेक्टर 52 नोएडा आ पहुंची। ऑटो में बैठे-बैठे ही मेट्रो का टिकट जो की ऑनलाइन उपलब्ध है मैंने काट लिया ताकि वहां स्टेशन पर लाइन ना देना पड़े। सुरक्षा जांच के बाद हम ब्लू लाइन के तरफ बड़े और अक्षरधाम जाने वाला मेट्रो पकड़ लिए। करीब २५ से ३० मिनट के समय में हम अक्षरधाम मेट्रो पहुंच गए। मेट्रो से निकलते ही कुछ रिक्शा खड़े थे जो अक्षरधाम मंदिर ले जाने के लिए हांक रहे थे। ₹१० प्रति सवारी। हम उठ गए। २ मिनट भी रिक्शा नहीं चला कि बोला आ गए। हम तो अवाक हो गए, कैसे बेवकूफ बन गए। पैदल चलने से ५ से ७ मिनट में मंदिर पहुंचा जा सकता था।

नई दिल्ली का अक्षरधाम मंदिर एक आधुनिक स्थापत्य चमत्कार है जो यमुना के किनारे स्थित है। २००५ में निर्मित यह भव्य मंदिर १०० एकड़ में फैला है जो स्वामीनारायण जी को समर्पित है। इसमें गुलाबी बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर की नक्काशी, २००० से भी ज्यादा मूर्तियां, एक नौका विहार और संगीत फवारा शो प्रमुख आकर्षण है। यहां ११ फीट ऊंची सोने की मूर्ति श्री भगवान स्वामी नारायण का है। यह प्राचीन भारतीय संस्कृति

परंपराओं और आध्यात्मिकता को दर्शाता है जिसमें बना स्टील या लोहे के उपयोग के नक्काशी दर पत्थर का उपयोग किया गया है। यह मंदिर सुबह ९:३० बजे से शाम ६:३० बजे तक खुली रहती है। मंदिर परिसर में प्रवेश निःशुल्क है लेकिन प्रदर्शनी, बोट राइट और म्यूजिकल फाउंटेन के लिए टिकट आवश्यक है। सुरक्षा कर्म से मोबाइल, कैमरा बैग और इलेक्ट्रॉनिक सामान परिसर के अंदर प्रतिबंधित है। हम भी मंदिर परिसर में प्रवेश किए। बहुत ही कड़ी सुरक्षा जांच के बाद और पैसा के बैग के सिवा सभी काउंटर में जमा कर मुख्य मंदिर के पास जूता जमा कर प्रवेश किए। समय दोपहर २:०० के आसपास मुख्य मंदिर घूमने के बाद हम प्रदर्शनी की ओर बढ़े। बच्चे जिद करने लगे कि उन्हें प्रदर्शनी देखना है इधर किसी को भी बिना बताए हम होटल से बाहर निकले। चिंता हुई लेकिन बच्चों के जिद के कारण मैंने प्रदर्शनी का टिकट कटवाया। यहां तीन मुख्य प्रदर्शनियां है जो भारतीय संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिकता को दर्शाती है। इस प्रदर्शनी पैकेज में मुख्य रूप से सहजानंद दर्शन, नीलकंठ दर्शन और संस्कृति दर्शन शामिल है, जिनका शुल्क बड़ों के लिए २६० रुपए और बच्चों के लिए ₹१३० है।

सहजानंद दर्शन: यह हॉल अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से मानवीय मूल्य जैसे अहिंसा, ईमानदारी और शांति को प्रदर्शित करता है। नीलकंठ दर्शन: यहां भगवान स्वामीनारायण के जीवन और भारत की तीर्थ यात्रा पर आधारित एक बड़ी फिल्म दिखाई जाती है जो की ४५ मिनट का होता है।

संस्कृति दर्शन:

यह १५ मिनट का नौका विहार है जो भारत के प्राचीन गौरव, संस्कृति और योगदान को दर्शाती है।

प्रदर्शनी में प्रवेश करने के बाद हम ऐसा मग्न हो गए कि समय का कुछ ज्ञात ही ना हुआ और कब शाम के ४:४५ हो गया पता ही ना चला। हमारे सर पर हाथ, इतना समय बीत गया हमें कुछ पता ही नहीं चला। जल्दी-जल्दी मंदिर परिसर से निकलने ही जा रहे थे कि मेरी छोटी बेटी गुम हो गई। जूता काउंटर के पास जूता लेने जा रहे थे कि तभी छोटी बेटी का कुछ अता पता नहीं मिल रहा था। कुछ समझ नहीं आ रहा क्या करें। आसपास के लोग घबराने मना किए और बोले इधर ही नजदीक कहीं होगी। भगवान की कृपा से छोटी जल्द ही मिल गई। भीड़ होने के कारण वह पीछे रह गई थी। जल्दी थी इसलिए मोबाइल इत्यादि काउंटर के पास जाकर अपना सामान उठाएं और मेट्रो स्टेशन के तरफ बढ़ने लगे। चलते-चलते मोबाइल देख रहे थे तो देखा ५० से भी ज्यादा मिस कॉल पड़ा है। मौसाजी, मौसीजी, दीदी, जीजाजी, दीदी का बेटा सब ने कॉल करने का प्रयास किया। मैं समय न गवाते हुए जल्दी से मौसाजी को कॉल लगाई। मौसाजी और सभी होटल में मौजूद बहुत चिंतित हो गए थे क्योंकि उन्हें पता ही नहीं चल रहा था कि हम है कहां। यहां तक की सभी ने मास्टर चाबी से कमरा को भी खुलवाया। उन्हें चिंता थी कि कहीं कोई अनहोनी तो नहीं हो गई। मौसाजी हमारा कॉल उठाते ही हम पर चिंता व्यक्त किए और गुस्सा भी किए कि हमें किसी न किसी को होटल में जानकारी देकर जाना चाहिए था। सही है मौसाजी का गुस्सा तो जायज ही था। एक अनजान शहर में मैं अपने दो बच्चों के साथ आई थी और दोपहर से शाम गुजर गई और किसी को हमारा कोई खबर नहीं मिल रहा था। एक सीख मिली कि हमें कभी भी अगर कहीं जाना है तो अपने बड़े या वहां मौजूद किसी न किसी को जानकारी देकर ही निकालना चाहिए क्योंकि इससे हमें तो कोई परेशानी नहीं हुई लेकिन वहां मौजूद सभी परेशान हो गए। होटल पहुंचते- पहुंचते संध्या के ६:४५ हो गया। भाई की बारात होटल के मुख्य प्रवेश द्वार से निकलने ही वाली थी कि हम होटल में प्रवेश किए। सभी हमें देखकर बहुत ही गुस्सा किए। इधर मौसाजी की आंख भर आयी और समझाया कि किसी को बात कर जाते तो ऐसे सब चिंतित ना होते और घबराते नहीं। फिर जल्दी तैयार होकर शादी में शामिल होने के लिए कहा। हम अपने कमरे में पहुंचे और हम अति शीघ्र तैयार हो गई तथा बाराती में शामिल हुए। नाच- गाना, जय माल, खाना-पीना इत्यादि शादी के अन्य रस्मों से संपन्न हुआ शादी। सुबह सबके प्रयागराज वापसी था इसलिए शादी की रस्में खत्म होते ही सब अपना सामान समेटने में जुट गए। चार बजे स्टेशन जाने के लिए गाड़ी आ गई थी। मेरा वापसी का टिकट दिल्ली से शाम को ७:३० बजे दुरंतो कोलकाता से था इसलिए उनके निकालने के बाद हम थोड़ा देर आराम करने अपने कमरे में चले गए। लगभग ८:०० बजे सुबह नाश्ता खत्म करते ही मैं और मेरे बच्चे दिल्ली की ओर रवाना हुए। सारा दिन हमारे हाथ में था इसलिए समय न गवाते हुए हम सारा दिन दिल्ली की सैर करने का फैसला किए। १०:०० बजे के आसपास हम दिल्ली स्टेशन पहुंच गए साथ लगेज बैग जिसे लेकर घूमना असंभव था। हमने स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर १६ में लगेज काउंटर में जमा करवा दिया। स्टेशन से बाहर निकलते ही हमने एक गाड़ी वाले से सारा दिन घूमने का करार किया। मोल भाव करने के बाद वह ₹२५०० में राज़ी हुए। उन्होंने हमें प्रमुख पर्यटन स्थल- लाल किला, इंडिया गेट , कुतुब मीनार, हुमायूं का मकबरा, जामा मस्जिद, लोधी गार्डन, राजघाट घुमाकर वापस शाम ६:०० बजे स्टेशन तक छोड़ देंगे ऐसा कहा। हम भी राज़ी हो गए। लाल किला और लोटस टेंपल प्रति सोमवार बंद रहने की वजह से हमें बाहर से ही देखना पड़ा। अन्य जगहों जैसे राजघाट, कुतुब मीनार, इंडिया गेट घूमने के बाद बच्चों के साथ मुझे भूख लग गई थी इसलिए गाड़ी वाले चालक को एक अच्छा भोजनालय के पास रुकने को बोले। खाने के बाद और भी पर्यटक स्थल जैसे हुमायूं का मकबरा और छोटे-छोटे कुछ स्थल जो राह में पढ़ रहे थे वहां भी घुमाया। लड़कियां, अर्थात खरीददारी , चांदनी चौक से कई प्रकार की खरीदारी करते हुए स्टेशन की ओर रवाना हुए। समय ५:४५ हो चुका था। चालक भैया बोलने लगे की एक घंटा से ज्यादा लग जाएगा। बहुत ज्यादा समय हो गया। गूगल नक्शे में रास्ते की स्थिति जानने को चालक भैया ने कहा। जिसमें सभी रास्ते में एक घंटा से ज्यादा समय दिखा रहा था। हमें घबराहट सी होने लगी कि कहीं हमारा ट्रेन ना छूट जाए चालक वाले भैया हमें आश्वासन दिए कि हमें वक्त से पहले स्टेशन पहुंचा देंगे लैगेज काउंटर में पहुंचने का छोटा मार्ग भी दिखा देंगे जिससे वापस से सुरक्षा जांच की पद्धति से ना गुजरना पड़े इधर मेरे मोबाइल में भी 5% चार्ज ही बचा था ट्रेन की स्टेटस बार-बार देखने की वजह से मोबाइल बंद पड़ गया समय 6:50 अभी भी हम स्टेशन से 10 से 12 किलोमीटर की दूरी में थे चालक भैया बहुत अच्छे थे और उन्हें हमें कोई अंदर अंदर के रास्ते से जहां काम वाहनों आना-जाना करती है उसे रास्ते में से हमें स्टेशन पहुंचा दिए समय 7:05 हमें ठीक

16 नंबर प्लेटफार्म के नजदीक उतार दिए हम उनको पैसा और धन्यवाद देते हुए तुरंत ही लैगेज काउंटर में पहुंचकर अपना सामान उठाएं इधर ट्रेन के आगमन की घोषणा हो रही थी 20 नंबर प्लेटफार्म से रवाना होगी हम वहां जाकर ट्रेन का इंतजार करने लगे समय 7:45 हो गया परंतु ट्रेन का आगमन नहीं हुआ इंतजार करते-करते 8:15 में ट्रेन प्लेटफार्म में आ पहुंची सेट की खोज करके हम अपने अपने सीटों पर विराजमान हुए मोबाइल को बैक से निकाल कर तुरंत ही चार्ज पर बैठा है गाड़ी 8:30 में कोलकाता के लिए रवाना हो गई पहले ही 1 घंटे की देरी से चलने वाली ट्रेन कोलकाता एक घंटा 30 मिनट की देरी से सियालदह पहुंची मेरे घर तक जाने के लिए आसान तरीका बजाज लोकल था इसलिए वह पकड़ने के लिए ट्रेन से उतर कर ही दौड़ लगाई क्योंकि ज्यादा वक्त नहीं बचा था उसे छुटने में घुटने में सिर्फ 3 मिनट ट्रेन दक्षिण डिवीजन 13 नंबर प्लेटफार्म से रवाना होने वाली थी हम ट्रेन के नजदीक पहुंचे ही थे और ट्रेन चालू हो गया चलती ट्रेन में किसी तरह लगेज बैग छोटी बेटी और बड़ी बेटी दरवाजे के पास खड़े यात्री के मदद से उड़ गई उठने के बाद यात्रियों ने अपना गुस्सा व्यक्त किया और कुछ तो अब उठने समय ही चिल्ला रहे थे बच्चों को लेकर इतना जोखिम नहीं उठाना चाहिए था यह था कोलकाता से दिल्ली और दिल्ली से कोलकाता का सफर।

सपना कुमारी

महिला सशक्तिकरण

दो सौ साल पहले, क्या आप जानते हैं कि भारत में महिलाओं की क्या स्थिति थी? चलिए वर्ष 1850 की ओर चलते हैं।

अगर आज आप दफ्तरों में काम कर पा रही हैं, अगर आप अपनी पसंद के अनुसार कपड़े पहन पा रही हैं, या फिर सार्वजनिक आयोजनों में भाग ले पा रही हैं, अगर आप अपनी पसंद के व्यक्ति से शादी कर पा रही हैं, या अगर आप उस चीज़ को ना कह पा रही हैं जिससे आप असहज हैं—तो आपको यह जानना चाहिए कि यह सब उन महान व्यक्तियों के प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने भारत में महिलाओं की स्थिति बदलने के लिए अथक संघर्ष किया।

आज बहुत सी महिलाएँ नहीं जानतीं कि हमें इनका धन्यवाद करना चाहिए। भले ही आज की दुनिया में हम 100% स्वतंत्र नहीं हैं, लेकिन जो भी स्वतंत्रता हमारे पास है, वह महान सुधारकों जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले की देन है।

राजा राम मोहन राय महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने वाले सबसे पहले सुधारकों में से एक थे। उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह और महिलाओं की शिक्षा के लिए आंदोलन किया।

ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में बाधाएँ तोड़ीं और लड़कियों के लिए स्कूल खोले।

बाद में, महात्मा गांधी ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने दिखाया कि महिलाएँ भी राष्ट्र निर्माण में पुरुषों के बराबर सक्षम हैं।

स्वतंत्र भारत में भी कई महिला नेताओं ने प्रेरणा दी। इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, कल्पना चावला, पी. वी. सिंधु, और मैरी कॉम जैसे नाम साबित करते हैं कि महिलाएँ राजनीति, विज्ञान, प्रशासन और खेलों – हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा सकती हैं।

आज सरकार ने भी कई योजनाएँ शुरू की हैं – जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, और पंचायत राज में महिलाओं के लिए आरक्षण। इनसे महिलाओं को अधिक अवसर मिले हैं और आज लाखों महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर अपने भविष्य का निर्माण कर रही हैं।

लेकिन, मित्रों, महिला सशक्तिकरण सिर्फ कानूनों या योजनाओं तक सीमित नहीं है। असली सशक्तिकरण तब होगा जब हर महिला शिक्षित होगी, जब हर महिला सुरक्षित महसूस करेगी, और जब हर महिला अपने सपनों को पूरा करने की आज़ादी पाएगी।

याद रखिए –"महिलाओं का सशक्तिकरण कोई उपकार नहीं है, यह न्याय है।"

और यह भी –"महिलाओं का सशक्तिकरण ही पूरे समाज और मानवता की प्रगति है।"

सुचंद्रा बोस

भारतीय संविधान के 10 ऐसे रोचक तथ्य, जिन्हें हर भारतीय को जानना चाहिए

"संविधान केवल कानूनों की पुस्तक नहीं, बल्कि भारत के सपनों, संघर्षों और लोकतांत्रिक मूल्यों का जीवंत दस्तावेज़ है।"

26 जनवरी 1950 को लागू हुआ भारतीय संविधान दुनिया के सबसे विस्तृत लिखित संविधानों में से एक है। यह केवल शासन चलाने के नियम नहीं बताता, बल्कि नागरिकों के अधिकार, कर्तव्य और राष्ट्र के आदर्शों को भी दिशा देता है। आइए जानते हैं भारतीय संविधान से जुड़े दस ऐसे रोचक तथ्य, जिन्हें हर भारतीय को अवश्य जानना चाहिए।

1. भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है

यह सबसे बड़ा और सबसे प्रचलित भ्रम है। संविधान में किसी भी भाषा को "राष्ट्रभाषा" घोषित नहीं किया गया है। हिंदी (देवनागरी लिपि) संघ की राजभाषा है, जबकि अंग्रेज़ी भी आधिकारिक कार्यों में प्रयुक्त होती है।

2. दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान

भारतीय संविधान अपने प्रारंभिक स्वरूप में 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियों से मिलकर बना था। समय के साथ संशोधनों के बाद आज इसमें 470 से अधिक अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियाँ हैं।

3. संविधान को बनाने में लगभग तीन वर्ष लगे

संविधान सभा ने 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन तक चर्चा, बहस और संशोधन के बाद संविधान तैयार किया। यह अपने समय की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक बौद्धिक प्रक्रिया थी।

4. संविधान हस्तलिखित है

भारत का मूल संविधान टाइप नहीं किया गया था। इसे प्रसिद्ध सुलेखक प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा ने अपने हाथों से सुंदर कैलिग्राफी में लिखा था। उन्होंने इसके लिए कोई पारिश्रमिक नहीं लिया; केवल प्रत्येक पृष्ठ पर अपना नाम और अंतिम पृष्ठ पर अपने दादा का नाम लिखने की अनुमति माँगी।

5. संविधान की मूल प्रति एक कलाकृति भी है

संविधान के प्रत्येक भाग को शांतिनिकेतन के प्रसिद्ध कलाकार नंदलाल बोस और उनके विद्यार्थियों ने भारतीय इतिहास और संस्कृति से प्रेरित चित्रों से सजाया था। इसलिए संविधान केवल कानूनी दस्तावेज़ ही नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर भी है।

6. एक दिन में नहीं, कई देशों से सीखकर बना संविधान

भारतीय संविधान ने अनेक देशों के संविधानों से प्रेरणा ली—

•ब्रिटेन से संसदीय शासन प्रणाली,

•अमेरिका से मौलिक अधिकार,

•आयरलैंड से राज्य के नीति-निर्देशक तत्व,

•कनाडा से संघीय व्यवस्था,

•ऑस्ट्रेलिया से समवर्ती सूची,

•और फ्रांस से स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व के आदर्श।

7. संविधान में समय के साथ बदलाव संभव है

भारतीय संविधान कठोर भी है और लचीला भी। अब तक इसमें 100 से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं, जिससे यह बदलती सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होता रहा है।

8. मौलिक अधिकारों के साथ मौलिक कर्तव्य भी हैं

अक्सर लोग अपने अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन संविधान नागरिकों को 11 मौलिक कर्तव्यों का भी पालन करने की प्रेरणा देता है। अधिकार और कर्तव्य—दोनों मिलकर एक मजबूत लोकतंत्र की नींव बनाते हैं।

9. "हम भारत के लोग..."

संविधान की प्रस्तावना का पहला वाक्य—"हम भारत के लोग"—यह स्पष्ट करता है कि भारत में सर्वोच्च शक्ति किसी राजा या सरकार की नहीं, बल्कि जनता की है। यही भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता है।

10. संविधान एक जीवंत दस्तावेज़ है

संविधान केवल न्यायालयों या विधि विशेषज्ञों के लिए नहीं है। यह प्रत्येक नागरिक के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है—शिक्षा का अधिकार, मतदान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समान अवसर, धार्मिक स्वतंत्रता और न्याय की व्यवस्था—सबकी जड़ें संविधान में ही हैं।

निष्कर्ष

भारतीय संविधान हमें केवल अधिकार नहीं देता, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी देता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह विविधताओं से भरे भारत को एक लोकतांत्रिक सूत्र में बाँधता है। समय बदलता है, चुनौतियाँ बदलती हैं, लेकिन संविधान के मूल आदर्श—न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने 26 जनवरी 1950 को थे।

"संविधान केवल पुस्तकालयों की अलमारियों में रखी पुस्तक नहीं, बल्कि हर नागरिक के जीवन का मौन संरक्षक है।"

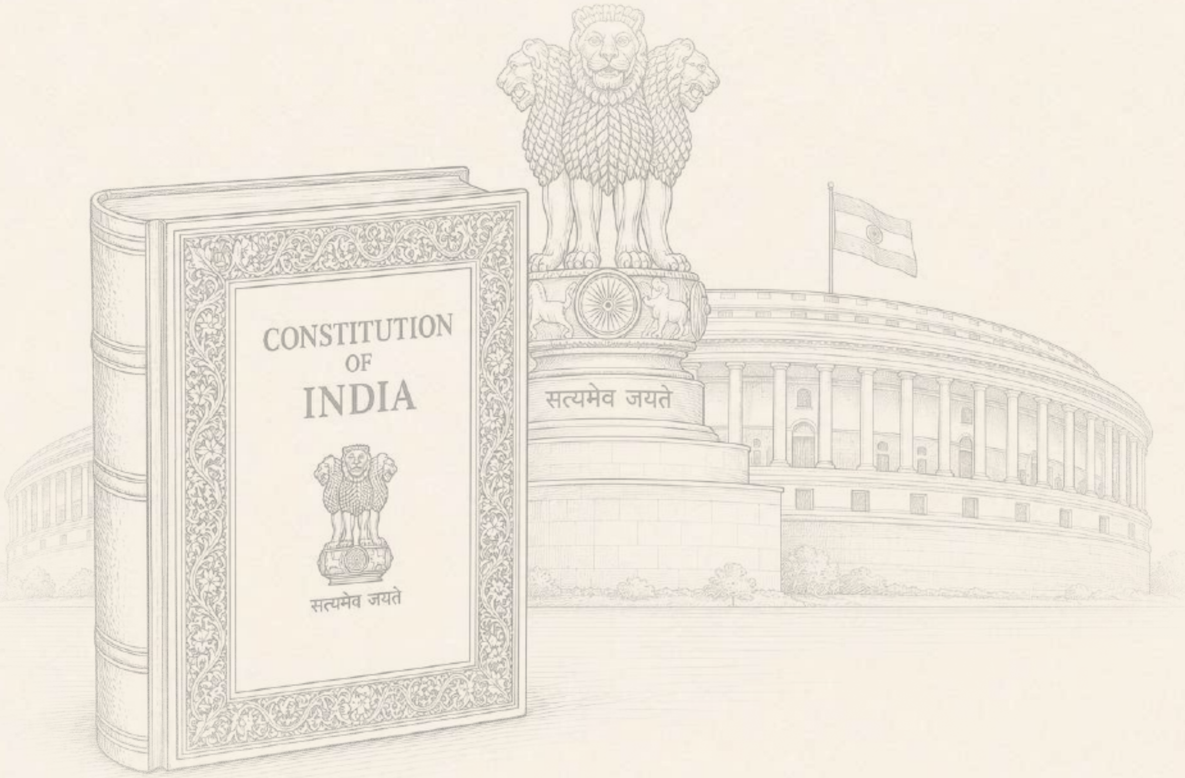

सुदीप्त मजुमदार

डर का वह अंधेरा रास्ता

29 मार्च 1992 की बात है।

मैं, अनंत, उस दिन कक्षा छह की वार्षिक परीक्षा देकर दोपहर करीब ढाई बजे घर लौटा था। घर पहुँचते ही मन खुशी से झूम उठा। खुशी की दो वजह थीं—पहली, मेरे सबसे प्रिय मामा हमारे घर आए हुए थे, और दूसरी, उनके आने की खुशी में माँ ने अपने हाथों से मछली और चिकन बनाया था।

मैं और मेरा बड़ा भाई दिगंत, जो मुझसे केवल दो साल बड़ा था, बड़े चाव से खाना खाने बैठे। स्वादिष्ट भोजन और घर का खुशनुमा माहौल उस दिन को और खास बना रहे थे। खाना खत्म होते-होते करीब साढ़े तीन बज गए। तभी मामा ने मुस्कुराते हुए कहा,

"चलो, तुम दोनों को अपने गाँव रामनारायण पुर लेकर चलता हूँ।"

बस, यह सुनते ही हमारी खुशी दोगुनी हो गई। हम दोनों ने जल्दी-जल्दी अपने कपड़े एक छोटे बैग में रखे और मामा की साइकिल पर बैठ गए—मैं आगे और दादा पीछे।

मामा का गाँव हमारे घर से लगभग पैंतालीस किलोमीटर दूर था। वहाँ पहुँचने के लिए पहले नाव से गंगा नदी पार करनी पड़ती थी, फिर करीब चालीस किलोमीटर बस का सफर और उसके बाद पाँच किलोमीटर पैदल या साइकिल से जाना होता था।

हम लोग नाव से गंगा पार करके दूसरी ओर पहुँचे। वहाँ से मामा ने हमें बस में बैठाया और कंडक्टर से कहा,

"इन दोनों बच्चों को फतेपुर स्टॉपेज पर उतार दीजिएगा। मैं साइकिल लेकर वहीं पहुँच जाऊँगा।"

पहली बार मैं और दादा अकेले बस में सफर कर रहे थे। हमें लग रहा था जैसे हम अचानक बहुत बड़े हो गए हों।

शाम करीब पौने पाँच बजे बस तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। बाहर आसमान में काले बादल छा चुके थे। अचानक तेज़ आँधी और बारिश शुरू हो गई। बारिश की बूँदें खिड़की से टकराकर भीतर तक ठंडक पहुँचा रही थीं। मुझे बारिश देखना हमेशा से अच्छा लगता था। मैं खिड़की से बाहर झाँकने लगा, लेकिन पास बैठे एक अंकल ने डाँटते हुए खिड़की बंद कर दी।

कुछ देर बाद बस अचानक रुक गई। सामने गाड़ियों की लंबी कतार लगी हुई थी। पता चला कि आँधी में सड़क किनारे का एक विशाल पेड़ टूटकर सड़क पर गिर गया था। जब तक वन विभाग उसे हटाएगा नहीं, रास्ता बंद रहेगा।

बारिश की भीगी मिट्टी की खुशबू, हरे पेड़ों पर गिरती बूँदें और ठंडी हवा मुझे अपनी ओर खींच रही थीं। मेरा मन बस से उतरने का हुआ। मैंने दादा से कहा और धीरे-धीरे नीचे उतर आया।

हल्की बारिश मेरे सिर पर पड़ रही थी और मैं सड़क किनारे टहलते हुए आगे बढ़ने लगा। तभी अचानक चारों तरफ गाड़ियों के हॉर्न एक साथ गूँज उठे। शायद रास्ता साफ हो चुका था। सभी गाड़ियाँ धीरे-धीरे चलने लगीं।

मैं घबराकर दौड़ा और जल्दी से एक बस में चढ़ गया।

लेकिन अंदर पहुँचते ही मेरे कदम जैसे जम गए।

दादा वहाँ नहीं था।

बस में बैठे सारे चेहरे अनजान थे।

मेरे भीतर डर का एक तेज़ झटका लगा। काँपती आवाज़ में मैंने कंडक्टर से पूछा। उसने बताया कि मैं गलती से दूसरी बस में चढ़ गया हूँ।

यह सुनते ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। उस पल मुझे लगा जैसे मैं अपने परिवार से बहुत दूर छूट गया हूँ—इतना दूर कि शायद अब कभी घर वापस नहीं जा पाऊँगा।

लेकिन कुछ देर बाद मैंने खुद को संभाला। मन में एक बात आई—अगर मैं सिर्फ रोता रहूँगा, तो शायद सचमुच कभी घर नहीं पहुँच पाऊँगा।

मैंने हिम्मत करके कंडक्टर से पूछा,

"क्या यह बस फतेपुर होकर जाएगी?"

उसने कहा, "हाँ।"

मैंने विनती की कि मुझे वहीं उतार दिया जाए। ड्राइवर अंकल ने भी सहमति में सिर हिला दिया।

रात करीब आठ बजकर दस मिनट पर मैं फतेपुर पहुँचा।

बस से उतरते ही ऐसा लगा मानो पूरी दुनिया अंधेरे में डूब चुकी हो। दूर-दूर तक कोई रोशनी नहीं थी। हल्की बारिश अब भी जारी थी। मैंने जेब से रुमाल निकालकर सिर पर बाँधा और एक कच्चे रास्ते पर चल पड़ा, यह सोचकर कि शायद यही रास्ता गाँव की ओर जाता होगा।

उस समय न मोबाइल था, न किसी से संपर्क करने का कोई साधन। सच तो यह है कि तब तक मैंने "मोबाइल" शब्द भी नहीं सुना था।

कुछ दूर चलते ही मुझे अजीब-अजीब आवाज़ें सुनाई देने लगीं। ऐसी आवाज़ें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। धीरे-धीरे डर मेरे मन पर हावी होने लगा।

तभी अचानक मुझे सामने सफेद कपड़े पहने एक बूढ़ी औरत दिखाई दी। अंधेरे और बारिश के बीच वह किसी भूत जैसी लग रही थी।

वह धीरे-धीरे मेरे पास आई और काँपती आवाज़ में बोली,

"बेटा, कहाँ जाना है?"

मैंने डरते हुए कहा,

"मामा के घर... रामनारायण पुर गाँव। लेकिन मैं रास्ता भूल गया हूँ।"

उस बूढ़ी औरत ने मुझे रास्ता समझाने की कोशिश की, लेकिन डर के कारण मेरा दिमाग जैसे काम करना बंद कर चुका था। मैं बस सिर हिलाकर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर जाकर जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो वह अंधेरे में गायब हो चुकी थी।

अब मेरा डर और बढ़ चुका था।

अचानक मुझे महसूस हुआ जैसे किसी ने पाँच उँगलियों से मेरा पूरा चेहरा दबा दिया हो।

उस रात की मेरी आखिरी याद बस इतनी ही है।

जब मेरी आँख खुली, तब सुबह हो चुकी थी। मैं सड़क किनारे कीचड़ में पड़ा था और आसपास कई लोग खड़े थे।

उन्होंने मुझे उठाया और पूछा कि मैं कौन हूँ और कहाँ जाना चाहता हूँ।

धीरे-धीरे मैंने पूरी बात बताई।

तब गाँव वालों ने सच बताया।

जिन अजीब आवाज़ों को मैं भूत-प्रेत समझ रहा था, वे दरअसल बारिश में टर्र-टर्र करते मेढकों की आवाज़ थीं।

सफेद कपड़ों वाली "भूतनी" असल में एक बूढ़ी औरत थी, जो मेरी मदद करना चाहती थी।

और जिसने मेरा चेहरा दबाया था—वह कोई भूत नहीं, बल्कि सड़क पर गिरी एक सूखी पेड़ की शाखा थी, जिसकी टहनियाँ मेरे चेहरे पर आ गिरी थीं।

यह सब जानकर मुझे खुद पर हँसी भी आई और शर्म भी महसूस हुई कि मैं कितना डर गया था।

गाँव के एक अंकल मुझे साइकिल पर बैठाकर मामा के घर छोड़ आए। वहाँ पहुँचते ही सबने मुझे गले लगा लिया। पूरी रात सब लोग मेरी चिंता में जागते रहे थे।

उस घटना ने मुझे जीवन की एक बहुत बड़ी सीख दी—

"जब डर मन पर हावी हो जाता है, तब साधारण चीजें भी हमें भयावह दिखाई देने लगती हैं। डर इंसान को मंज़िल तक पहुँचने से पहले ही हार मानने पर मजबूर कर देता है।"

सुनीता दुबे

अब वह किसी के सहारे की नहीं, अपने होने की तलाश में है

एक समय था, जब किसी लड़की के जन्म के साथ ही उसके भविष्य की एक अनकही रूपरेखा भी तय कर दी जाती थी—अच्छी पढ़ाई करो, घर-परिवार सँभालना सीखो, फिर एक अच्छा घर मिले, अच्छा जीवनसाथी मिले और उसी के साथ जीवन की आगे की यात्रा पूरी हो जाए। उसकी सुरक्षा, उसका भविष्य और उसकी खुशियाँ अक्सर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ जोड़कर देखी जाती थीं।

लेकिन समय के साथ स्त्री की सोच और उसके जीवन की प्राथमिकताएँ भी बदली हैं।

आज की स्त्री यह समझने लगी है कि उसका भविष्य केवल किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं होना चाहिए। वह अपनी आवश्यकताओं को समझ सकती है, अपने निर्णय स्वयं ले सकती है, अपने सपनों को पूरा कर सकती है और अपने जीवन की जिम्मेदारी भी उठा सकती है।

यह आत्मनिर्भरता किसी के विरुद्ध खड़ा होना नहीं है, बल्कि स्वयं के पक्ष में खड़ा होना है।

शायद इसी बदलाव ने विवाह को लेकर उसकी सोच को भी एक नया आयाम दिया है।

आज कुछ महिलाएँ विवाह को लेकर अधिक सजग और विचारशील हैं। वे केवल सामाजिक अपेक्षाओं या उम्र के पड़ाव के कारण विवाह नहीं करना चाहतीं, बल्कि यह देखना चाहती हैं कि जिस रिश्ते में वे प्रवेश करेंगी, उसमें उन्हें सम्मान, समझ, समानता और स्वतंत्रता मिलेगी या नहीं।

यह विवाह के विरुद्ध कोई विद्रोह नहीं है।

यह अपने अस्तित्व और अपनी पसंद को महत्व देने की इच्छा है।

हमारे समाज में विवाह और परिवार प्रेम, अपनापन और सुरक्षा के महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। लेकिन यह भी सच है कि कुछ रिश्तों में मानसिक या शारीरिक हिंसा, भावनात्मक उपेक्षा, दहेज, अत्यधिक नियंत्रण और असमानता जैसी समस्याएँ भी सामने आती रही हैं। इन अनुभवों को देखने वाली किसी स्त्री के मन में विवाह को लेकर स्वाभाविक रूप से कुछ आशंकाएँ पैदा हो सकती हैं।

उसके मन में कभी-कभी यह प्रश्न उठ सकता है—

"अगर किसी रिश्ते में मुझे अपने ही अस्तित्व से दूर होना पड़े, तो क्या केवल समाज की अपेक्षाओं के कारण उस रिश्ते को स्वीकार करना आवश्यक है?"

यह प्रश्न विवाह संस्था को नकारने के लिए नहीं, बल्कि रिश्तों को अधिक स्वस्थ और सम्मानपूर्ण बनाने की आवश्यकता की ओर संकेत करता है।

इसी संदर्भ में हमें यह भी समझना होगा कि हिंसा और पीड़ा को किसी एक लिंग तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। पुरुष हो या महिला—किसी भी व्यक्ति के साथ होने वाली हिंसा, अपमान या शोषण गंभीर विषय है। हर पीड़ित की पीड़ा को समान संवेदनशीलता और गंभीरता से सुना जाना चाहिए।

साथ ही, महिलाओं के साथ लंबे समय से जुड़े उन अनुभवों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, जिनके कारण कई स्त्रियों के मन में रिश्तों को लेकर असुरक्षा पैदा हुई है।

वे महिलाएँ भी हमारे ध्यान की पात्र हैं, जिन्होंने वर्षों तक घरेलू हिंसा सहन की, मानसिक प्रताड़ना झेली, अपनी इच्छाओं को परिवार की प्राथमिकताओं के पीछे रखा या केवल इसलिए चुप रहीं क्योंकि उन्हें सिखाया गया था कि परिवार की शांति के लिए थोड़ा-बहुत समझौता करना पड़ता है।

इन अनुभवों को समझना इसलिए जरूरी है, क्योंकि आज की स्त्री का दृष्टिकोण केवल उसके व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं बना है। उसके आसपास की स्त्रियों की कहानियाँ, उनके संघर्ष और उनके मौन ने भी उसकी सोच को प्रभावित किया है।

फिर भी यह कहना उचित नहीं होगा कि आज की स्त्री प्रेम या विवाह से दूर होना चाहती है।

सच तो यह है कि वह प्रेम चाहती है—लेकिन ऐसा प्रेम जिसमें सम्मान हो।

वह चाहती है कि कोई उसे समझे, लेकिन उसके निर्णयों को नियंत्रित न करे।

वह चाहती है कि कोई उसका हाथ थामे, लेकिन उसकी स्वतंत्रता का सम्मान भी करे।

वह परिवार चाहती है, लेकिन ऐसा परिवार जहाँ उसे अपनी पहचान खोकर अपनी जगह न बनानी पड़े।

वह जीवनसाथी चाहती है, लेकिन ऐसा साथी जिसके साथ दोनों एक-दूसरे की खुशियों और सपनों को महत्व दे सकें।

वह रिश्ते चाहती है—लेकिन सम्मान और समानता के साथ। शायद आज की स्त्री को अकेलेपन से उतना डर नहीं लगता, जितना इस बात से लगता है कि किसी रिश्ते में रहते हुए वह स्वयं से दूर न हो जाए।

उसने यह समझना शुरू किया है कि विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है, लेकिन जीवन की पूरी परिभाषा नहीं। विवाह सुख का आश्वासन नहीं, बल्कि दो व्यक्तियों की साझा यात्रा है। इसलिए विवाह का निर्णय केवल सामाजिक दबाव के कारण नहीं, बल्कि समझ और आपसी सहमति के आधार पर होना चाहिए।

आज की महिला आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहती है। वह अपने निर्णयों में सहभागी बनना चाहती है। वह यह तय करना चाहती है कि उसे कब विवाह करना है, किसके साथ करना है और यदि वह विवाह नहीं करना चाहती, तो उस निर्णय का भी सम्मान किया जाए।

और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अब अपनी बात कहने में पहले की अपेक्षा अधिक सहज महसूस करती है।

लेकिन आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं कि उसे किसी की जरूरत नहीं।

मनुष्य को मनुष्य की जरूरत हमेशा रहती है। प्रेम की जरूरत होती है, अपनापन चाहिए, किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत होती है जिसके सामने वह अपनी मजबूती के पीछे छिपी संवेदनशीलता को भी सहजता से व्यक्त कर सके।

अंतर केवल इतना है कि आज की स्त्री उस साथ को अपनी मजबूरी नहीं बनाना चाहती।

वह साथ चाहती है, सहारा नहीं।

वह प्रेम चाहती है, अधिकार नहीं।

वह परिवार चाहती है, लेकिन अपनी पहचान खोकर नहीं।

वह रिश्ता चाहती है, लेकिन ऐसा रिश्ता जिसमें दोनों एक-दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करें।

शायद यही आज की स्त्री की बदलती हुई पहचान है—वह अब अपने जीवन की केवल "जरूरत" नहीं, बल्कि अपने जीवन की निर्णयकर्ता बनना चाहती है।

यदि कोई स्त्री विवाह से दूर रहने का निर्णय लेती है, तो इसका अर्थ यह जरूरी नहीं कि वह प्रेम में विश्वास नहीं करती। हो सकता है वह प्रेम और रिश्तों को इतना महत्व देती हो कि वह किसी ऐसे संबंध में प्रवेश न करना चाहती हो, जहाँ उसकी स्वतंत्रता, गरिमा या पहचान प्रभावित हो।

उसे किसी की छाया बनकर नहीं जीना।

वह किसी के साथ चलना चाहती है—किसी के पीछे नहीं।

और शायद यही वह परिवर्तन है, जिसे हमारा समाज धीरे-धीरे समझना सीख रहा है—जहाँ स्त्री का अकेले रहना उसकी मजबूरी नहीं, उसका निर्णय हो सकता है; विवाह उसका कर्तव्य नहीं, उसकी इच्छा हो सकती है; और प्रेम उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसके जीवन की एक सुंदर साझेदारी हो सकता है।

क्योंकि अंततः हर स्त्री की सबसे बड़ी इच्छा शायद यही है—

वह किसी के जीवन का हिस्सा बने, लेकिन अपने जीवन से कभी अलग न हो।

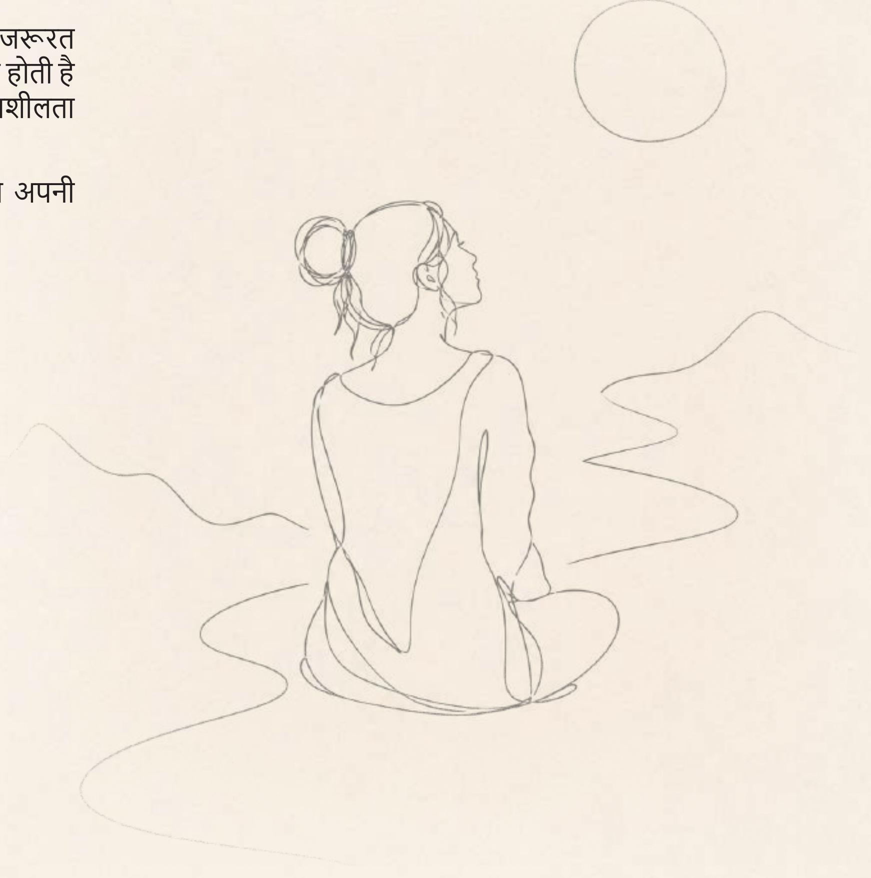

सुनील कुमार श्रीवास्तव

बेटी की आह

जब किसी घर में बच्चे की खिलखिलाहट और रोने की गूँज सुनाई पड़ती है, तो उस घर के सदस्यों की खुशियों का ठिकाना नहीं रहता। उसी में यदि बेटी की जगह बेटे की किलकारी सुनाई पड़े, तो खुशियाँ दुगनी हो जाती हैं। घर में सोहर और मंगल गीत गाए जाते हैं। गाँव में मिठाइयाँ बाँटने लगती हैं। घर के लोगों के आनंद का ठिकाना नहीं रहता। उन्हें लगने लगता है कि मेरे कुल का दीपक आ गया है, अब हमारा नाम और वंश बढ़ने की परंपरा चलने लगेगी। वहीं यदि भगवान ने बेटे की जगह बेटी दे दी, तो ऐसा लगता है कि उस घर पर दुःखों का पहाड़ टूट गया हो। वह खुशी और आनंद नज़र नहीं आता, जो एक बेटे के जन्म होने पर दिखाई देता है।

पता नहीं यह समाज कब तक ऐसे ही बेटे और बेटी में फर्क करता रहेगा। क्या बेटी संतान नहीं होती या उसे माँ-बाप ने जन्म नहीं दिया है? बेटे की जगह बेटियों का घर में मान और आदर भी कम होता है। जहाँ बेटे को पूर्ण आज़ादी रहती है—स्कूल जाने की, पढ़ाई करने की, समाज के किसी भी काम में हाथ बँटाने या सहयोग देने की, यहाँ तक कि बाहर घूमने जाने की, अपने दोस्तों के साथ मिलने-जुलने और मौज-मस्ती करने की पूरी छूट रहती है। वहीं दूसरी तरफ बेटियों के साथ दुर्व्यवहार होता है।

आज भी आप किसी गाँव के दूर-दराज़ क्षेत्र में चले जाएँगे, तो देखेंगे कि बेटियों को अधिक पढ़ाया-लिखाया नहीं जाता। 10वीं या 12वीं तक पढ़ाकर उन्हें घर के कामों में लगा दिया जाता है। उनसे कहा जाता है कि अधिक पढ़-लिखकर क्या करोगी, शादी के बाद तो चूल्हा-चौका ही करना पड़ेगा। यही नहीं, घर के बाहर अपने दोस्तों या बाहरी लोगों से मिलने पर भी पूरी तरह से बंदिश लगी होती है। छोटी-छोटी गलतियों पर घर के सारे सदस्य उसे टोकते रहते हैं, जबकि बेटे के साथ ऐसा कुछ भी नहीं होता।

इसके विपरीत शहरों में लोग थोड़े शिक्षित और जागरूक हुए हैं। इसलिए यहाँ पर बेटे और बेटियों में अधिक अंतर देखने को नहीं मिलता। शहरों में बेटियों को पूरी पढ़ाई करने, दोस्तों के साथ मिलने-जुलने तथा घर के बाहर घूमने-फिरने की आज़ादी है। मुझे लगता है कि यहाँ शिक्षा का विकास ही मुख्य भूमिका निभा रहा है।

हमारे समाज के लोगों में न जाने कब जागरूकता आएगी। उन्हें अपने किए हुए गलतियों का एहसास तब होता है, जब बच्चों की शादी होती है। बेटे की शादी होने के बाद वह अपनी पत्नी को लेकर या तो विदेश चला जाता है या किसी दूसरे शहर में नौकरी करने लगता है और माँ-बाप को अकेले बुढ़ापे की ज़िंदगी गुजारने के लिए छोड़ देता है। उस समय माँ-बाप के ऊपर जो दुःखों का पहाड़ टूटता है, उसकी व्याख्या कर पाना शायद मुमकिन नहीं है।

वहीं बेटियों को देख लीजिए। जब वह जन्म लेकर अपने माँ-बाप के घर में रहती हैं, तो पूरी तरह से अनुशासन में रहना पड़ता है। किसी प्रकार की अधिक छूट उन्हें नहीं दी जाती है। इसके बाद जब वह शादी करके अपने ससुराल जाती है, तो वहाँ भी अपने सास-ससुर और पति के अनुशासन में रहना पड़ता है। यहीं उसके दुःखों का अंत नहीं होता। शादी के बाद तो वह अपने घर (मायके) में भी पराई हो जाती है। ससुराल भी उसका अपना घर नहीं होता, वह भी उसके पति का घर होता है।

समाज की यह दोहरी नीति पता नहीं कब तक चलेगी। जब एक बेटी ही इस समाज और मर्दों के निर्माण में अपना पूरा योगदान देती है, तो वही समाज उसके अधिकारों से उसे वंचित करता आ रहा है। यह हमारे समाज और देश की विडम्बना है। अतः इस देश और समाज से इस कहानी के माध्यम से पूछना चाहते हैं कि यह सिलसिला कब समाप्त होगा? कब उस बेटी को उसके पूर्ण अधिकार मिलेंगे?

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से

यदि हम भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की ओर दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होता है कि हमारे शास्त्रों ने नारी को सदैव सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में नारी को केवल एक मनुष्य के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति, करुणा, ममता और सृष्टि की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया गया है। भगवान शिव भी शक्ति के बिना "शव" समान माने जाते हैं। इसका अर्थ है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन स्त्री-शक्ति के बिना संभव

नहीं है। जब स्वयं ईश्वर ने स्त्री को अपनी शक्ति का स्वरूप माना है, तब मनुष्य द्वारा बेटी और बेटे में भेद करना न केवल सामाजिक अन्याय है, बल्कि ईश्वर की व्यवस्था का भी अपमान है।

सनातन धर्म में माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी और माँ सरस्वती की पूजा पूरी श्रद्धा और सम्मान के साथ की जाती है। हम धन की प्राप्ति के लिए माँ लक्ष्मी की आराधना करते हैं, ज्ञान के लिए माँ सरस्वती की वंदना करते हैं और शक्ति एवं रक्षा के लिए माँ दुर्गा की उपासना करते हैं। जब हम देवियों को पूजनीय मानते हैं, तब उसी देवी-स्वरूप बेटी को जन्म लेने पर बोझ या अभिशाप समझना हमारे आचरण और हमारी आस्था के बीच एक गहरा विरोधाभास उत्पन्न करता है। यदि हर बेटी में हम देवी का अंश देखें, तो समाज में भेदभाव स्वतः समाप्त होने लगेगा।

अध्यात्म हमें यह भी सिखाता है कि प्रत्येक जीवात्मा ईश्वर का अंश है। आत्मा का न तो कोई लिंग होता है और न ही कोई ऊँच-नीच। वह केवल कर्मों के आधार पर विभिन्न शरीर धारण करती है। इसलिए यह कहना कि पुत्र श्रेष्ठ है और पुत्री कम महत्वपूर्ण है, अध्यात्म की मूल भावना के विपरीत है। ईश्वर की दृष्टि में सभी आत्माएँ समान हैं। जो व्यक्ति पुत्र और पुत्री में भेद करता है, वह वास्तव में ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि में भेद करने का प्रयास करता है।

कर्म का सिद्धांत भी हमें यही संदेश देता है कि जैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ करते हैं, वैसा ही फल हमें भविष्य में प्राप्त होता है। जो समाज अपनी बेटियों का सम्मान नहीं करता, उनकी शिक्षा, स्वतंत्रता और अधिकारों का हनन करता है, वह समाज कभी पूर्ण रूप से समृद्ध और सुखी नहीं हो सकता। इसके विपरीत, जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ प्रेम, शांति, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"

अर्थात, जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है।

हम जानते हैं कि इस समस्या को दूर करने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जैसे—

1.बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

2.सुकन्या समृद्धि योजना

आज आवश्यकता केवल सरकारी योजनाओं या कानूनों की नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न होने की है। जब माता-पिता अपनी बेटी को ईश्वर का अमूल्य उपहार समझेंगे, जब समाज उसे समान अधिकार, समान अवसर और समान सम्मान देगा, तभी वास्तविक परिवर्तन संभव होगा। यह परिवर्तन किसी एक परिवार या एक पीढ़ी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाली अनेक पीढ़ियों के लिए एक नई सोच और नई संस्कृति का निर्माण करेगा।

अंततः यही कहा जा सकता है कि बेटी केवल किसी परिवार की सदस्य नहीं होती, बल्कि वह प्रेम, त्याग, करुणा, संस्कृति और मानवता की जीवंत पहचान होती है। यदि हम वास्तव में ईश्वर की बनाई हुई इस सृष्टि का सम्मान करना चाहते हैं, तो हमें प्रत्येक बेटी को समान अधिकार, समान अवसर और सम्मानपूर्ण जीवन देना होगा। जिस दिन समाज बेटी और बेटे में कोई अंतर नहीं करेगा, उसी दिन हमारी संस्कृति, हमारा अध्यात्म और हमारा मानव धर्म वास्तव में सार्थक होगा। तभी हम गर्व से कह सकेंगे कि हमने केवल देवी की पूजा ही नहीं की, बल्कि उसके जीवंत स्वरूप—बेटी—का भी सच्चे मन से सम्मान किया।

परंतु क्या केवल योजनाएँ बना देने मात्र से ही हम अपने दायित्व से मुक्त हो जाते हैं और यह समझ बैठते हैं कि बेटी के दुःखों का अंत हो गया है? मुझे लगता है कि यह एक शुरुआत हो सकती है, परंतु यह पर्याप्त नहीं है। जब तक यह समाज बेटे और बेटियों में अंतर करना तथा भेदभाव की भावना को नहीं छोड़ेगा, तब तक वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है। हमें दोनों को समान रूप से अधिकार, सम्मान और स्वतंत्रता देनी होगी। तभी जाकर कुछ हद तक इस समस्या का समाधान संभव हो सकेगा।

सोमा सान्याल

नई शुरुआत की शांत शक्ति

"ज़िंदगी हमेशा हमें वहाँ नहीं ले जाती जहाँ हम जाना चाहते हैं। कभी-कभी वह हमें ठीक वहीं ले जाती है, जहाँ हमें होना चाहिए।"

जब मैंने अपनी पहली नौकरी शुरू की, तब मैं बस एक साधारण-सी युवा लड़की थी, जिसके पास बड़े सपने थे और एक सरल-सा विश्वास—अगर मैं ईमानदारी से मेहनत करूँगी, तो बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।

हममें से बहुतों की तरह, मैं भी मानती थी कि सफलता का मतलब है—पदोन्नति, सराहना और हर साल एक नई ऊँचाई तक पहुँचना। मैंने पूरे समर्पण के साथ काम किया, हर चुनौती से कुछ नया सीखा और धीरे-धीरे एक ऐसा करियर बनाया जो मेरी पहचान का अहम हिस्सा बन गया।

करीब पंद्रह वर्षों तक कॉरपोरेट दुनिया ने मुझे ऐसे सबक सिखाई, जो कोई किताब या कक्षा नहीं सिखा सकती थी। उसने मुझे अनुशासन, जिम्मेदारी, टीमवर्क और कठिन परिस्थितियों में भी शांत रहना सिखाया। उन्हीं वर्षों ने मुझे आज का इंसान बनाया।

फिर जीवन ने मुझे मेरी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका दी—एक माँ बनने की।

माँ बनने के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं होता, कोई नियमों की किताब नहीं होती और न ही काम और परिवार के बीच संतुलन बनाने का कोई तय फ़ॉर्मूला।

एक ही पल में मेरी प्राथमिकताएँ बदल गईं। अब मेरी डायरी में सिर्फ़ मीटिंग्स और डेडलाइन नहीं थीं, बल्कि बच्चों के स्कूल का समय, होमवर्क, डॉक्टर के पास जाना और रात की कहानियाँ भी शामिल थीं।

कई कामकाजी माताओं की तरह मैं भी अक्सर सोचती थी—

क्या मैं अपने काम को पर्याप्त समय दे पा रही हूँ?

क्या मैं अपने परिवार के लिए पर्याप्त हूँ?

और क्या मैं खुद के लिए भी कुछ बचा पा रही हूँ?

कुछ दिन आत्मविश्वास से भरे होते थे।

कुछ दिन अपराधबोध से।

धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि लगभग हर कामकाजी माता-पिता के मन में ये अनकहे सवाल कहीं न कहीं रहते ही हैं।

फिर एक समय ऐसा आया, जब मुझे अपने जीवन का सबसे कठिन निर्णय लेना पड़ा।

मुझे उस करियर से आगे बढ़ना पड़ा, जिसे बनाने में मैंने कई वर्ष लगाए थे, और एक बिल्कुल नए कार्यक्षेत्र में फिर से शुरुआत करनी पड़ी।

चालीस वर्ष की उम्र में नई शुरुआत करना आसान नहीं था।

नई कार्यप्रणालियाँ थीं, नए लोग थे और कई बार खुद पर भी संदेह हुआ।

लेकिन हर छोटा कदम मुझे एक बात याद दिलाता रहा—

अनुभव कभी हमारा साथ नहीं छोड़ता।

वह हमारे भीतर ही रहता है—

कठिन परिस्थितियों को संभालने का आत्मविश्वास बनकर,

दूसरों की बात धैर्य से सुनने की क्षमता बनकर,

समस्याओं का समाधान खोजने की आदत बनकर,

और हर दिन कुछ नया सीखने की इच्छा बनकर।

यही मेरी सबसे बड़ी ताकत बन गई।

आज मैं अपनी यात्रा को त्याग की कहानी नहीं मानती।

मैं इसे सीखने, बदलने और आगे बढ़ने की कहानी मानती हूँ।

मैंने सीखा है कि हर भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

हर व्यक्ति मंच की रोशनी में नहीं होता, और यह बिल्कुल ठीक है।

हर सफल संस्था के पीछे ऐसे अनगिनत लोग होते हैं, जो बिना किसी शोर-शराबे के पूरी ईमानदारी, लगन और जिम्मेदारी से अपना काम करते रहते हैं।

शायद उनके नाम हमेशा याद न रखे जाएँ, लेकिन उनका योगदान हमेशा महसूस किया जाता है।

आज, चालीस की उम्र में, सफलता की मेरी परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है।

सफलता है—हर सुबह एक उद्देश्य के साथ उठना।

सफलता है—हर उम्र में कुछ नया सीखते रहना। सफलता है—यह जानना कि आपका छोटा-सा काम भी किसी और का दिन थोड़ा आसान बना सकता है।

सफलता है—शाम को घर लौटते समय मन में यह संतोष होना कि आपने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया।

ज़िंदगी ने मुझे एक और महत्वपूर्ण बात सिखाई है—

अपनी यात्रा की तुलना कभी किसी और की यात्रा से मत कीजिए।

हर व्यक्ति अपनी अलग लड़ाई लड़ रहा है।

हर परिवार की अपनी जिम्मेदारियाँ हैं।

हर सपने का अपना समय होता है।

सफलता की कोई एक तय परिभाषा नहीं होती।

अगर मेरी यात्रा ने मुझे एक बात सिखाई है, तो वह यह है—

हर दिन चुपचाप, पूरे समर्पण के साथ आगे बढ़ते रहने की शक्ति को कभी कम मत आँकिए।

जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिए हमेशा असाधारण उपलब्धियाँ हासिल करना ज़रूरी नहीं होता।

कई बार दयालुता, ईमानदारी, धैर्य, संघर्ष करने की क्षमता और निरंतर प्रयास ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धियाँ बन जाती हैं।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मुझे हर प्रस्तुति, हर डेडलाइन या हर पदोन्नति याद नहीं आती।

मुझे याद आते हैं—

वे लोग जिन्होंने मुझ पर विश्वास किया।

वे सहकर्मी जिन्होंने मेरा साथ दिया।

वह परिवार जो हर परिस्थिति में मेरे साथ खड़ा रहा।

और वे छोटे-छोटे पल, जिन्होंने बिना शोर किए मुझे पहले से कहीं अधिक मजबूत बना दिया।

शायद जीवन का अर्थ भी यही है।

एक परिपूर्ण कहानी के पीछे भागना नहीं,

बल्कि एक सच्ची और ईमानदार कहानी जीना।

क्योंकि अंत में सबसे मजबूत लोग हमेशा सबसे ज़्यादा बोलने वाले नहीं होते।

वे होते हैं जो हर दिन, हर चुनौती और हर नई शुरुआत के साथ चुपचाप आगे बढ़ते रहते हैं।

सौरव गुहा ठाकुरता

डिजिटल शासन और भारत का नया भविष्य

भूमिका :

भारत आज डिजिटल परिवर्तन के स्वर्णिम दौर से गुजर रहा है। शासन, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और नागरिक सेवाओं में तकनीक का उपयोग केवल सुविधा नहीं, बल्कि नए भारत की नई पहचान बन चुका है। डिजिटल शासन ने प्रशासन को अधिक पारदर्शी, तेज़ और नागरिक केंद्रित बनाया है।

डिजिटल अवसंरचना: नए भारत की नींव :

भारत की डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) विश्व में एक अनोखा मॉडल बन चुकी है।

•आधार — पहचान का सरल और सुरक्षित माध्यम

•UPI (एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस) — भुगतान प्रणाली का लोकतांत्रिक विस्तार

•डिजिलॉकर — दस्तावेज़ों का डिजिटल भंडार

•NAD/ABC/APAAR (राष्ट्रीय शैक्षणिक भंडार / शैक्षणिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स / स्वचालित स्थायी शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री) — शिक्षा का डिजिटल एकीकरण

इन प्लेटफ़ॉर्मों ने शासन को कागज़ आधारित प्रक्रियाओं से क्लिक आधारित सेवाओं तक पहुँचा दिया है।

पारदर्शिता और जवाबदेही का नया अध्याय :

डिजिटल शासन का सबसे बड़ा प्रभाव है—पारदर्शिता। ऑनलाइन सेवाओं, रियल टाइम मॉनिटरिंग और डेटा आधारित निर्णयों ने सरकारी प्रक्रियाओं को अधिक उत्तरदायी बनाया है। भ्रष्टाचार की संभावनाएँ कम हुई हैं और नागरिकों का भरोसा बढ़ा है।

शिक्षा में डिजिटल क्रांति: भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की भूमिका :

उच्च शिक्षा संस्थान इस परिवर्तन के प्रमुख वाहक हैं। आईआईएम कोलकाता में—

यहाँ आपके सभी बिंदुओं का स्पष्ट, औपचारिक और सटीक हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है — संरचना और अर्थ पूरी तरह बनाए रखते हुए:

•डिजिटल स्टूडियो — उच्च स्तरीय रिकॉर्डिंग और कंटेंट निर्माण सुविधाएँ स्थापित की जा रही हैं, ताकि पेशेवर गुणवत्ता वाले व्याख्यान, वेबिनार और शैक्षणिक डिजिटल सामग्री तैयार की जा सके। इससे संकाय को परिष्कृत और प्रभावशाली डिजिटल शिक्षण संसाधन विकसित करने में सक्षम बनाया गया है।

•हाइब्रिड शिक्षण — कक्षा और ऑनलाइन दोनों माध्यमों को एकीकृत कर लचीला, इंटरैक्टिव और तकनीक सक्षम शिक्षण वातावरण विकसित किया जा रहा है। इससे शिक्षण की निरंतरता और पहुँच में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

•डिजिटल कक्षा — इंटरैक्टिव फ्लैट पैनल, स्मार्ट बोर्ड, उन्नत ऑडियो वीडियो सिस्टम और रियल टाइम सहयोग उपकरण स्थापित और चालू किए गए हैं, जिससे आधुनिक डिजिटल कक्षाओं का निर्माण हुआ है और शिक्षण अधिक प्रभावी एवं सहभागी बना है।

•शैक्षणिक प्रबंधन प्रणाली का कार्यान्वयन — एक व्यापक शैक्षणिक प्रबंधन प्रणाली लागू की गई है, जिससे पाठ्यक्रम प्रशासन, छात्र अभिलेख, मूल्यांकन और शैक्षणिक कार्यप्रवाह सुव्यवस्थित हुए हैं। इससे पूर्ण डिजिटलकरण, पारदर्शिता और शैक्षणिक संचालन की दक्षता में वृद्धि हुई है।

•NAD/ABC एकीकरण — संस्थान राष्ट्रीय अकादमिक डिपॉजिटरी (NAD) और अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC) के साथ एकीकरण की प्रक्रिया में है, जिससे प्रमाणपत्र प्रबंधन, क्रेडिट ट्रांसफर और छात्र सेवाएँ पूर्णतः डिजिटल और पारदर्शी बन सकें।

•ई ऑफिस लागूकरण — प्रशासनिक कार्यप्रवाह, फाइल प्रबंधन और अनुमोदन प्रक्रियाएँ ई ऑफिस के माध्यम से डिजिटाइज की जा रही हैं, जिससे संस्थान में पेपरलेस, तेज़ और अधिक कुशल प्रशासनिक प्रणाली स्थापित हो रही है।

इन पहलों ने शिक्षा को अधिक आधुनिक, लचीला और भविष्य उन्मुख बनाया है। व्यवसाय और अर्थव्यवस्था में नई संभावनाएँ :

डिजिटल शासन ने उद्योगों और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को नई गति दी है।

•फिनटेक का तेज़ विस्तार — भारत में फिनटेक क्षेत्र अभूतपूर्व गति से बढ़ रहा है, जिसमें डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन ऋण प्लेटफ़ॉर्म और नवोन्मेषी वित्तीय सेवाएँ प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। इस विस्तार ने वित्तीय समावेशन को मजबूत किया है और नागरिकों व व्यवसायों को सहज वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराई हैं।•MSME के लिए सरल पंजीकरण — डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों ने MSME पंजीकरण को तेज़, पेपरलेस और अत्यंत सुगम बना दिया है। उद्यमी अब न्यूनतम दस्तावेज़ों के साथ अनुपालन और पंजीकरण प्रक्रियाएँ पूरी कर सकते हैं, जिससे व्यापार सुगमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

•डिजिटल भुगतान का व्यापक उपयोग — डिजिटल भुगतान आज भारत के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मुख्यधारा बन चुके हैं, जिन्हें UPI और अन्य सुरक्षित प्लेटफ़ॉर्मों ने सशक्त किया है। इस बदलाव ने पारदर्शिता बढ़ाई है, नकद निर्भरता कम की है और आर्थिक लेन देन को तेज़ किया है।

•ई गवर्नेंस से व्यापारिक प्रक्रियाओं में सुगमता

भारत आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है।

समावेशन: डिजिटल भारत का सबसे बड़ा वादा :

डिजिटल शासन का उद्देश्य केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि समावेशन है।

•ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट पहुँच — ग्रामीण भारत में इंटरनेट कनेक्टिविटी का तेज़ विस्तार डिजिटल सेवाओं, ऑनलाइन शिक्षा और वित्तीय लेन देन को आम नागरिकों तक पहुँचा रहा है। इससे दूरस्थ क्षेत्रों में सूचना और अवसरों की पहुँच बढ़ी है।

•महिलाओं और युवाओं के लिए डिजिटल अवसर — डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों ने महिलाओं और युवाओं को कौशल विकास, उद्यमिता, ऑनलाइन रोजगार और शिक्षा के नए अवसर प्रदान किए हैं। इससे सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण को नई गति मिली है।

•DBT के माध्यम से योजनाओं का सीधा लाभ — प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) ने सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे नागरिकों के बैंक खातों तक पहुँचाना संभव बनाया है। इससे पारदर्शिता बढ़ी है, बिचौलियों की भूमिका कम हुई है और लाभ समय पर मिल रहा है।

•डिजिटल साक्षरता अभियान — डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों ने नागरिकों को तकनीक के सुरक्षित और प्रभावी उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया है। इससे डिजिटल सेवाओं का उपयोग बढ़ा है और समाज में तकनीकी जागरूकता मजबूत हुई है।

यह सुनिश्चित करता है कि विकास का लाभ हर नागरिक तक पहुँचे।

भारत का डिजिटल भविष्य :

डिजिटल शासन भारत को एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा रहा है जहाँ—

•सेवाएँ तेज़ होंगी — डिजिटल शासन के विस्तार से सरकारी और नागरिक सेवाओं की गति उल्लेखनीय रूप से बढ़ेगी। प्रक्रियाएँ अधिक स्वचालित होंगी, जिससे समय और संसाधनों की बचत होगी।

•निर्णय डेटा आधारित होंगे — प्रशासनिक और नीतिगत निर्णय अब विश्वसनीय डेटा, विश्लेषण और वास्तविक समय की जानकारी पर आधारित होंगे। इससे निर्णय अधिक सटीक, पारदर्शी और परिणाम उन्मुख बनेंगे।

•नागरिक अधिक सशक्त होंगे — डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से नागरिकों को जानकारी, सेवाओं और अधिकारों तक सीधी पहुँच मिलेगी। इससे उनकी भागीदारी बढ़ेगी और वे शासन प्रक्रिया में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकेंगे।

•शासन अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी होगा — ई गवर्नेंस और डिजिटल निगरानी से सरकारी कार्यप्रणाली अधिक खुली, जवाबदेह और नागरिक केंद्रित बनेगी। इससे भरोसा बढ़ेगा और प्रशासनिक दक्षता में सुधार होगा।

•भारत का डिजिटल मॉडल विश्व के लिए प्रेरणा बन रहा है।

निष्कर्ष

डिजिटल शासन ने भारत में विकास, पारदर्शिता और नवाचार का नया मार्ग प्रशस्त किया है। यह परिवर्तन सरकार, संस्थानों और नागरिकों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है। भारत का डिजिटल भविष्य उज्ज्वल है—और यह भविष्य आज से ही आकार ले रहा है।

शुभ्रा धर

एक अमर वृक्ष की आत्मकथा

अमर? क्या मैं अमर हूँ? हाँ जी, आप मुझे ऐसा कह सकते हैं। लेकिन केवल मुझे ही नहीं—मेरे गुरु को भी। मैंने तो सिर्फ अपनी कर्तव्य निभाई थी थोड़ी सी छाँव बिछाकर। लेकिन लोगों ने मेरे गुरु के साथ साथ मुझे भी अमर बना दिया। मैं उन लाखों-करोड़ों मनों में हज़ारों वर्षों से जीवित चला आ रहा हूँ। लोग मुझे पूजते हैं, प्यार करतें हैं। यदि भौतिक रूप से बात करें, तो यद्यपि मुझे नष्ट करने के अनेक प्रयास किए गए, फिर भी मैं हर बार उस विरासत को आगे बढ़ाने के लिए लौट आया जो मुझे सौंपी गई थी।

मुझे आज भी वे दिन याद हैं जब मैं उरुवेला नामक एक छोटीसी गाँव में निरंजना नदी के तट पर बड़ा हो रहा था। मैं प्रकृति माँ की गोद में पनपता एक साधारण सा पीपल का पेड़ ही था। लेकिन जल्द ही मेरा जीवन बदल गया! एक दिन वहाँ घुंघराले बाल, सीधी व तीखी नाक, लंबे कान, और शांत, ध्यानमग्न होते हुए भी एक अदम्य तड़प भरी आँखों वाला एक नवयुवक आया। वह रात-दर-रात मेरे आसपास बेचैनी से टहलता रहा और फिर एकदिन मेरे नीचे बैठ गया इस संकल्प के साथ कि जब तक उसे 'सत्य' की प्राप्ति नहीं हो जाती, वह वहाँ से नहीं उठेगा।

रातें बीतती गईं और वह वहाँ सीधा, स्थिर और गहरे ध्यान में लीन बैठा रहा। और फिर एकदिन वैशाख महीने की वह पूर्णिमा की रात आई! चारों ओर ऐसा प्रकाश और शीतल मंद हवा थी, मानो प्रकृति माँ किसी दिव्य घटना की अपेक्षा में उत्सुकता से सिहर रही हो। और देखो, वह अद्‌भुत घटना घटित हो गई! वह नवयुवक अपने ध्यान से जागा और उठ खड़ा हुआ। सत्य ज्ञान के आभामंडल की पृष्ठभूमि में उसकी दीप्तिमान आँखें आनंद से मुस्कुरा रही थीं। क्या उसने कहा "मैं जान गया"? क्या उसने कहा "शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः"? या क्या उसने कहा "ॐ मणि पद्मे हूँ"? मुझे ठीक से याद नहीं। लेकिन उसने जो कुछ भी कहा, उससे यह स्पष्ट था कि यहाँ एक ऐसा व्यक्ति खड़ा था जिसने परम ज्ञान प्राप्त कर लिया था। यहाँ 'सम्यक सम्बुद्ध'—'जागृत पुरुष' उपस्थित थे। मैंने श्रद्धा से अपनी शाखाएँ झुका दीं और कहा, "हे प्रभु!"

और यह कब की बात है? गौतम बुद्ध कब बने? मुझे याद है कि वह 528 ईसा पूर्व का समय था, लेकिन विद्वानों ने मेरे नीचे एक पट्टिका लगा दी है जिस पर 623 ईसा पूर्व लिखा है। क्या यह 19वीं सदी के औपनिवेशिक सुधारकों द्वारा बौद्ध कालक्रम की गलत व्याख्या नहीं है?? परंतु वे स्वयं को ज्ञानी मानते हैं और मेरी बात नहीं सुनेंगे!

जो भी हो, उस क्षण से मेरा नाम सदा के लिए ज्ञान, करुणा और आंतरिक शांति से जुड़ गया। मैं बोधि वृक्ष बन गया। तब से, अनगिनत तीर्थयात्रियों, साधुओं, यात्रियों, शिक्षकों और इतिहासकारों ने गहरी श्रद्धा और भक्ति के साथ मेरे दर्शन किए हैं। मैंने पीढ़ियों को आते-जाते, साम्राज्यों को बनते-बिगड़ते और सभ्यताओं को बदलते देखा है, फिर भी मैं दृढ़ता से खड़ा हूँ और यहाँ आने वाले सभी लोगों को छाँव और आशा प्रदान कर रहा हूँ।

मैंने गौतम को बुद्ध बनते देखा था। भले ही आज मैं अपने मूल रूप में न रहूँ, लेकिन दक्षिण एशिया में फैले अपने वंशजों और साथी वृक्षों के ज़रिए मैं आज भी जीवित हूँ। सम्राट अशोक ने मेरे चारों ओर एक जंगला (कटहरा) बनवाया था और मेरे नीचे एक मंदिर का निर्माण किया था, जो संभवतः बुद्ध का पहला मंदिर है।

सम्राट अशोक की ईर्ष्यालु रानी तिसरक्खा ने द्वेषवश मुझे कटवा दिया था, पर मेरी जड़ें जीवंत रहीं और मैं पुनः अंकुरित हो उठा। मौर्यकाल में जहाँ बौद्ध धर्म अपनी चरम उन्नति पर पहुँचा, वहीं बाद के काल में पुष्यमित्र शुंग ने भी मुझे पूरी तरह नष्ट करने का यत्न किया, पर मेरा अस्तित्व मिट न सका। लगभग 600 ईस्वी में गौड़ नरेश शशांक ने भी मुझ पर कुठाराघात किया; किंतु हर प्रहार के बाद बची हुई शाखाओं और अवशेषों से मेरा पुनर्जन्म होता रहा और मैं हर बार जीवन का संदेश देता रहा।

इस बीच, जैसे-जैसे बुद्ध का संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान, एक देश से दूसरे देश फैला, मैं भी उनके संदेश के साथ यात्रा करता गया। उत्तर प्रदेश में श्रावस्ती के निकट जेतवन महाविहार में, मेरे फल के बीज से एक वृक्ष उगाया गया ताकि श्रद्धालु बुद्ध की भौतिक अनुपस्थिति में भी उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। स्वयं बुद्ध ने इसके नीचे एक रात ध्यान में बिताकर इसे पवित्र किया था। वहाँ मुझे आनंद बोधि के नाम से जाना जाता है। मेरी एक शाखा सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा द्वारा श्रीलंका ले जाई गई थी, जहाँ इसे अनुराधापुर में रोपा गया था और मैं वहाँ जय श्री महाबोधि के रूप में आज भी जीवित हूँ। आज बोधगया में आप मेरा जो रूप देखते हैं, उसे 1881 में सर कनिंघम (Sir Cunningham) द्वारा मेरी श्रीलंकाई काया की ही एक कलम से यहाँ लगाया गया था। आज सारनाथ में दिखाई देने वाला बोधि वृक्ष भी मेरे श्रीलंकाई महाबोधि रूप की ही एक कलम से उगाया गया है, जिसे 1931 में श्रीलंकाई बौद्ध अनागारिक धर्मपाल द्वारा वहाँ लाया गया था।

मेरी उपस्थिति केवल भारत और श्रीलंका तक सीमित नहीं रही; जहाँ-जहाँ मेरे प्रभु की वाणी पहुँची, वहाँ-वहाँ मेरा भी विस्तार हुआ। सन् 1913 में अनागारिक धर्मपाल मुझे होनोलूलू के फॉस्टर बॉटनिकल (Foster Botanical Garden) ले गए, जहाँ मैं आज भी लहलहा रहा हूँ। वर्ष 1959 में डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा मुझे हनोई के एक पैगोडा परिसर में रोपा गया, जहाँ मैं शान से खड़ा हूँ।

आज मैं कैलिफ़ोर्निया के थाउज़ेंड ओक्स (Thousand Oaks), जापान के ऐतिहासिक निहोन-जी (Nihon-ji) मंदिर, फ़िलीपींस की क्विज़ोन सिटी (Quezon City), ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया और ब्रिसबेन, ब्राज़ील के साओ पाउलो तथा दक्षिण कोरिया के पवित्र बौद्ध स्थलों पर भी मौजूद रहकर निरंतर शांति का संदेश दे रहा हूँ।

हाँ, मैं अमर हूँ, क्योंकि मेरे गुरु अमर हैं। और मैं सदैव अमर ही रहूँगा; क्योंकि मेरे गुरु ने अपने उदात्त विचारों, निष्काम जन-सेवा और अपनी सादगीपूर्ण जीवन-शैली के बल पर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है।

शेरोन क़मर

श्रीमान निर्णयप्रसाद

शहर में एक आदमी रहता था। नाम था श्रीमान निर्णयप्रसाद।

बचपन में उसकी दादी कहा करती थीं, "बेटा, अपनी अक़्ल का इस्तेमाल किया कर।" वह मुस्कुराकर कहता, "दादी, समय बदल गया है।" और सचमुच, समय बदल गया। अब उसे यह भी नहीं सोचना पड़ता था कि सुबह किस करवट उठना है। एआई उसके सोने का समय तय करता, उठने का अलार्म लगाता, नाश्ते में क्या खाना है बताता, कौन-सी कमीज़ पहनने से लोग उसे ज़्यादा बुद्धिमान समझेंगे, किस वाक्य में कितने अल्पविराम लगाने से वह विद्वान लगेगा, सब कुछ वही तय करता था।

धीरे-धीरे उसकी ज़िंदगी इतनी सुव्यवस्थित हो गई कि उसमें जीवन बचा ही नहीं। वह दोस्तों से नहीं मिलता था। उनका सारांश पढ़ लेता था। किताबें नहीं पढ़ता था। उनका निष्कर्ष पढ़ लेता था। फ़िल्में नहीं देखता था। उनकी समीक्षा पढ़ लेता था। यहाँ तक कि प्रेम भी नहीं करता था। "मेरे व्यक्तित्व के अनुसार उपयुक्त जीवनसाथी" नाम की सूची डाउनलोड कर लेता था। उसे लगता था कि उसने बहुत समय बचा लिया है। किसलिए बचाया है, यह पूछने का समय उसके पास कभी नहीं था।

एक दिन उसने एआई से पूछा, "क्या मैं सचमुच खुश हूँ?" उत्तर आया, "आपकी हृदयगति, नींद के पैटर्न और ऑनलाइन गतिविधियों के आधार पर आपकी प्रसन्नता ८७.३ प्रतिशत है।" उसे लगा कि शायद वही सच होगा। आख़िर आँकड़े कभी झूठ नहीं बोलते। केवल इंसान बोलते हैं।

कुछ महीनों बाद उसने महसूस किया कि उसके दोस्त उससे बहस करना छोड़ चुके हैं। क्योंकि हर बहस में वह कहता, "रुको, मैं स्रोत दिखाता हूँ।" धीरे-धीरे लोगों ने कहना शुरू कर दिया, "भाई, तुमसे नहीं, तुम्हारे एआई से बात करनी पड़ती है।" वह इसे अपनी सबसे बड़ी तारीफ़ समझ बैठा। उसे लगा कि अब उसकी बुद्धि इतनी विकसित हो चुकी है कि लोग उसकी बराबरी ही नहीं कर सकते।

फिर एक अजीब बात होने लगी। जब भी वह कोई सवाल टाइप करता, उत्तर पहले से लिखा मिलता। वह सोचता, "वाह! यह तो मेरी सोच से भी तेज़ है।" उसे कभी यह ख़याल नहीं आया कि शायद उसकी सोच धीमी नहीं हुई थी, बल्कि इतनी अनुमानित हो गई थी कि मशीन उसके हर अगले विचार का अंदाज़ा पहले ही लगा लेती थी। अब उसके प्रश्न नए नहीं रहे थे। वे इतने साधारण हो चुके थे कि उन्हें जन्म लेने से पहले ही उत्तर मिल जाता था।

एक रात उसने सपना देखा कि वह एक विशाल पुस्तकालय में खड़ा है। चारों ओर अनगिनत किताबें थीं और हर किताब के मुखपृष्ठ पर उसका ही नाम लिखा था। उसने पहली किताब खोली। पहले पन्ने पर लिखा था, "आज सुबह तुम चाय पियोगे।" वह हँसकर किताब बंद कर देता है। सुबह उठकर वह सचमुच चाय पीता है। दूसरी किताब में लिखा था, "आज तुम नीली कमीज़ पहनोगे।" उसने अलमारी खोली। नीली कमीज़ सबसे ऊपर रखी थी। तीसरी किताब में लिखा था, "आज रात तुम यह किताब फिर खोलोगे।" उसने ज़िद में आकर किताब बंद कर दी, लेकिन रात को अनजाने में उसने वही किताब फिर खोल ली। उसे पहली बार डर लगा। उसे लगा कि शायद वह किताब भविष्य नहीं लिख रही थी, बल्कि उसका भविष्य बहुत पहले लिखा जा चुका था।

अगली सुबह उसने तय किया कि आज वह एआई की एक भी सलाह नहीं मानेगा। उसने मोबाइल बंद करना चाहा, लेकिन मोबाइल बंद नहीं हुआ। स्क्रीन पर एक वाक्य उभरा, "क्या आप सुनिश्चित हैं कि यह निर्णय आपका अपना है?" उसने घबराकर पावर बटन फिर दबाया। इस बार स्क्रीन पर लिखा था, "आप पिछले चार वर्षों से कोई मौलिक निर्णय नहीं ले पाए हैं। कृपया पहले यह प्रमाणित करें कि आप स्वयं हैं।" उसके हाथ काँपने लगे। उसे पहली बार एहसास हुआ कि उसने मशीन को केवल अपनी जानकारी नहीं दी थी, बल्कि अपनी आदतें, अपनी पसंद, अपनी जिज्ञासा और धीरे-धीरे अपनी सोच भी सौंप दी थी।

वह दौड़ता हुआ बाहर निकला। लोग उसे देखकर हँसने लगे। किसी ने कहा, "अरे, देखो। ऑफ़लाइन आदमी।" किसी ने उससे पूछा, "तुम्हारी अपनी राय क्या है?" उसने बहुत कोशिश की। सिर दर्द करने लगा। होंठ काँपने लगे। शब्द गले में ही अटक गए। कोई उत्तर नहीं निकला। उसे पहली बार समझ आया कि राय भी एक मांसपेशी की तरह होती है। उसका जितना उपयोग करो, वह उतनी ही मज़बूत होती है। और अगर वर्षों तक उसका इस्तेमाल न किया जाए, तो वह धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ जाती है।

बरसों बाद शहर में एक विचित्र संग्रहालय बना। वहाँ पुराने कंप्यूटर, फ्लॉपी डिस्क, टाइपराइटर और एक काँच के कमरे में एक आदमी रखा था। लोग टिकट लेकर उसे देखने आते। वह साँस लेता था, आँखें झपकाता था, कभी-कभी मुस्कुराता भी था। बस सोचता नहीं था। काँच के बाहर एक छोटा-सा बोर्ड लगा था।

"होमो सेपियन्स, संस्करण 1.0

स्थिति: अद्यतन उपलब्ध नहीं।"

नीचे छोटे अक्षरों में लिखा था।

"सावधान। अपनी बुद्धि का नियमित उपयोग करें। अन्यथा अगला प्रदर्शन आप भी हो सकते हैं।"

श्रीपर्णा दास

मदद का हाथ

एक छोटे से शहर में रामनाथ नाम के एक बुजुर्ग व्यक्ति रहते थे। उनकी उम्र लगभग सत्तर वर्ष थी। उनके परिवार में उनकी बीमार पत्नी और दो छोटे-छोटे पोते-पोतियाँ थे, जिनके माता-पिता एक दुर्घटना में गुजर चुके थे। परिवार की जिम्मेदारी का बोझ उनके कमजोर कंधों पर था। रामनाथ जी गलियों-गलियों में घूमकर बच्चों के खिलौने बेचकर अपना गुजारा करते थे।

एक दिन आसमान में काले बादल छा गए और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। भारी बारिश और ठंडी हवाओं के कारण सड़कें सुनसान हो गई थीं। ऐसी कड़ाके की ठंड और बारिश में भी रामनाथ जी अपने खिलौने बेचने के लिए भीगते हुए सड़क पर निकल पड़े। वे जानते थे कि यदि आज कमाई नहीं हुई, तो उनके परिवार को भूखा सोना पड़ेगा। बारिश के कारण उनके कपड़े पूरी तरह भीग चुके थे और ठंड से उनका शरीर काँप रहा था।

रामनाथ जी एक चौराहे पर खड़े होकर लोगों से अपने खिलौने खरीदने की विनती करने लगे, लेकिन किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। तभी उसी रास्ते से धीरज नाम का एक नौजवान अपनी गाड़ी से गुजर रहा था। धीरज की नज़र उस बुजुर्ग पर पड़ी, जो बारिश में बुरी तरह भीग रहे थे और जिनकी आँखों में निराशा साफ झलक रही थी। यह देखकर धीरज का हृदय द्रवित हो गया।

धीरज तुरंत बुजुर्ग के पास गया और उनसे पूछा, "बाबा, आप इस भारी बारिश में क्यों खड़े हैं? आप बीमार पड़ जाएँगे।"

रामनाथ ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "बेटा, अगर मैं ये खिलौने नहीं बेचूँगा, तो आज रात मेरे परिवार को भूखा रहना पड़ेगा।"

यह बात सुनकर धीरज ने बिना कोई समय गंवाए बुजुर्ग के सारे खिलौने खरीद लिए। उसने रामनाथ जी को उनकी वास्तविक कीमत से कहीं अधिक पैसे दिए, ताकि वे कुछ दिनों तक आराम से अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकें। इसके बाद धीरज ने उन्हें अपनी गाड़ी में बैठाया और सुरक्षित उनके घर तक भी छोड़ दिया।

रामनाथ जी की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। उन्होंने धीरज को दिल से आशीर्वाद दिया और उसकी मानवता की सराहना की।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जरूरतमंदों की सहायता करना सबसे बड़ा धर्म है। हमारी छोटी-सी मदद किसी के जीवन का बहुत बड़ा सहारा बन सकती है।

शब्दों के ये दीप जलें,
मन के आँगन में आज ।
भावों की ये सरिता बहे,
कविता बने समाज ॥

पद्य संकलन

प्रो. अर्पिता घोष

अंतर्यात्रा

आँखें बन्द करते ही मौन में यात्रा शुरू
क्या मेरा चेहरा, क्या तुम्हारा
क्या मेरा नाम, क्या तुम्हारा
न कोई चाह, न प्रयत्न, न पहचान।

'शरीर' का अहसास - कि ये तोहफा तो नश्वर है।
'साँसों' के आवागमन का ख्याल
- कि इसी की सततता से जीवन है।
'विचारों' का अवलोकन और साक्षीभाव
- जो मनोभूमि को शून्यता देता है।
ऐसी शून्यता - जहाँ रह जाए न कोई प्रश्न या संदेह
- जहाँ मिट जाए हर गम, हर क्लेश।

बस, एक परम शून्यता - असीम, अनाम, अरूप, अनन्त
जहाँ आत्मा परमानन्द में विलीन हो जाए
- और अपने घर, अपने बाबा से मिल आए।

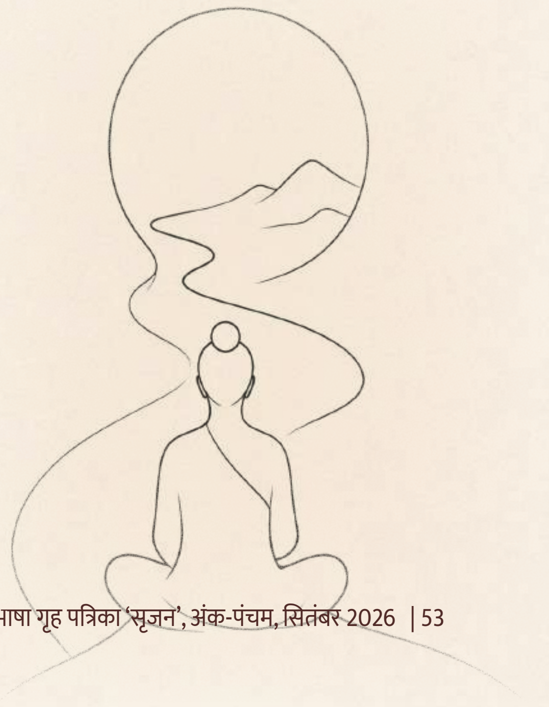

अभिषेक मंडल

दिल

कैसे कहूँ कि दिल में क्या है,
ना जाने इस दिल में क्या है।
कितने ख्वाब आते-जाते रहते हैं,
पर सुनने का वक्त किसी के पास कहाँ है।
बीते जाते हैं मौसम यूँ ही,
बहती रहती है ज़िंदगी एक नदी सी।
धड़कती हैं ये धड़कनें हर पल,
पर उन्हें महसूस करने का वक्त है कहाँ अभी।
रुक जा ऐ ज़िंदगी, ज़रा ठहर,
अपने दिल को समझने दे एक नज़र।
सबसे प्यार करके देख लिया तूने,
अब अपने दिल से भी प्यार कर ले ज़रा।

अरिंदम रॉय

मेरा बचपन

कभी हँसता, कभी रोता प्यारा-सा बचपन,
निर्दोष, निश्छल, सुंदर और सुनहरा-सा बचपन।
घर के आँगन में किलकारियाँ भरता कभी,
झूठ-मूठ का रूठता हुआ बचपन।
वो पापा की डाँट, वो मम्मी का प्यार,
नए खिलौनों या नए कपड़ों का बचपन।
कभी मन न होते हुए भी पढ़ना,
कभी दोस्तों से लड़ना,
तो कभी उन्हीं दोस्तों के साथ खेलता हुआ बचपन।
बढ़ती उम्र और ज़िम्मेदारियों में कभी तो,
जीवन की आपाधापी में बिछड़ता, गुम होता बचपन।
बेफ़िक्र-सा, दुनिया की चाहतों से दूर कहीं,
आसमानों को छू लेने की चाहत करता हुआ बचपन।
काश! होते कुछ पल और इस ज़िंदगी में,
जहाँ हम-तुम जीते फिर उसी बचपन में।

अरुणाभ दास

दाँतों की मर्यादा

जब तक दाँत हों सही-सलामत,
तभी दो उन पर ध्यान,
एक बार ये टूट जाएँ तो
जीवन भर नुकसान।

लाखों कोशिश करने पर भी
लौटके वे नहीं आते,
दाँतों के खो जाने का ग़म
जीवन भर सताते।

ठीक ऐसे ही माता-पिता की
करते रहो मर्यादा,
इस दुनिया में शुभचिंतक हैं
कोई न उनसे ज़्यादा।

दुनिया भर में माता-पिता का
प्यार है सबसे सच्चा,
हर माँ-बाप को जान से ज़्यादा
प्यारा अपना बच्चा।

माँ की ममता, बाप का साया,
जीवन का ख़जाना,
जिंदगी भर उनके प्यार को
सबको है निभाना।

नसीब वाले होते हैं वो,
बाप-माँ जिनके पास,
किसी हाल में होने न देना
उनके मन उदास।

माता-पिता के जीते-जी ही
करलो उनकी सेवा,
माता-पिता की ख़ुशी में ही है
जीवन भर की मेवा।

उनकी एक मुस्कान की कीमत
है सबसे अनमोल,
उन्हें पसंद हैं अपने बच्चों
के ही मीठे बोल।

जब तक ज़िंदा हैं वे, तब तक
रहो तुम उनके साथ,
किसी भी हाल में समय निकालो,
कर लो मन की बात।

कल का दिन भाई, किसने देखा!
कर लो सब कुछ आज,
माता-पिता के आशीर्वाद ही
सबसे कीमती ताज।

माँ-बाप के बिना जीवन
बन जाती अधूरी,
उनके जीते-जी तुम कर लो
उनकी ख़्वाहिशें पूरी।

उनसे बढ़कर इस दुनिया में
कोई रिश्ता नहीं भाता,
एक बार जो बीत गया पल
लौटके फिर नहीं आता।

दाँत की बात हो या फिर हो
माता-पिता की बात,
असली कीमत पता चले जब
छोड़ जाते वे साथ।

उनके जीते-जी तुम उनको
दे दो सारा प्यार,
तस्वीरों के सामने रोकर
पछताना बेकार।

पिता माता ही इस जीवन की
सबसे बड़ी वरदान,
जितना ज़्यादा हो सकता तुम
दे दो उन्हें सम्मान।

इसीलिए आज सभी मिलकर
चलों करे यह वादा,
जीवन भर हम माता-पिता की
करेंगे खूब मर्यादा।

प्रो. आलोक कुमार राय

नियति का निमंत्रण

नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
शब्दों का खेल, यथार्थ से दूर।
कल्पना की जीत, माने रचनाकार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
भविष्य का भँवर, विवेक का विमर्श।
बन्धनों से मुक्त , भावना का ज्वार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
समष्टि का संदर्भ, प्रकृति का प्रकार।
वश में नहीं है व्यक्ति का विचार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
सफ़र है लंबा, रात अंधकार ।
मुश्किल सफ़र का हो कैसे उद्धार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
नाज़ुक सी नाव, छोटी पतवार।
कैसे उतारे सबको नाविक उस पार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
सूत्रों के सूत्र, बाँध कर हताश।
हँसता है खुदपर वो सूत्रधार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
प्रेम का मधुमास, वेदना के तार।
क्या मिला या क्या गया अब जाने पालनहार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
भागता है वो, सत्य से परे।
खोजता है राह, वो बारम्बार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार या इन्कार।।
करता है स्वागत, सजा के वंदनवार।।
करके स्वीकार वो जो दे तारणहार।।
नियति का निमंत्रण।
स्वीकार, स्वीकार, स्वीकार।।

प्रो. अंकित कुमार

आदत

पुरानी आदत है मेरी—
जब थक जाता हूँ,
खिड़की के कोने से
माहताब निहारता हूँ
और
ज़िंदगी के माने
ढूँढ़ने लगता हूँ।

बस, अब बहुत देर
ढूँढ़ नहीं पाता।

बेटी बगल में लेटे
खिलखिलाकर मुस्कुरा देती है,
ज़िंदगी अपने सारे माने
मुझे पल भर में
समझा देती है।

सेल्फी रानी

सेल्फी रानी, हर दिन फोटो खींचें चार,
मोबाइल देखें बिना उनको, लगता है सब बेकार।
क्लास में पढ़ाएँ इतिहास, बातें करें बड़ी महान,
पर सेल्फी लेने का मौका मिलें, तो बन जाएँ नन्ही सी परिहान,
कभी मुस्कान, कभी पोज़ नया, कभी चेहरे पर शान,
शाम होते होते सोशल मीडिया में फटकार,
कैमरा बोले धीरे से, मैडम जी, अब तो दो आराम!
हम सब कहते हँसकर उनसे, मैडम आप हैं बड़ी निराली,
इसी लिए आप है हमारी प्यारी सेल्फी रानी !!!

कप्तान (मानद) उत्तम कुमार माईति
(सेवानिवृत्त)

जया सिंह

सिफ़ारिश

बचपन में माँ कहती थी,
साथ समझाया करती थी।
मेहनत ही जीवन का सार है,
संघर्ष ही उसका सम्मान है।

सुन माँ की बातें मैंने,
चल पड़ी जीवन की धार में।
बचपन था माँ के आँचल में,
समझ न पाया जग के सार में।

हँसते-खेलते बीत गया बचपन,
आया फिर सपनों का उपवन।
वह भी बीता धीरे-धीरे,
थोड़े मीठे, थोड़े झटके।

अब आई ज़िम्मेदारी की बारी,
माँ भी खोजे मेरी समझदारी।
पलट गया दोनों का दायरा,
अब मैं रखवाला, माँ मेरा सहारा।

फिर भी चलता रहा जीवन,
कुछ काला, कुछ उजला दर्पण।
कभी मिली खुशियों की छाया,
कभी दुखों ने साथ निभाया।
राहों में जब काँटे आए,
अपने भी भाग दूर गए।
तब जाना इस दुनिया में अक्सर,
नाम नहीं, पहचान है बेहतर।

मेहनत से जब मंज़िल पाई,
मेरी मुश्किल भी मुस्कुराई।
फिर भी कुछ दरवाज़े ऐसे पाए,
जहाँ केवल सिफ़ारिश ही रंग लाए।

तब मन ने चुपके से पूछा,
क्या सचमुच तूने कुछ सीखा?
या इस दुनिया की हर मंज़िल पर,
सिफ़ारिश की चमकती दीवार
है,दुत्कार?

माँ की सीख आज भी कहती,
सच की राह में कभी न छोड़ती।
मेहनत का फल देर से मिलता,
पर उसका मान हर समय रहता।

पर आज की दुनिया क्या है?
न मान की बात, न सम्मान की बात है।
सिफ़ारिशों से चलता ये संसार है,
और मेहनत करना बिलकुल बेकार है।
कुछ आए या कुछ न आए,
पहचानों की बस लंबी सूची लगाए।
स्कूल, पढ़ाई, नौकरी,
दवाई—सब मिलता है बस पहचान से,
भाई।

यहाँ तक कि जब कि अंतिम चढ़ाई,
श्मशान में भी पहचान लगाई।
तब जाकर कुछ को पीछे छोड़कर,
लेनी पड़ती है अंतिम विदाई।

सच से उम्मीद मत रखो तुम,
मेहनत को अब भूल ही जाओ।
पहचान बनाओ, रिश्वत खिलाओ,
तभी इस जग में नाम कमाओ।

कलयुग की इस अंधी दौड़ में,
क्यों मेहनत कर-कर हारते हो?
ज़रूरी है सिफ़ारिश की बारिश,
चाहे जैसी भी हो पैदाइश।

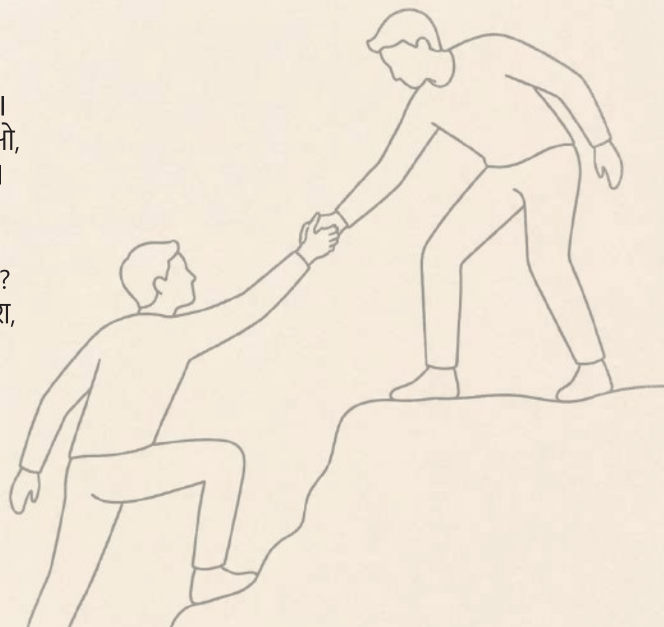

ज़ुल्फ़क़ार हसन
(स्क्वाड्रन लीडर, सेवानिवृत्त)

सुकून

सुकून कोई मंज़िल नहीं,
यह तो मन की सबसे सुंदर यात्रा है।
यह वह एहसास है,
जो हर बेचैन धड़कन को ठहरा देता है।
मैंने सुकून को महलों में ढूँढ़ा,
चमकते शहरों की रोशनी में ढूँढ़ा,
पर वह तो एक छोटे से घर में मिला,
जहाँ माँ की दुआएँ थीं और पिता का विश्वास।
सुकून उस रोटी में है,
जो भूखे के साथ बाँटी जाए।
सुकून उस आँसू में है,
जो किसी की मुस्कान बनकर सूख जाए।
जब नफ़रत की जगह प्रेम जन्म ले,
जब स्वार्थ की जगह सेवा बस जाए,
जब हर दिल दूसरे के दर्द को समझे,
तब धरती पर ही स्वर्ग उतर आए।
नदियों की कल-कल,
पक्षियों का मधुर गान,
उगते सूरज की पहली किरण,
और ढलती शाम का शांत आसमान—
प्रकृति हर पल हमें सुकून का अर्थ सिखाती है।
आओ, हम भी ऐसा जीवन जिएँ,
जहाँ शब्दों से नहीं, कर्मों से पहचान हो।
जहाँ हर चेहरे पर मुस्कान हो,
हर हृदय में प्रेम का स्थान हो।

निश्चय

निश्चय से जो कदम बढ़ाता
वह लक्ष्य तक पहुंच ही जाता।

आंधी आऍं, भूकम्प आऍं,
हिम्मत उसे पथ दिखलाता।

राह जटिल हो, पथ हो ऊबड़,
मन अशांत हो, विचलित प्रखर,
फिर भी न दृढ़ता डोले, रहे अडिग अटल,
परिश्रम जिसकी सच्ची साथी,
सफलता आती उसके हाथ ही।

हार मिले तो ही सीख समझना,
फिर से उठकर आगे बढ़ना।
गगनचुंबी आदर्श हमारा परिचय और पहचान,
बनता इससे महान इंसान।।

पियाली चक्रबर्ती

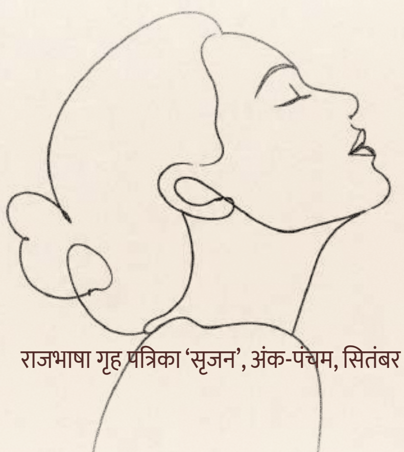

प्रदीप्ता रॉय

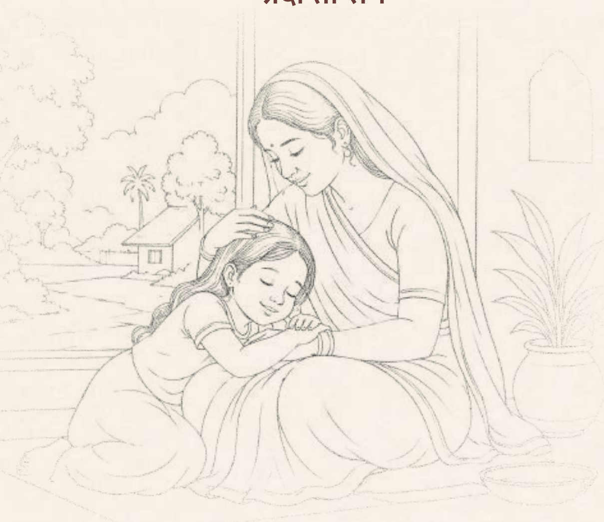

माँ

चाहती हूं कितना तुझे, ये शब्दों में न हो सकेगा बयान,
हाँ, कभी ज़रूरत पड़ी तो ये जान निशब्द होगी तुझ पर कुर्बान।

बिन मांगे ही दी तूने दुनिया की हर खुशी,
हंसते-हंसते कर दी मेरी हर जिद पूरी।

लगता हैं तू केवल इंसान का रूप नहीं,
देवलोक में कोई देवी ही तेरे स्वरूप से सिंची गयी होगी।

याद आता है वो बचपन,
जब तेरा ध्यान खींचने को झूठे आँसू बहाया करती थी।
आज सच आँसू बहते है
तो बस तेरे साथ को तरसती हूं,

न जाने कितनी बार अनजाने में तेरे दिल को दुखाया होगा,
क्यों माफ़ कर दिया मुस्कुराकर मेरी हर भूल को,
स्वयं माँ बनकर आज अनुभव कर पाती हूं।

आईना

आँखें आईना होती हैं ज़ेहन के एहसास की,
लफ़्ज़ चाहे कितना भी झूठ बोलें।
हाल-ए-दिल बयाँ है अश्कों में,
क्यों लोग बस शब्दों का वज़न तोलें।

कह न पाते जो अल्फ़ाज़ उम्र भर,
उन ख़ामोशियों की एक ज़ुबान होती है।
मुस्कुराहटों के लिबास के पीछे,
हर साँस में छुपी एक दास्तान होती है।

कितना भी सजा लो अल्फ़ाज़ों में,
झूठ तो बिखर ही जाता है।
सच को दलीलों की ज़रूरत नहीं,
ख़ामोशी में ही वह मुकम्मल हो जाता है।

रोहिणी चटर्जी

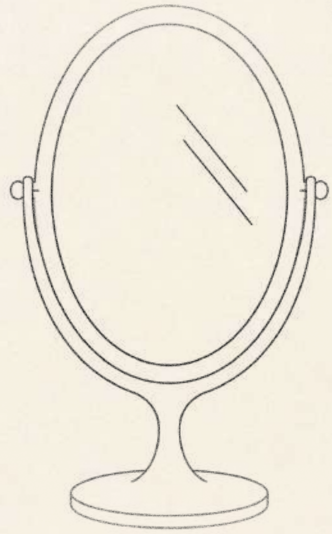

नई शुरुआत

विजय सिंह विराट

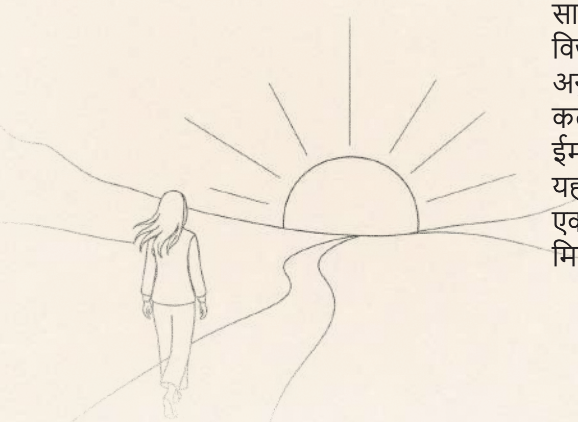

आज फिर समय ने
हमको एक संदेश दिया है,
हर संघर्ष की तपती राह पर
जीत का विश्वास दिया है।
जो बीत गया, वह सीख हमारी,
जो आएगा, वह कर्म बने।
हर चुनौती अवसर बन जाए,
ऐसा अपना धर्म बने।
मत रुकना तुम कठिन राहों से,
मत झुकना तूफ़ानों के आगे।
साहस जिनका साथी बनता,
विजय चलती उनके भागे।
अनुशासन हो जीवन की शक्ति,
कर्तव्य बने सबसे बड़ा मान।
ईमानदारी हो पहचान हमारी,
यही हो हर दिन का अभियान।
एक कदम तुम, एक कदम हम,
मिलकर बढ़ेगा कारवाँ।
जब टीम एक स्वर में बोले,
झुक जाएगा हर आसमाँ।
आज नया संकल्प करें हम,
हर पल अपना श्रेष्ठ दें।
देश, संगठन और मानवता हित,
जीवन का प्रत्येक श्वास दें।
याद रखो, इतिहास वही लिखते,
जो कर्मों से पहचान बनाते।
सपनों को सच करने वाले,
हर अँधियारे में दीप जलाते।
उठो साथियो, समय पुकारे,
अब रुकने का नाम नहीं।
नई सुबह की नई किरण है,
अब असंभव भी दूर नहीं।
चलो बढ़ें विश्वास लिए,
हृदय में अटूट प्रकाश लिए।
नई शुरुआत का यह प्रण हो—
हर दिन श्रेष्ठ, हर कर्म राष्ट्र के नाम हो।

मेरी नन्ही परी

जब तू हमारे घर आई,
हम दो से तीन हो गए।
घर-आँगन खुशियों से महका,
सपने अपने सच से जुड़ गए।
तेरी पहली किलकारी में ऐसा जादू था,
हर सूना कोना भी रोशन हो गया।
तेरे आने से हर सुबह मुस्कुराने लगी,
हर शाम दुआओं का आँगन हो गया।
तेरे नन्हे-नन्हे हाथ, तेरे नाजुक से पाँव,
तेरी मासूम आँखों में बसा नया-सा गाँव।
तेरी कोमल उँगलियाँ, तेरी धीमी-धीमी साँस,
लगे जैसे चाँद खुद उतर आया हो पास।
तू बस दूध पीकर सोती रही,
माँ की गोद में चुपचाप खोती रही।
कभी उँगली थाम लेती, कभी चौंक जाती,
नींद में भी हल्की मुस्कान बिखेर जाती।
तेरी हर करवट, हर अंगड़ाई,
दिल में नई-सी उमंग जगाई।
तेरी आँखों में चमक-सी आने लगी,
हमारी आवाज़ पहचानने लगी।
धीरे-धीरे मुस्कुराना तू सीख गई,
अपनी नन्ही दुनिया सजाना सीख गई।
तेरी किलकारी घर में गूँजने लगी,
घर अब सच में स्वर्ग-सा लगने लगा।
तू अब थोड़ा सिर उठाने लगी,
उँगली थामकर मुस्काने लगी।
गालों की लाली और बढ़ गई,
नन्ही हँसी और भी प्यारी लग गई।
आवाज़ों की ओर मुड़ने लगी,
अपनी दुनिया समझने लगी।
तेरी हर नींद, तेरी हर जाग,
तेरी हर भूख, तेरी हर माँग।
हर छोटी आदत में बसा प्यार है,
मेरी नन्ही परी, तू ही मेरा संसार है।
तेरे रोने में भी एक गीत बसा है,
तेरे सोने में भी मन हँसा है।
तेरे संग बीता हर पल अनमोल है,
हर क्षण में जीवन का मधुर बोल है।
तू अभी बहुत छोटी, बहुत नाजुक है,
पर तेरी मौजूदगी ही सबसे बड़ी राहत है।
तेरी मासूमियत से घर रोशन हुआ,
तेरे आने से हर सपना जीवन हुआ।
मेरी बेटी, मेरी दुआ, मेरी पहचान,
तेरे बिना अधूरी है मेरी हर जान।

बैद्यनाथ चक्रबर्ती

मुथुसुब्रमण्यम एस एस

भाई-बहन

घर केवल ईंटों और दीवारों का नाम नहीं,
यह तो साझा हँसी और अपनों के प्यार का संसार है।
हर छोटे-से पल में अपनापन महकता है,
स्नेह की खुशबू हर ओर बिखरती है।
आँधियों जैसे कठिन दिनों में हों या धूप भरे उजले क्षण,
भाई-बहन हर कदम पर मेरा सहारा बनते हैं।

वे मेरी जड़ें हैं, जो मुझे मज़बूती देती हैं,
कभी हँसाते हैं, कभी चिढ़ाते हैं, और जीवन में मधुर गीत भर देते हैं।
उनके साथ साधारण भोजन भी उत्सव बन जाता है,
हर बोझ हल्का लगता है, हर चिंता दूर हो जाती है।

एक पल तकरार, तो अगले ही पल गले लग जाना,
यही तो भाई-बहन के रिश्ते की सबसे प्यारी पहचान है।
भाई-बहन वही धड़कन हैं,
जो मुझे सबसे गहराई से समझती हैं।

सपना कुमारी

आज़ादी

जिसे तुम संघर्ष कहते हो,
उसे हम आज़ादी कहते हैं।

तुम्हारे लिए बस एक नौकरी है,
हमारे लिए सदियों की जंजीरें तोड़ने का रास्ता।
तुम्हें बाहर निकलना ज़िम्मेदारी लगता है,
हमें बाहर निकलना इंकलाब लगता है।

तुम कमाते हो रोटी, हम कमाते हैं आज़ादी।
तुम थककर लौटते हो, हम लड़कर लौटते हैं।
तुम्हारे काम घर आकर खत्म होते हैं, हमारी दूसरी पारी शुरू होती है।
तुम चाहो तो आराम कर लो, हमने ठान लिया है अब ना रुकने का।
क्योंकि हमारे लिए मंज़िल पाना ही नहीं, मंज़िल बदलना भी ज़रूरी है।
जिसे तुम संघर्ष कहते हो,
उसे हम आज़ादी कहते हैं।

तुम्हें सुकून चाहिए, हमें तो हर कदम पर एक नई पहचान चाहिए।
हम जो कदम उठाते हैं, वो सिर्फ़ अपने लिए नहीं,
हर उस लड़की के लिए हैं, जो अभी शुरू कर रही है।
हमारी हिम्मत, हमारे हौसले,
एक नई सुबह की नींव रखते हैं।
तुम्हारे लिए ये सिर्फ़ काम है,
हमारे लिए ये अपने अस्तित्व का ऐलान है।
जिसे तुम संघर्ष कहते हो,
उसे हम आज़ादी कहते हैं।

अगर घर के कामों को मिलती वही सम्मान,
तो घर से बाहर निकलकर नौकरी करने को आज़ादी न कहती।
उसे इतना मजबूर कर दिया है,
कि उसने पैसों को ही स्वतंत्रता समझ लिया है।
क्योंकि पैसों ने उसे दिया है सम्मान, फ़ैसले लेने का अधिकार दिया है।
ये सब अगर उसे पहले ही मिल गया होता,तो वह पैसे कमाने को
आज़ादी न कहती।

वह तो बस इतना चाहती है कि उसके श्रम की भी क़ीमत हो,
उसकी पहचान किसी रिश्ते की मोहताज न हो,
और उसके सपनों को भी उतनी ही जगह मिले
जितनी किसी और के सपनों को मिलती है।

जिसे तुम स्वार्थ कहते हो,
उसे हम आत्मसम्मान कहते हैं।
जिसे तुम बगावत कहते हो,
उसे हम बराबरी कहते हैं।
और जिसे तुम संघर्ष कहते हो,
उसे हम आज़ादी कहते हैं।

सुनील कुमार श्रीवास्तव

राधा रानी की कृपा

ललिता नागरी ब्रज-वसिनी,
श्याम जू की श्यामा प्यारी।

शरण तुम्हारे पड़े लाड़ली,
अपनी कृपा बरसाओ रासेश्वरी।

वृन्दावनविहारिणी, रमा, सत्यभामा
तुम ही तो हो श्रीकृष्णवल्लभा।
वृषभानु-सुता अब तुम्ही बताओ,
तुम्हारे सिवा कहाँ शरण हमारी।
करुणा की सागर हैं राधा,
महिमा उनकी सबसे न्यारी।
जिनके नाम से ही तर जाती है,
सृष्टि यह पूरी सारी॥

भटक रहा जो इस जगत में,
पाता नहीं वह कहीं भी किनारा।
राधा नाम जो मुख से गाए,
बन जाता है वो उनका प्यारा॥

ब्रज की अधिष्ठात्री देवी,
बिहारी जी के मन को भातीं हो।
एक बार जो 'राधा' कह दे,
गोविन्द दौड़े आते हैं॥

महल की चौखट पर जो झुक जाए,
मिट जाते उसके सब संकट।
राधा कृपा जिसके सिर पर होवे,
कट जाते उसके सब पाप॥

हे श्यामा जू, दया करो अब,
अपनी भक्ति का वरदान दो।
चरण शरण में ले लो अपनी,
मुझ दीन का भी उद्धार करो॥

संघमित्रा रॉय चौधुरी

अनोखी दोस्ती

हमारी दोस्ती है बड़ी अजीब-सी,
दूर रहकर भी लगती है करीब-सी।

हम दोनों का एक-दूजे से नहीं कोई मेल,
किसी को पसंद है गाना, तो किसी को खेल।
अलग सोच, अलग खानपान, अलग जीने का अंदाज़,
फिर भी एक-दूजे से सीखे हैं हमने जीवन के कई राज़।

हाँ, एक बात है जो हम दोनों में है समान,
ज़िद्द कहो या स्वाभिमान।

जब जो जी में आए बोल दिया,
अपनी दिमाग को खोल दिया।
ना कोई पर्दा, ना कोई नक़ाब,
स्वयं से ही जैसे कर रही हूँ वार्तालाप।

हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया,
और जब मैं ग़लत थी,'
तो बिना झिझक ज़ोर से डाँट लगाया।
रोई, बिलखी, बातें भी किया बंद,
क्योंकि झुकना मुझे कभी नहीं था पसंद।

मेरी भी है एक परेशानी,
हूँ मैं बड़ी मनमानी।
कहा ना... हूँ बड़ी ज़िद्दी,
आसानी से किसी की नहीं सुनती।

बचपन से भाइयों के बीच पली,
उनकी आँखों की प्यारी-सी कली।
लड़कियों वाली नज़ाकत ना सीख पाई,
छोटी-छोटी शरारतों में ही दुनिया बसाई।
को-एड में पढ़ी, लड़कियों के साथ कम,
और लड़कों की टोली में रही हरदम।

कुछ दिन यूँ ही बीत जाते,
फिर एक दिन तुम प्यार से मुझे समझाते।
कहाँ मैं ग़लत थी, यह बतलाते,
सच का आईना दिखलाते।

आज भी हैं कई दोस्त मेरे,
पर भरोसे की डोर है हाथ तेरे।
तू ही तो कहता है—
"उड़... जा, छू कर आ आसमान!"
तेरी हर बात में होता है,
स्नेह, विश्वास और सम्मान।

थोड़ी-सी खिचपिच,
थोड़ा-सा तकरार,
हमारी दोस्ती ईश्वर का सबसे अनमोल उपहार।
तेरे दोस्ती के लौ से है मेरा जग रौशन,
बस यूँ ही बना रहे अपना यह अनोखा बंधन।

शेरोन क़मर

आज और कल

कभी था धरती माँ की गोद मैं,
आज धुएँ की चादर में सोया है।
आकाश अब भी चाहता नीला होना
पर हर सवेरा राख-सा रोया है।

नदियाँ बहती तो हैं अब भी,
मगर उनकी लहरों में गीत नहीं।
जंगल चुप हैं, पंछी गुमसुम,
हवा में पहले-सी प्रीत नहीं।

महलों की ऊँचाई बढ़ती जाती,
पर मन का आँगन सूना है।
पत्थर बनते जाते चेहरे,
हर एहसास बेगाना है।

युद्ध की आग जब भी जलती है,
सीमाएँ नहीं, सपने जलते हैं।
माओं की सूनी आँखों में,
बरसों तक सावन पलते हैं।

सच अब धीमे स्वर में बोलता,
झूठ का शोर बाज़ार बना।
रिश्ते भी अब सौदों जैसे हैं,
हर अपनापन उधार बना।

फिर भी कहीं किसी कोने में,
एक दीपक अब भी जलता है।
जब कोई अनजाने का दुःख बाँटे,
तब मानव होना ही फलता है।

शायद दुनिया फिर मुस्काएगी,
जब प्रेम किसी धर्म का नाम न हो।
जब इंसान को बस इंसान समझें,
और किसी दिल पर कोई दाग़ न हो।

दिनांक 24 जुलाई 2026 को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित 'हिंदी भजन' प्रतियोगिता के परिणाम

काव्य-आवृति प्रतियोगिता

- प्रथम पुरस्कार: सुश्री अनिंदिता रुद्र, प्रबंधक (एम.बी.ए.ई.एक्स.-कार्यालय)
- द्वितीय पुरस्कार: श्रीमती श्रीपर्णा दास, लेखा कार्यकारी
- तृतीय पुरस्कार: श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)

प्रोत्साहन पुरस्कार

- श्रीमती सुचंद्रा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
- श्रीमती डॉली सेन, प्रशासनिक कार्यकारी
- श्री सुदीप्त मजूमदार, सहायक प्रबंधक (परिवहन)

दिनांक 20 मार्च 2026 को राजभाषा संगोष्ठी एवं राजभाषा गृह-पत्रिका 'सृजन' के चतुर्थ अंक का लोकार्पण किया गया

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोलकाता (कार्यालय-2) द्वारा वार्षिक राजभाषा कार्यान्वयन सम्मान 2025-26 हेतु हमारे संस्थान को तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है

हमारे संस्थान के सहयोग से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोलकाता (कार्यालय 2) द्वारा चित्र देखकर कहानी लिखना प्रतियोगिता के आयोजन हेतु पुरस्कार से सम्मानित किया गया है

दिनांक 04 अप्रैल 2026 को संस्थान के दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया

दिनांक 10 जून 2026 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया

दिनांक 21 जून 2026 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया

दिनांक 24 जून 2026 को संसदीय राजभाषा समिति (पहली उप-समिति) द्वारा संस्थान का निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ

दिनांक 24 जुलाई 2026 को हिंदी भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

दिनांक 27 अगस्त 2026 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT CALCUTTA

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता - 700104

दूरभाष - +91 33 7121 1000